



सीआरपीएफ समाचार

वर्ष 64

अंक 6

जुलाई-अगस्त, 2018

राजभाषा विशेषांक

शौर्य चक्र



शहीद हवलदार
धनवडे रविन्द्र बवन



श्री कुलदीप सिंह चाहर
उप कमाण्डेन्ट



हवलदार ए.एस. कृष्णा



सिपाही प्रफुल्ल कुमार



सिपाही के. दिनेश राजा



श्री आर.आर. भटनागर, महानिदेशक, आर.ए.एफ. मुख्यालय नई दिल्ली में 'बेसिक इंटेलीजेंस कोर्स' प्रमाण-पत्र वितरण समारोह के अवसर पर श्री पी.के. सिंह, महानिरीक्षक (आसूचना) से स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए।



श्री आर.आर. भटनागर, महानिदेशक, कीर्ति चक्र विजेता शहीद प्रमोद कुमार, कमाण्डेन्ट की माताजी को सम्मानित करते हुए।



मुख्य संरक्षक :

श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक
संपादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्ष :

श्री प्रदीप कुमार सिंह,
पुलिस महानिरीक्षक (आसूचना)

सदस्य : श्री धीरज कुमार, उप महानिरीक्षक
(परिचालन-2), श्री एम. धिनाकरण, उप
महानिरीक्षक (आसूचना), श्री राजेन्द्र प्रसाद,
कमाण्डेन्ट (आसूचना), श्री निखिल रस्तोगी,
कमाण्डेन्ट (परिचालन), श्री समीर कुमार
श्रीवास्तव, कमाण्डेन्ट (कल्याण)

मुख्य संपादक :

डॉ. जी.सी. दाश
(जन संपर्क अधिकारी)

संपादक :

सत्येन्द्र सिंह (सूबेदार मेजर/हिन्दी अनुवादक)

संपादकीय सहायता :

जितेन्द्र कुमार (उ.नि./आशुलिपिक)
राम कुमार (स.उ.नि./मं.)

चित्र :

जन संपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय
और सीआरपीएफ यूनिट्स

संपादकीय कार्यालय :

महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल,
ब्लाक-1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
दूरभाष: 24360649

**महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से
मुद्रित और प्रकाशित :**

मित्तल एण्टरप्राइजेज, 2076, गोकुलशाह
गली, सीताराम बाजार, दिल्ली-06

कवर पेज : 72वीं स्वतंत्रता दिवस के
अवसर पर शौर्य चक्र से सम्मानित
बहादुर अधिकारी एवं जवान।

इस अंक में

पृष्ठ संख्या

1. महानिदेशक का राजभाषा संदेश	02
2. के.रि.पु.बल 96 वीरता पदक से अलंकृत	03
3. पारस्परिक सद्भाव द्वारा किसी भी समस्या का हल	10
4. यंग प्लाटून का गठन : झारखण्ड अनुभव-2018	12
5. ग्रामीणों के जीवन में रोशनी : के.रि.पु.बल की अनूठी पहल	15
6. कार्यालयीन पत्राचार में राजभाषा हिंदी का प्रयोग	17
7. विलुप्त होती भारतीय संस्कृति	19
8. हिन्दी साहित्य के विकास के विभिन्न काल	21
9. चिकनगुनिया	25
10. सहायक कमाण्डेन्ट, राजभाषा की कलम से	27
11. सहजयोग	28
12. राजभाषा पुरस्कार ग्रहणाधिकार	30
13. देवनागरी लिपि	32
14. श्रावणी मेला- वैद्यनाथ धाम:	33
15. आधुनिक हिंदी गद्य का इतिहास	34
16. जन-जन की पहचान - हिंदी हमारी	36
17. नशा एक अभिशाप	37
18. मानवता	38
19. नशे से तन-मन-धन का नाश	39
20. मंथन और प्रहार	40
21. भारत की आशा-हिंदी	41
22. आवाज दे	41
23. हिंदी का इतिहास एवं महत्व	42
24. कावा ने मनाया 23वाँ स्थापना दिवस	43
25. के.रि.पु.बल परिवार कल्याण संस्था ने केरल को भेजी राहत सामग्री	44
26. अब जवानों को मिलेगी आसानी से ई-टिकट	45
27. के.रि.पु.बल और राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के बीच सहमति पत्र पर हस्ताक्षर	46
28. संसदीय स्थायी समिति का दौरा	47
29. राजभाषा सम्मान	47
30. महानिदेशक के दौरे	48
31. महानिदेशालय के कार्यक्रम	49
32. विविध कार्यक्रम	52
33. सिविक एक्शन कार्यक्रम	53
34. कावा कार्यक्रम	54
35. केरल में द्रुत कार्य बल द्वारा बाढ़ राहत-बचाव कार्य एक नजर में	55
36. उपलब्धियाँ	56
37. शहीदों को सलाम	57
38. महानिदेशक का डिस्क एवं प्रशंसा पत्र	58

सीआरपीएफ समाचार एक द्विमासिक पत्रिका है। इसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

— मुख्य संपादक

महानिदेशक का राजभाषा संदेश

14 सितम्बर, 2018

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था। संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान किया गया है कि देवनागरी लिपि के साथ हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी। हिंदी के महत्व को बढ़ावा देने और इसके प्रचार प्रसार के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुरोध पर 1953 से प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।



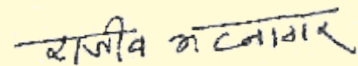
भारत में अनेक समृद्ध भाषाएं हैं। इन भाषाओं में हिंदी एकता की कड़ी है। भारत में यही वह भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और राजस्थान के सुदूर पश्चिमी अंचल से असम के पूर्वी सीमावर्ती भू-भाग तक समान रूप से समझी जाती है। हिंदी समस्त भारतीय जनता को एकता के सूत्र में जोड़ने का कार्य करती है।

आज हिंदी का स्वरूप काफी व्यापक हो चला है। साहित्य, फिल्म, कला, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, संचार, बाजार सभी क्षेत्रों में हिंदी ने अपनी महत्ता कायम की है। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई होती है। भूमंडलीकरण और बानारीकरण के चलते हिंदी का व्यापक प्रसार हुआ है। बदलती दुनिया में हिंदी की प्रासंगिकता और उपयोगिता ने हिंदी में अनुवाद कार्य का मार्ग प्रशस्त किया है जिसके चलते हिंदी बाजार और रोजगार से जुड़ी है। मौजूदा समय में हिंदी का रोजगारपरक होना इसकी सबसे बड़ी खासियत है। पूंजीवाद के इस दौर में बाजार के लिए हिंदी अनिवार्य बन गई है। हिंदी ने लाखों करोड़ों भारतीयों को रोजगार दिया है।

हमारे केरिपुबल में भारत के प्रत्येक क्षेत्र से नवान भर्ती होते हैं, इसलिए मुख्यतः हमारी एक-दूसरे से संवाद की भाषा हिंदी होती है। जहां तक मैं समझता हूं हमारे बल का प्रत्येक सदस्य हिंदी को बोल एवं समझ लेता है। इसलिए हम सभी की यह जिम्मेदारी है कि हम कार्यालयी कामकाज हिंदी में ही करें ताकि जिसके लिए हम यह काम कर रहे हैं, वो इसे पढ़कर अच्छी तरह समझ सकें, तभी सही मायनों में सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन हो सकेगा।

मैं, आज के इस अवसर पर बल के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों से यही आग्रह करता हूं कि वे अपने व्यक्तिगत जीवन में चाहे किसी भी भाषा को अपनाएं, लेकिन सरकारी कामकाज में सबको समझ में आने वाली और पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ने वाली भाषा, हिंदी में ही कार्य करें, यही सरकार की भी हमसे अपेक्षा है। तो आइए, हम सभी मिलकर सरकार एवं संविधान की इस आकांक्षा को पूरा करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित।



(राजीव राय भटनागर) भा.पु.से.

महानिदेशक

के.रि.पु.बल 96 वीरता पदक से अलंकृत

पिछले वर्ष की भांति इस साल भी सीआरपीएफ ने सभी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में सर्वाधिक पुलिस पदक अर्जित किए हैं। इस वर्ष 72वीं स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर के.रि.पु.बल को 96 वीरता के पदक प्राप्त हुए हैं, जो अब तक के इतिहास में सर्वाधिक पदक हैं।

इन 96 वीरता के पदकों में 05 बहादुर जवानों को शौर्य चक्र एवं 02 को मरणोपरान्त वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है। शेष 01 जवान को मरणोपरान्त तथा 88 जांबाजों को उनके अदम्य साहस, समर्पण एवं उनकी मातृभूमि परायणता की भावना के लिए वीरता के पुलिस पदक से नवाजा गया।

देश के सबसे कठिन क्षेत्रों एवं वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में तैनात बल के अधिकारियों एवं कार्मिकों को उनके असाधारण कार्य और अदम्य साहस का प्रदर्शन करने के लिए वीरता पदकों से सम्मानित किया गया है।

इन पदकों में 32 अधिकारियों एवं जवानों को वामपंथी उग्रवाद क्षेत्रों एवं 64 को जम्मू-कश्मीर के संवेदनशील क्षेत्रों में तैनाती के लिए दौरान दिखाए गए शौर्य के लिए ये पदक प्रदान किये गए हैं।

यह बल केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में सबसे अधिक पदकों से अलंकृत है। इस बल को अब तक 1778 पदकों से सम्मानित किया जा चुका है। इनमें से 01 जार्ज क्रॉस, 03 किंग्स पी.एम.जी., 01 अशोक चक्र, 03 कीर्ति चक्र, 01 पदम श्री, 01 वीर चक्र, 23 शौर्य चक्र, 49 पी.पी.एफ. एस.एम.जी., 194 वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक, 1382 वीरता के पुलिस पदक, 05 आई.पी.एम.जी., 04 जीवन रक्षा पदक और जान बचाने के लिए 101 प्रधानमंत्री के पुलिस पदक शामिल हैं। वर्ष 1939 में बल के गठन के बाद से अब तक 2130 अधिकारियों एवं जवानों ने राष्ट्र सेवा में अपने प्राण न्यौछावर किए हैं।

आजादी के इस 72वीं वर्षगांठ पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बलों को 05 विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक एवं 58 सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक भी प्रदान किया गया है।

शौर्य चक्र



**शहीद हवलदार
धनवडे रविन्द्र बवन**



**श्री कुलदीप सिंह चाहर
उप कमाण्डेन्ट**

182 बटालियन के 02 अन्य शौर्य विजेताओं की कहानी कम प्रेरणादायक नहीं है। 182 बटालियन के श्री कुलदीप सिंह चाहर, उप कमाण्डेन्ट एवं शहीद हवलदार धनवडे रविन्द्रन बवन ने गत वर्ष 26 अगस्त को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले के जिला पुलिस लाईन में फिदायिन हमले को रोकने में न केवल सहायक सिद्ध हुए, बल्कि सभी 03 आतंकवादियों का सफाया भी किया। 20 से अधिक घंटों तक चली इस मुठभेड़ में हवलदार धनवडे रविन्द्रन बवन ने देश के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

**हवलदार ए.एस. कृष्णा****सिपाही प्रफुल्ल कुमार****सिपाही के. दिनेश राजा**

05 शौर्य पदकों में से 03 शौर्य पदक 45 बटालियन, के.रि.पु.बल के हवलदार ए.एस. कृष्णा, सिपाही के. दिनेश राजा और सिपाही प्रफुल्ल कुमार को दिए गए, जिन्होंने अचानक हुए फिदायिन हमले को न केवल रोका, बल्कि सभी आतंकवादियों को मार भी गिराया।

इन तीनों बहादुर जवानों ने अपने साथी अधिकारियों एवं सहकर्मियों के साथ जम्मू-कश्मीर के बांदीपुरा जिले के सुंबल के औद्योगिक क्षेत्र (प्रशिक्षण ग्राउंड) में 05 जून, 2017 की सुबह में सभी 04 आतंकवादियों को सफाया कर फिदायिन हमले को विफल कर दिया। यह भयंकर शूट-आउट कम से कम 45 मिनट तक चला, जिसे के.रि.पु.बल के जवानों ने अपनी अतुलनीय बहादुरी और सामरिक कौशल से इसका सफाया किया।

वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

**शहीद सिपाही
शरीफ उद्दीन गानी****शहीद हवलदार
मोहम्मद तौफिल अहमद**

पिछले वर्ष 30 दिसम्बर को जम्मू-कश्मीर में के.रि.पु.बल कैम्प लेथपुरा में हमला हुआ, जिसमें सुरक्षा बलों एवं आतंकवादियों के बीच 36 घंटे से ऊपर ताबड़-तोड़ फायरिंग हुई जिसमें सभी तीनों आतंकवादियों को मार गिराया गया। इस घटना में सिपाही शरीफ उद्दीन गानी एवं हवलदार मोहम्मद तौफिल अहमद बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गये। 72वीं स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या को इन्हें मरणोपरान्त वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

वीरता के लिए पुलिस पदक



शहीद सल० मो० यासीन ताली



श्री अमर सिंह नेगी, पु.उ.म.नि.



श्री राजेश कुमार, कमाण्डेंट



श्री पुष्पेन्द्र कुमार, कमाण्डेंट



श्री अशोक कुमार, द्वि.क.अधि०



श्री देवेन्द्र कुमार, द्वि.क.अधि०



श्री संजय कुमार, उप कमा०



श्री मिथलेश कुमार, उप कमा०



श्री गुफरान अहमद, सहा० कमा०



श्री गौरव कु० वालियान, सहा० कमा०



श्री पवन कु० त्रिगुणायत, सहा० कमा०



श्री राजेश कु० बर्नला, सहा० कमा०



श्री राजकमल बह्दरन, सहा० कमा०



श्री अजय राठी, सहा० कमा०



श्री नरेश कुमार, सहा० कमा०(2)



श्री राजेन्द्र नाथ मल्लिक, सहा० कमा०



श्री सिकन्दर यादव, सहा० कमा०



श्री अनिल कु० घोरसिया, सहा० कमा०



श्री एल. इबोन्चा सिंह, सहा० कमा०



श्री प्रतीक गुलिया, सहा० कमा०



श्री विश्वद्वीप कपिल, सहा० कमा०



श्री विजय सिंह, सहा० कमा०



श्री नरपाल, सहा० कमा०



उप नि० अवधेश कुमार सुमन



उप नि० जय देव



उप नि० सौरभ वर्मा



उप नि० गजानन्द यादव



उप नि० जितेन्द्र कुमार



उप नि० राम कुमार



उप नि० सुमित कुमार

वीरता के लिए पुलिस पदक



उप नि० अशोक जाखर



सहा० उप नि० उत्तम राज



हव० नागेन्द्र प्रसाद



हव० मुस्कूर अहमद लोन



हव० विष्णु सिंह (2)



हव० सुरेन्द्र कुमार शर्मा



हव० सुरेन्द्र



हव० चमेल सिंह



हव० दलवीर सिंह



हव० अवतार सिंह



सि० रोमेन लम्बल मयूम



सि० विक्रम पाल



सि० ए. बैरावन



सि० गवाई शेखर दादाराज



सि० बलविन्द्र पठाण्या



सि० जखारियास लकड़ा



सि० मुकेश कुमार पाण्डेय



सि० संजीव कुमार



सि० आजाद अहमद भट्ट (2)



सि० संदीप सिंह



सि० रंजन कुमार शाह



सि० वजीर अहमद



सि० गायकवाड़ आशीष भास्कर



सि० एफ. कान्ता सिंघा



सि० संजय कुमार राय



सि० अप्पा मोनी रॉय



सि० अभय कान्त



सि० पवन कुमार



सि० भोई शैलेश कुमार



सि० इंगले लखन प्रकाश

वीरता के लिए पुलिस पदक



सि० मनीष वर्मा



सि० नवीन कुमार



सि० एस. प्रकाश



सि० जतिन्द्र कुमार



सि० बुद्धि सिंह



सि० जुल्फकार अहमद



सि० तपस घोष



सि० मिलन सिंह नेताम



सि० के. बिश्वर सिंह



सि० श्यामापाडा राय



सि० सरोज कुमार महापात्रा



सि० संतोष कुमार उईके



सि० नीलू बाबू



सि० कन्नाण के.



सि० मृत्युंजय देवनाथ



सि० जयन्ता सेन



सि० कौशिक मंडल



सि० मणिरंजन सिंह



सि० पाटिल प्रवीण दीनकर



सि० राजेश कुमार



सि० मुकेश कुमार



सि० रुंगशोल बुंगसोंग



सि० शिवपाल उईके



सि० अनिल सिंह राणा



सि० सतविन्द पाल भुगत



सि० प्रदीप कुमार पाटल



विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



रविदीप सिंह साही
महानिरीक्षक, श्रीनगर सेक्टर



विवेक वैद, महानिरीक्षक
महानिदेशालय (सेन्ट्रल जोन मुख्यालय में संलग्न)



मूलचन्द पंवार
उप महानिरीक्षक, समूह केन्द्र हीरानगर
(अब महानिरीक्षक, सीआईएटी शिवपुरी)



सुधाकर उपाध्याय
उप महानिरीक्षक, महानिदेशालय



सतपाल रावत
उप महानिरीक्षक, उत्तरी सेक्टर मुख्यालय

सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक

क्र.सं.	पदनाम	नाम	कार्यालय
1	कमाण्डेन्ट	सुखजीत सिंह राणा	121 बटालियन
2	कमाण्डेन्ट	अखिलेश कुमार सिंह	26 बटालियन
3	कमाण्डेन्ट	राजेश कुमार सहाय	सी.टी.सी.(टी. एण्ड आईटी), राँची
4	कमाण्डेन्ट	रवि गोपाल वर्मा	आर.टी.सी. लातूर
5	कमाण्डेन्ट	राकेश कुमार	131 बटालियन
6	कमाण्डेन्ट	हिदम रणजीत सिंह	218 बटालियन
7	कमाण्डेन्ट	सुरेन्द्र सिंह	ग्रुप केन्द्र हीरानगर (वर्तमान में 78 बटालियन में तैनात)
8	कमाण्डेन्ट	वेद प्रकाश	221 बटालियन
9	द्वि.कमा.अधि.	परमजीत सिंह	रेन्ज मुख्यालय, गुवाहाटी, (सी.ए.टी. नई दिल्ली के साथ संलग्न)
10	द्वि.कमा.अधि.	हरीश मेहरा	110 बटालियन
11	द्वि.कमा.अधि.	श्रीमती रवि कला	126 बटालियन



12	द्वि.कमा.अधि.	श्रीमती नीलम बुंथियाल	221 बटालियन (वर्तमान में रेन्ज देहरादून में तैनात)
13	द्वि.कमा.अधि.	श्रीमती नीरज त्यागी	33 बटालियन
14	द्वि.कमा.अधि.	सहेन्द्र सिंह यादव	21 बटालियन
15	द्वि.कमा.अधि.	अजय द्विवेदी	95 बटालियन
16	द्वि.कमा.अधि.	श्याम सुन्दर जाटव	169 बटालियन
17	द्वि.कमा.अधि.	उमेद सिंह पंवार	96 बटालियन
18	द्वि.कमा.अधि.	सुबीर कुमार गंगोपाध्याय	20 बटालियन (वर्तमान में 167 बटालियन में तैनात)
19	उप कमाण्डेन्ट	जहीदुल हसन मंडल	आर.टी.सी. राजगीर
20	उप कमाण्डेन्ट (अब द्वि.कमा.अधि.)	राजपाल सिंह	40 बटालियन (पदोन्नति पर 113 बटालियन के लिए स्थानान्तरणाधीन)
21	उप कमाण्डेन्ट	जी. दिनेश	105 आर.ए.एफ.
22	उप कमाण्डेन्ट	दिलीप मलीक	205 कोबरा बटालियन
23	उप कमाण्डेन्ट	लुगुन जोसफ	94 बटालियन
24	निरीक्षक/जीडी	मोहम्मद हसन	104 बटालियन
25	निरीक्षक/जीडी	कालु खान	ग्रुप केन्द्र सोनीपत
26	निरीक्षक/जीडी	राम बचन राम	234 बटालियन
27	निरीक्षक/जीडी	अजीथ कुमार के.पी.	ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम
28	निरीक्षक/जीडी	आशा राम	ग्रुप केन्द्र सोनीपत
29	निरीक्षक/जीडी	माम चन्द	18 बटालियन
30	निरीक्षक/जीडी	जगमेन्दर सिंह	ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली
31	निरीक्षक/जीडी	रविन्द्र कुमार शर्मा	75 बटालियन
32	निरीक्षक/जीडी	हबीबुल्ला	14 बटालियन
33	निरीक्षक/जीडी	राधे श्याम पाण्डेय	102 आर.ए.एफ.
34	निरीक्षक/जीडी	भगीरथ सिंह	ग्रुप केन्द्र सिल्लीगुड़ी
35	निरीक्षक/जीडी	रमेश चन्द	25 बटालियन
36	निरीक्षक/जीडी	मदन मोहन	218 बटालियन
37	निरीक्षक/जीडी	एस. अशोकन	211 बटालियन
38	निरीक्षक/जीडी	बाबु लाल यादव	185 बटालियन
39	उप निरी./जीडी	अशोक कुमार सिंह	234 बटालियन
40	उप निरी./जीडी	बलबीर सिंह	163 बटालियन
41	उप निरी./जीडी	रामजनम सिंह	43 बटालियन
42	उप निरी./जीडी	नीतीश कुमार मण्डल	ग्रुप केन्द्र इम्फाल
43	उप निरी./जीडी	राज कुमार	ग्रुप केन्द्र श्रीनगर
44	उप निरी./जीडी	हृदया नन्द द्विवेदी	149 बटालियन
45	उप निरी./जीडी	बलवान सिंह	73 बटालियन
46	उप निरी./जीडी	सरजीत भौमिक	147 बटालियन
47	उप निरी./जीडी	सुरेश कुमार थापा	238 बटालियन
48	उप निरी./जीडी	कल्याण कुमार बसु	169 बटालियन
49	उप निरी./जीडी	के.ए. वेल्युधान	154 बटालियन
50	स.उ.नि./जीडी	अत्तर सिंह	64 बटालियन
51	स.उ.नि./जीडी	बोबेन के. जे	183 बटालियन
52	स.उ.नि./जीडी	अर्जुन कुमार	226 बटालियन
53	स.उ.नि./जीडी	युगल किशोर सिंह	ग्रुप केन्द्र रॉंची
54	स.उ.नि./जीडी	श्रीनिवास रेड्डी एम.	ग्रुप केन्द्र हैदराबाद
55	स.उ.नि./जीडी	कृष्णा दंगवाल	108 बटालियन
56	स.उ.नि./जीडी	प्रभु नाथ राय	63 बटालियन
57	स.उ.नि./जीडी	अजीत सिंह	3 सिग्नल बटालियन
58	स.उ.नि./जीडी	अनबुक्कारसु	सी.एस.जे.डब्ल्यू.टी. बेलगाम

अध्यक्ष, सम्पादक मंडल की कलम से

पारस्परिक सद्भाव द्वारा किसी भी समस्या का हल

वेदों में इस बात पर जोर दिया गया है कि हमारे व्यवहार में पारस्परिक सद्भाव का होना जरूरी है। पारस्परिक सद्भाव में चित की प्रसन्नता, दूसरों के प्रति आदरभाव और भलमनसाहत ये तीनों चीजें समाई हुई हैं। जहां प्रसन्नता है, वहां एकाग्रता आती है। गीता में कहा गया है जिसका चित प्रसन्न है, उसकी बुद्धि शीघ्र ही स्थिर होती है। उसमें एकाग्रता के लिए देर नहीं लगती है। एक-दूसरे के प्रति सद्भाव या प्रेम की भावना हो तो न सिर्फ हमारी कई मुश्किलें हल हो जाती हैं, बल्कि जीवन के लिए तय किए गए लक्ष्य को प्राप्त करने में भी आसानी होती है। प्रसन्नता के बारे में बताते हुए हमारे ग्रंथों में सदा पानी की मिसाल दी जाती है। जैसे पानी निर्मल और स्वच्छ होता है, वैसे ही हमारा मन भी निर्मल और स्वच्छ होता है। चित की प्रसन्नता सत्वशुद्धि का परिणाम है। जब चित में सत्वगुण का आविष्कार होता है तब चित प्रसन्न होता है। रज और तम क्षीण होता है या हट जाता है, तो हमारा प्राण सात्विक बन जाता है। इसके बाद चित प्रसन्न हो जाता है, प्रसन्नता से ही हमें समस्या का समाधान मिलता है। प्रसन्नता से मन में निर्मलता और स्वच्छता दोनों आती है। व्यक्ति में कोई आकांक्षा नहीं रह जाती है। इसलिए उसे निरंकारी कहा जाता है। जब किसी व्यक्ति को कुछ लक्ष्य प्राप्त करने की

चाह नहीं रह जाती है, तब भी वह प्रसन्न रहता है। प्रफुल्लित पुष्प के समान उसका चित प्रसन्न हो जाता है। निर्मलता, प्रसन्नता, स्वच्छता और आंतरिक समाधान — ये सुचिता के लिए आवश्यक है।

पारस्परिक सद्भाव का अर्थ है कि व्यक्ति-व्यक्ति के व्यवहार में मेल हो। सभी व्यक्ति एक-दूसरे के साथ मिलनसार वृत्ति रखें। उनके चित में दूसरे के प्रति दूरी का भाव



प्रदीप कुमार सिंह
महानिरीक्षक (आसूचना)
महानिदेशालय



न हो। दूरी के भाव के लिए पतंजलि ने कहा है कि जहां एक दूसरे के प्रति अनादर, अविश्वास होता है, वहां दुख अवश्य प्रकट हो जाता है। आजकल विचार भेद, मतभेद, वृत्ति भेद आदि अनेक प्रकार के भेद व्यक्ति पर अपना प्रभुत्व जमाए रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की विचारधारा अलग-अलग होती है। आजकल अनेक प्रकार के भेद भी दिखाई पड़ते हैं। उनके आधार पर दल या पक्ष बनाया जाता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि भेद होते हुए या आपसी मतभेद और विचारभेद होते हुए भी परस्पर व्यवहार में माधुर्य होना चाहिए। किसी प्रकार की कटुता या दूरी का भाव मन में नहीं रहना चाहिए। यही पारस्परिक सद्भाव का सामाजिक अर्थ है। मानव मन में प्राणी मात्र का आदर भाव होना चाहिए। अप्रत्यक्ष रूप से हम आदर भाव तो प्रदर्शित करते हैं, लेकिन मानव के साथ मानव के व्यवहार में वह नहीं दिखता। यह चर्चा गीता में आई है कि





मनुष्य के आकार में, मैं आता हूँ तो लोग मेरा अपमान करते हैं। भागवत में कहा गया है कि गाय, पेड़, पहाड़ और गंगा – इनके लिए आदर पैदा होता है, लेकिन वह आदर भी जहाँ मनुष्य का चोला पहना वहाँ नहीं मिलता। इसलिए अंदर का जो अंश या तत्व है—उसका अपमान या निरादर नहीं करना चाहिए। स्नेह में आसक्ति होती है, लेकिन आदर अंदर मन को समर्थ करता है और इससे सत्व का दर्शन होता है। हम दूसरे के प्रति आदर रखते हैं, तो दूसरा भी हमारे प्रति आदर रखता है। जीने के लिए मनुष्य के पास कारण मौजूद हैं। सबसे पहले हमें स्वयं के प्रति मन में आदर भाव होना चाहिए। यदि वह न रहे तो वह जी नहीं सकता। जिस गुण के कारण जीने में उसे आनंद आता है, उस गुण के लिए हमें भी आदर होना चाहिए। उस गुण को हमें पहचानना चाहिए।

पारस्परिक सद्भाव का दूसरा सामाजिक अर्थ यह है कि एक—दूसरे के प्रति बुनियादी आदर हो। मतभेदों के कारण अनादर न हो। सामाजिक दृष्टि से आदर सबसे श्रेष्ठ गुण है। गुणों के साथ दोष भी होते हैं। दोष भी गुण के बचाव के लिए होते हैं। जैसे कोई मनुष्य निश्चयी है तो कभी—कभी उसमें हठीलापन आ जाता है। जिस प्रकार दीपक के साथ छाया आती है, उसी प्रकार जहाँ गुण—प्रकाशन होता है, वहाँ दोष छाया भी होती है। उसे अगर हटाते हैं, तो गुण कम होता है। कर्म करने के बाद अक्सर व्यक्ति में अहंकार भाव विकसित हो

जाता है। अहंकार को हम गुण नहीं, बल्कि दोष समझते हैं, लेकिन वह छाया का दोष है। गुण—छाया में अहंकार होता है। अगर हम जानते हैं कि अमुक मनुष्य कर्मठ है, तो हम नम्रता से उसके सामने झुक जाएं। हमें झुकना चाहिए। हमारी नम्रता से उसे ध्यान में आएगा कि उससे कहीं गलती हो रही है। अगर हम सिर्फ दोषों की ओर देखेंगे, तो हम उसे पहचान नहीं सकेंगे। उसके प्रति आदर नहीं रहेगा। धान के उपर का छिलका उसके बचाव के लिए है। अगर आपको खाना है, तो छिलका हटाकर खाइए। कोई भी मनुष्य गुण—दोष रहित नहीं हो सकता है। गुण प्रकाशन के लिए दोषों की जरूरत है। यदि हम इस तरह सोंचेंगे तो हर मनुष्य हमारे लिए आदरणीय होगा। आदर पारस्परिक सद्भाव का एक साधन है। जहाँ अनादर उत्पन्न होता है वहाँ उस मनुष्य के साथ मिलने के लिए कोई कारण नहीं रह जाता। व्यक्ति को अपना चित हमेशा खुला रखना चाहिए यदि प्रवेश का साधन कुंठित होगा, तो प्रचार कुंठित होगा। यानि दूसरों तक आपकी बात नहीं पहुंच पाएगी। आपस में गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। आज समाज में इस कारण जो कटुता है, वह नहीं रहनी चाहिए। मन के दरवाजे इतने खुले होने चाहिए कि कहीं से भी ज्ञान मिलता है, तो लेने को सदा तैयार रहें। मनुष्य आज अनेकों मुश्किलों का सामना कर रहा है। अगर आपस में पारस्परिक सद्भाव हो तो विकट से विकट समस्याओं को मिनटों में हल किया जा सकता है। पारस्परिक सद्भाव ही आनंदित जीवन जीने का सही मार्ग है।





संजय आ. लाठकर, भा.पु.से.
महानिरीक्षक, झारखंड सेक्टर

यंग प्लाटून का गठन: झारखण्ड अनुभव-2018



गौरव शर्मा, उप कमाण्डेन्ट
झारखंड सेक्टर, मुख्यालय, राँची

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की पहचान वर्षों से पूरे देश में कानून और व्यवस्था बनाये रखने में एक प्रमुख संकट मोचक बल के रूप में

रही है। इसे स्वतंत्रता के समय से ही हमेशा सम्मान प्राप्त होता रहा है, किन्तु हाल के समय में इस बल की सर्वत्र उपस्थिति ने इसे अति भरोसेमंद बना दिया है। आंतरिक सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी वहन करने के नाते इस बल ने लाल आतंक जैसी चुनौतियों का सामना जितने उत्साह और कुशलता के साथ किया है, वह समस्त केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में एक अद्वितीय मिसाल है।

माओवाद से टकराव

झारखण्ड राज्य से माओवाद के खतरे को समाप्त करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्ष 2000 में इस राज्य के गठन के समय से ही यह हिंसक माओवाद के फलने-फूलने का गढ़ रहा है। वर्षों से हो रही दिल दहला देने वाली अनेक घटनाएं, जिनमें हथियारों की लूट-पाट, भीषण हत्याकाण्ड, आई.ई.डी. ब्लास्ट तथा अनियंत्रित तरीके से धन उगाही करना, इसकी प्रमुख साक्षी रही है। प्रारंभिक वर्षों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कुछ ही बटालियने यहाँ तैनात थी। वर्ष 2009 में खून-खराबा अपने चरम सीमा पर था और उस समय झारखण्ड को इससे निजात दिलाने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बटालियनों की तैनाती चरणबद्ध तरीके से बढ़ाई गई। यह वह समय था जब कोबरा की 02 बटालियने भी इस राज्य में खड़ी की गई।

माओवादियों के खातमे का आगाज

वर्ष 2013 के अंत तक 20 जीडी बटालियने तथा 02 कोबरा बटालियने यहां तैनात हो चुकी थी। इन्होंने झारखण्ड पुलिस के साथ लगातार अक्रामक अभियान चलाकर इस संकट से लोहा लिया और अगले कुछ वर्षों में माओवाद के इस तांडव रूप को काबू पाने में काफी हद तक कामयाब रहें। माओवादियों से संबंधित घटनाएं जो वर्ष 2009 में 742 थी वह वर्ष 2017 में सिमटकर केवल 198 रह गई। माओवादियों की

शक्ति कम होकर छोटे-छोटे ग्रुपों में बट रही थी, जिसके अन्तर्गत उन्होंने लगातार अपना स्थान बदलने की रणनीति अपनाई तथा पुलिस

मुखबिरो को निशाना बनाने लगे। पुलिस बलों के साथ सीधे टकराव से बचने लगे तथा लगातार मारे जाने, पकड़े जाने तथा आत्मसमर्पण करने के कारण वे पूरी तरह से हतोत्साहित हो चुके थे। सभी एजेंसियों के तालमेल से लगातार खुफिया जानकारी प्राप्त हो रही थी, जिससे माओवादियों का मनोबल गिरने लगा एवं बहुत सारे कैडर पार्टी छोड़ कर भागने लगे।

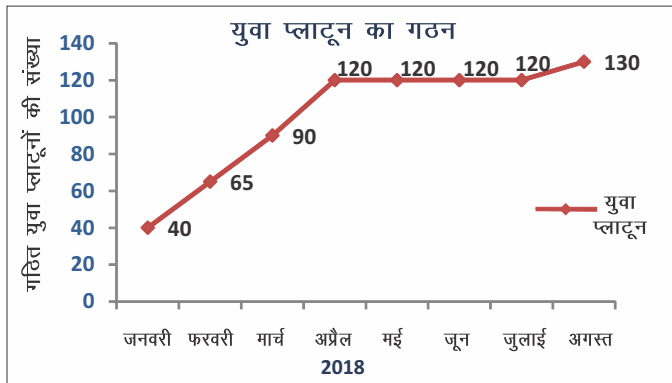
यंग प्लाटून को पुनर्जीवित करने की अवधारणा :-

अब समय की मांग थी कि और आक्रमक तरीके से, अधिक दिलेरी के साथ आक्रमण किया जाए ताकि उनकी ताबुत में आखिरी कील ठोकी जा सके। बल की रेगुलर बटालियन में कार्मिकों की उम्र में बड़े फासले होने से अल्प समय के नोटिस पर शीघ्रता से ऑपरेशन चलाने में कठिनाई अनुभव की गई। दोनों कोबरा बटालियन के परिचालन क्षेत्र में प्रयास बढ़ाने की बहुत आवश्यकता थी। यह महसूस किया गया कि उपलब्ध जवानों में से तुलनात्मक रूप से युवा टुकड़ी उपलब्ध हो, जिसे प्रशिक्षण दिया जा सके, जिसकी विशेष पहचान हो और जिसके पास बेहतर युक्तिक सामर्थ्य हो। वर्षों से यंग प्लाटून की जो अवधारणा चली आ रही थी, उसे फिर से जीवंत करने की आवश्यकता महसूस हुई।

संसाधन सुव्यवस्थित करने की प्रक्रिया :-

राज्य में उपलब्ध 20 जीडी बटालियने और उनकी 140 कम्पनियाँ (20 प्रशिक्षण कम्पनियों को शामिल करते हुए), में से एक समयबद्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत, 140 यंग प्लाटूनों को तैयार करने हेतु, प्रति कम्पनी कम से कम 01 प्लाटून को प्रशिक्षित करने का विचार किया गया। सुचारु रूप से प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए 203 कोबरा बटालियन, बरही तथा 209 कोबरा बटालियन, खुंटी मुख्यालय में अतिरिक्त नोड्स स्थापित किये गये, जिससे कि वर्तमान में उपलब्ध आंचलिक प्रशिक्षण केन्द्र, मुसाबनी के प्रयासों को बढ़ाया जा सके। सेक्टर में उपलब्ध संसाधनों से प्रशिक्षण स्टाफ, प्रशासनिक

साजो-सामान और पहले से मांग की गई अन्य प्रशिक्षण सामग्री को लिया गया। व्यापक चिंतन के पश्चात् 04 सप्ताह का पाठ्यक्रम तैयार किया गया, जिसमें वर्तमान जंगल युद्ध की युक्ति, माओवादी की बदली हुई कार्य प्रणाली को समझने, जी.पी.एस. तथा ओरक्स पर विशेष जोर देते हुए परिचालनिक गेजेट को हैंडल करने की प्रवीणता, रेडियो इन्टरसैप्टर की जानकारी, फायरिंग में सुधार तथा रात्रि में नेवीगेशन की क्षमताओं, हेली स्लीथरिंग तथा बल की शारीरिक सहनशीलता को विकसित करने संबंधी विषयों को शामिल किया गया।



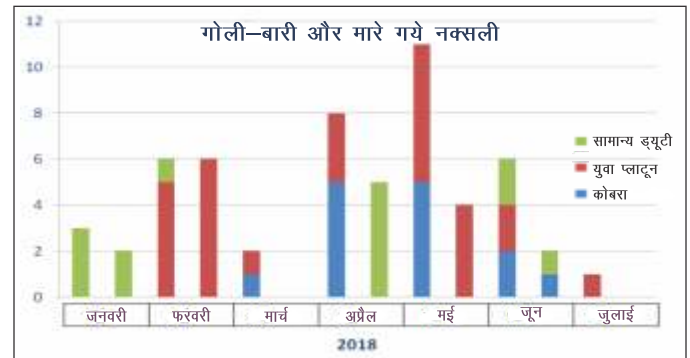
पहले बैच के लिए, 4 यंग प्लाटूनों को जैड.टी.सी. मुसाबनी तथा 08 यंग प्लाटून प्रत्येक 203 बटा0 मुख्यालय तथा 209 बटा0 के मुख्यालय के लिए दिनांक 08/11/2017 से शुरू होने वाले 04 सप्ताह के प्रशिक्षण के लिए चिह्नित की गयी। इनका साप्ताहिक आँकलन किया गया तथा जो इस प्रशिक्षण में पीछे थे उनके प्रदर्शन को सुधारने के लिए विशेष जोर दिया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यक्तिगत क्षमताओं में वृद्धि के साथ-साथ टीम भावना को बढ़ाना था। 09 दिसम्बर 2017 को प्रशिक्षण के समापन तक, स्वागतयोग्य परिवर्तन दिखाई दिये। चाहे यह सामरिक ज्ञान को ग्रहण करने की बात हो अथवा शारीरिक स्टैमिना विकसित करना हो, परिणाम सामान्यतः चौकाने वाले थे। 20 यंग प्लाटून, प्रत्येक बटालियन की एक प्लाटून, माओवादियों की चुनौती से लड़ने के लिए कमर कस चुकी थी। उन्हें उनकी कम्पनियों में वापस इस निर्देश के साथ भेज दिया गया कि वे अपने परिचालनिक क्षेत्र में चिन्हित लक्ष्य का पीछा करेंगे। उन्हें यह भी निर्देश दिया गया कि वह दैनिक प्रकार की सुरक्षा संबंधी ड्यूटियों से बचे तथा अपना ध्यान सक्रिय परिचालनिक ड्यूटी पर लगायें। साथ ही प्लाटून की सघनता और सत्यनिष्ठा को बरकरार रखते हुए बलों के मध्य टीम भावना व सौहार्द को बढ़ाने का काम करें।

सभी 120 परिचालनिक कम्पनियों में यंग प्लाटून को समय से तैयार करने के लिए दिसम्बर '2017 के अंत तक ग्रुप केन्द्र, राँची में एक और नोड प्रशिक्षण के लिए विकसित किया गया। इन 04 प्रशिक्षण नोड्स में अभी तक 06 बेचो में कुल

130 प्लाटून (प्रति कम्पनी एक तथा 10 प्रशिक्षण कम्पनियों) को उक्त प्रशिक्षण सफलतापूर्वक दिया जा चुका है। झारखण्ड सेक्टर का यह प्रयास है कि बचे हुए 10 यंग प्लाटून को अगले कुछ दिनों में प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे कि 140 यंग प्लाटून, राज्य में तैनात प्रत्येक जीडी कम्पनी में एक प्लाटून को खड़ी करने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

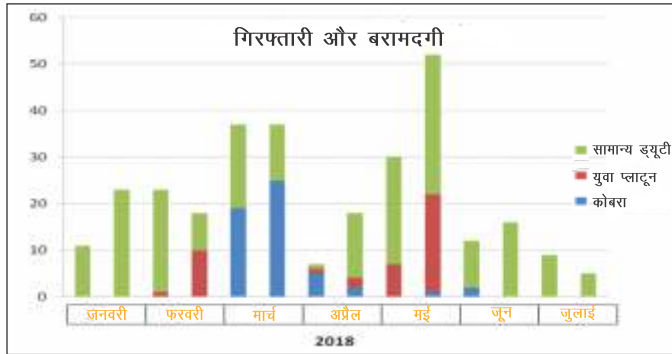
युवाओं का प्रहार

यहाँ यह स्पष्ट था कि इस प्रशिक्षण से युवा वर्ग के लिए कौशलता को प्राप्त करने हेतु एक प्रयास था जो कि स्मरणीय है। यह केवल समय की बात थी कि युद्ध क्षेत्र में उनकी व्यावसायिकता तथा वीरता बहुत जल्द लिट्मस टेस्ट से गुजरने वाली थी। फिल्ड से प्राप्त हुई प्रतिध्वनि अत्यधिक आशाजनक और परिपूर्ण थी। इन नई खड़ी की गई 157 बटालियन की यंग प्लाटूनों में से एक के साथ दिनांक 07 फरवरी 2018 को खूँटी जिले में मुठभेड़ हुई, जिसमें माओवादियों को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा।



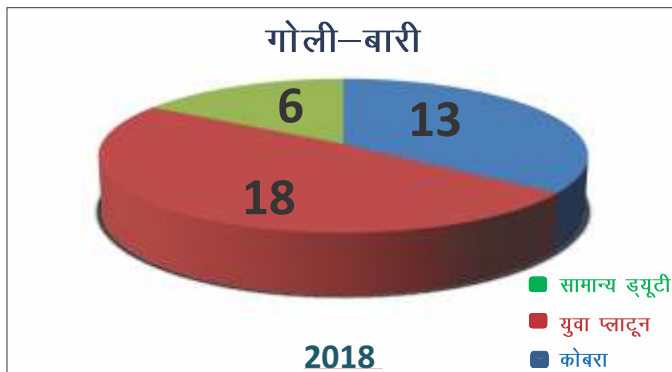
अगला ही दिन यानि 08 फरवरी 2018 को एक ऐतिहासिक दिन था। विशिष्ट सूचना पर 134 बटालियन की यंग प्लाटून लगभग 1415 बजे पलामू जिले में माओवादियों का पीछा कर रही थी और थोड़े ही समय में उनकी मुठभेड़ हो गई। टीम की बेहतर रणनीति के आगे माओवादियों को पस्त होना पड़ा और अपने आप को बचाने के लिए घटना स्थल से भागना पड़ा। परिणाम से संतुष्ट न होते हुए हमारी टुकड़ी ने उनका पीछा करने का फैसला किया। कुछ ही घंटों में उसी ग्रुप के साथ पुनः गोलीबारी शुरू हुई, जिसमें 02 माओवादी मारे गये और एक घायल महिला माओवादी पकड़ी गई। भारी मात्रा में हथियार तथा गोला बारूद बरामद किये गये। यह न केवल उनके मजबूत चरित्र को दिखाता है, बल्कि उनके धैर्य और दृढ़ता को भी प्रदर्शित करता है, क्योंकि वे लम्बे अंतराल की मुठभेड़ की संभावना वाले युद्ध की चुनौती को स्वीकार करने के लिए मानसिक रूप से तैयार थे। माओवादियों को परास्त करने का अगला अवसर दिनांक 26 फरवरी 2018 को प्राप्त हुआ, जिसमें जिला पलामू में सब जोनल कमांडर राकेश भूईयाँ सहित 04 माओवादियों को मार गिराया गया, जबकि

387 राउन्ड सहित 02 एस.एल.आर. बरामद की गई। 28 मई 2018 को एक अन्य यंग प्लाटून ने एरिया कमांडर अमरजीत सहित 03 टी.पी.सी. कैडर को मार गिराया और 03 अन्य को (जिसमें एक घायल नक्सली भी शामिल था) पकड़ लिया गया। साथ ही बड़ी मात्रा में हथियार तथा गोलाबारूद बरामद किये गए।

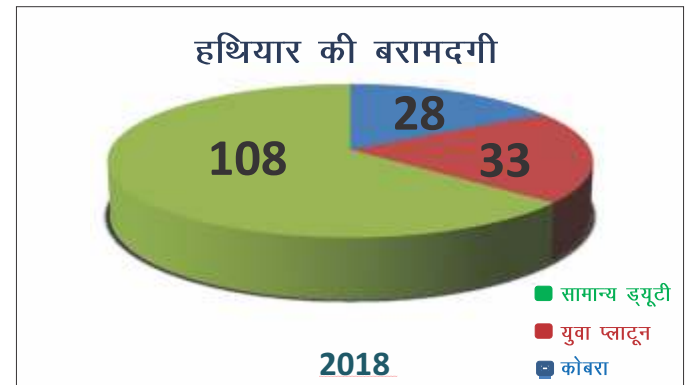
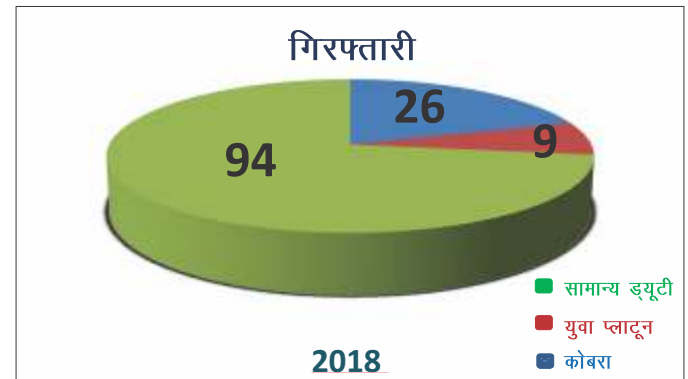


प्रहार की गूँज

यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ हुई कुल 37 गोलीबारी की घटनाओं में से 18 का इन नई यंग प्लाटूनों ने मुकाबला किया, जिसमें इन प्लाटूनों ने कुल 19 माओवादीओं को मार गिराया और 10 को पकड़ा गया। इस प्रकार इनकी सफलता का प्रतिशत 60 प्रतिशत से अधिक रहा।



यंग प्लाटूनों द्वारा लड़े गये यह युद्ध आई.ई.डी. निष्क्रिय करने का बेहतर कौशल और हथियार को अच्छे तरीके से हैंडल करने की योग्यता से युक्त थे, जो कि उन्होंने व्यापक तथा बेहतर प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त किया। इन ऑपरेशनों के नतीजों से यह स्पष्ट था कि तुलनात्मक रूप से इन प्लाटून में बेहतर फायर कंट्रोल तथा फायरिंग कौशल था। इन टुकड़ियों के जॉबार्जों ने रेडियो ऑपरेटर के साथ मिलकर ऑपरेशन के दौरान संचार उपकरणों को असाधारण तरीके से उपयोग करने का परिचय दिया।



दृढ़ अनुमान

संक्षेप में, इससे न केवल यूनिट की परिचालनिक क्षमता बढ़ी है, बल्कि समग्र रूप से परिचालन की तैयारी भी मजबूत हुई है। फिल्ड फार्मेशन से इनके पराक्रम के बारे में बेहतरीन फीडबैक प्राप्त हुआ। फिल्ड कमांडरों ने अपनी यंग प्लाटूनों की क्षमताओं पर दृढ़ विश्वास व्यक्त किया है। वर्तमान समय में युवा सिपाही, माओवादी प्रभाव को समाप्त करने के लिए आदर्श उत्प्रेरक के रूप में काम कर रहे हैं और वे प्रशंसा के पात्र हैं। उनके सामने, आने वाले दिनों में राज्य में शान्ति बनाये रखने की चुनौति है और हमें आशा है कि सभी कम्पनियों में यंग प्लाटून खड़ी करने के प्रयास से आने वाले दिनों में जीडी बटालियनों के परिचालनिक प्रदर्शन में वृद्धि होगी।

ग्रामीणों के जीवन में रोशनी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की अनूठी पहल

झारखण्ड राज्य के लातेहार जिला में करमडीह गाँव माओवादी प्रभाव एवं क्रिया कलापों का एक सबसे पुराना एवं महत्वपूर्ण गढ़ रहा है। बूढ़ा पहाड़ की तलहटी में स्थित यह गाँव उनके रणनीतिक तैयारी का केन्द्र रहा है जहाँ से उनके लिए रसद की व्यवस्था करने तथा अन्य सहायता उन तक ले जाने के रास्ते बनाये जाते रहे हैं। चूँकि यह क्षेत्र उस ओर जाने वाले विशेष भू-भाग एवं भौगोलिक रूप से दूरवर्ती क्षेत्रों से घिरा है जिस कारण यहाँ कई बार प्रशासन की पहुँच नहीं हो पाती है। माओवादियों के रणनीतिक रूप से प्रमुख इस केन्द्र

पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए 112 बटालियन, के.रि.पु. बल के जवानों को दिनांक 20 जून 2018 को करमडीह कैम्प में तैनात किया गया।



दिनांक 17/08/2018 को इस कैम्प में भ्रमण के दौरान मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि इन गाँवों के लोग सूर्यास्त के उपरांत चाँद की रोशनी पर निर्भर है, जबकि के.रि.पु.बल का कैम्प बिजली की रोशनी से जगमगा रहा था। शाम होते ही कैम्प के अंदर चारों ओर बिजली जल चुकी थी। जबकि बाहर चारों ओर दिल दहला देने वाला अंधकार देखकर मन बहुत दुखी हुआ। अधिकारियों की टीम के साथ इस विषय पर विचार विमर्श किया गया कि क्या इन गाँवों के लोगों की जिन्दगी में आशा की किरण और प्रकाश लाने के लिए क्या हम लोगो द्वारा कुछ किया जा सकता है ?

केवल एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए 112 बटालियन, के.रि.पु.बल के कमाण्डेंट श्री देवाशीष विश्वास एवं कम्पनी कमाण्डर श्री अजय कुमार





द्वारा अपनी टीम के साथ मिलकर कैम्प के बाहर बिजली की अस्थाई लाईन बिछा दी गई एवं कैम्प में उपलब्ध जनरेटर से तार जोड़कर एवं एल.ई.डी. बल्ब लगाकर करमडीह तथा खामीखास गाँव के 10 घरों में बिजली उपलब्ध करा दी गई। सबसे दूर घर लगभग 200 मीटर की दूरी पर था। इस प्रयास से 60 ग्रामीणों को बिजली की रोशनी उपलब्ध हुई। दैनिक घरेलू कार्य जो कि सूर्यास्त के पश्चात् बन्द हो जाया करते थे, अब चहल-पहल एवं पठन-पाठन की गतिविधियों के साथ जीवंत हो गये हैं। यह प्रयास विशेष रूप से छोटे बच्चों, महिलाओं तथा विद्यार्थियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

इस छोटे से कदम से उनके जीवन में बहुत बड़ी आशा का संचार हुआ है और वे वर्तमान में क्षेत्र में व्याप्त माओवाद की बेड़ियों से मुक्त होने की उम्मीद करने लगे हैं। बड़ी प्रसन्नता तथा उत्साह के साथ ये ग्रामीण अब के.रि.पु.बल तथा सरकार से अत्यधिक बफादारी तथा विश्वास करने लगे हैं जो कि माओवाद के लिए एक बहुत बड़ा झटका है। अब जब कभी भी के.रि.पु.बल का कैम्प रोशनी से जगमगाएगा तो ये घर भी

जगमगाएंगे। इनके बाहरी वातावरण से कहीं अधिक, अब इनका जीवन जगमगाने लगा है।

प्रथम चरण के इस प्रयास की सफलता से ग्रामीणों में जिस आशा एवं विश्वास का संचार हुआ उससे उत्साहित होकर 112 बटालियन, के.रि.पु.बल कैम्प के पास के इन दोनों गाँवों के कुछ और परिवारों को रोशनी देने के लिए प्रेरित हुई। इस प्रकार दूसरे चरण के प्रयास में उपलब्ध संसाधनों से 43 घरों एवं 220 ग्रामीणों को बिजली उपलब्ध कराई गयी। दूसरे चरण में सी.आर.पी.एफ कैम्प से लगभग 01 किलोमीटर की दूरी तक अवस्थित घर को भी बिजली उपलब्ध कराई गई है। उक्त दोनों चरणों में करमडीह एवं खामीखास गाँव के कुल 53



परिवारों एवं 280 ग्रामीणों के घर बिजली की रोशनी से जगमग करके उनके जीवन में व्याप्त अंधेरे को दूर करते हुए आशा एवं विश्वास जगाने का अनूठा कार्य के.रि.पु.बल द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। इस सराहनीय कार्य की राज्य की जनता, स्थानीय एवं राष्ट्रीय मीडिया में भूरी-भूरी प्रशंसा की जा रही है।



कार्यालयीन पत्राचार में राजभाषा हिंदी का प्रयोग

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत को अंग्रेजों से मुक्त करने हेतु राष्ट्रीय आंदोलन में आम जनता की बोलचाल एवं समझ में आनेवाली भाषा हिंदी को अपनाने हेतु दूरदृष्टिगत विचार करते हुए नागरी प्रचारिणी सभा में घोषणा की थी कि

“मैं समझता हूँ कि हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को पूरे देश के लिए एक आम भाषा की जरूरत है। एक आम भाषा का होना राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण तत्व है। वह आम भाषा ही होती है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाते हैं। इसलिए यदि हम इस देश को एक साथ लाना चाहते हैं तो सबके लिए एक आम भाषा से बढ़कर कोई ताकत नहीं हो सकती और यही सभा (नागरी प्रचारिणी सभा) का उद्देश्य है।”
महात्मा गाँधी

भाषा संप्रेषण का माध्यम और संपर्क का साधन होने के साथ-साथ संस्कृति व संस्कार के संरक्षण, संवर्धन व संवहन का संसाधन भी है। मातृभाषा वैयक्तिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि की पहचान कराती है, राष्ट्रभाषा समाज को स्वदेशी भाव-बोध से एक माला में पिरोती है तथा विश्व स्तर पर राष्ट्रीय स्वाभिमान की विशिष्ट पहचान है। राजभाषा शासन-प्रशासन में देश की जनता की पहुंच का माध्यम है। राजभाषा यानी राज-काज की भाषा, शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की भाषा और जनता एवं सरकार की भाषा है। हिंदी को भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा के रूप में अंगीकार करते हुए 26 जनवरी, 1950 को भारत का संविधान लागू होने की तिथि से सरकारी कामकाज में हिंदी भाषा का कार्यान्वयन की शुरुआत हुई। वर्तमान में हिंदी भारत के जनमानस की भाषा, संपर्क भाषा और शासकीय प्रयोजनों के लिए भारत संघ की राजभाषा के रूप में सर्वोच्च शिखर पर विराजमान है।

वर्तमान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्यालयों में सरकारी कामकाज सरल, बोलचाल एवं प्रशासनिक हिंदी भाषा में हो रहा है जिसके कारण गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में हिंदी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य को अधिकतर कार्यालयों ने प्राप्त किया है।

कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी की मुख्य विशेषताएं:-

1. **प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग :** कार्यालयी हिंदी में प्रायः प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। जटिल या साहित्यिक हिंदी का प्रयोग को टालना चाहिए।

2. **एकार्थता :** एकार्थता भी कार्यालयी हिंदी की एक मुख्य विशेषता है। अनेकार्थता का प्रयोग कभी नहीं किया जाता है। प्रस्तुत कथन को स्पष्ट, दोटूक, बिना लागलपेट और घुमाव-फिराव के कहने

की विशेषता जितनी अधिक हो, कार्यालयी हिंदी उतनी ही अच्छी भाषा मानी जाएगी।

3. **पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग :** कार्यालयी हिंदी के पारिभाषिक शब्द (टेक्नीकल टर्म्स) काफी कुछ अलग होते हैं, जिनका प्रयोग अन्य प्रयुक्तियों में प्रायः नहीं होता है। उदाहरण के लिए कार्यालयी हिंदी में उत्साहन (एबोलिशन), निविदा (टेंडर), शपथपत्र (एफिडेविट) आदि सैकड़ों शब्द इसी श्रेणी के हैं।

4. **भाषा शैली :** कार्यालयी हिंदी की एक बहुत बड़ी विशेषता है जिसे शैलीभेद कहा जा सकता है। हिंदी भाषा में यह स्पष्ट है और पर्याप्त है। इसका सरल और सीधा कारण यह है कि हिंदी के कार्यालयी भाषा बनने के पूर्व हिंदी प्रदेश में उर्दू कार्यालयी भाषा थी, जो अपनी परंपरा में तो संस्कृत, अपभ्रंश से जुड़ी थी, किंतु अपने शब्दों में वह इस परंपरा से न जुड़कर अरबी, फारसी, तुर्की से जुड़ी थी, इसलिए उसके अधिकांश पारिभाषिक शब्द अरबी, फारसी के हैं। उदाहरणार्थ – अदालत, जिला, तहसील, जमानत, हलफनामा, खजाना, सरकार, मुकदमा आदि। आजादी के बाद नया रास्ता खोला एक तो यह कि हमारे सारे पारिभाषिक शब्द विदेशी परंपरा के नहीं होने चाहिए बल्कि उनमें ऐसे भी हों जो अपनी परंपरा की मूल भाषा संस्कृत के हों या उसके उपसर्गों, प्रत्ययों, शब्दों तथा धातुओं से बने हों। दूसरा यह कि उर्दू माध्यम से गृहीत अरबी, फारसी, तुर्की के शब्द भारत की सभी भाषाओं में नहीं हैं और न ही सभी भाषाओं में स्वीकार ही हो सकते हैं किंतु संस्कृत शब्द भारत की प्रायः सभी भाषाओं के अनुकूल हैं। चाहे वह उत्तर में हिंदी में हों, दक्षिण में तेलगु, कन्नड़ में, पश्चिमी में गुजराती, पूरब में बंगला में। इन दोनों का परिणाम यह हुआ कि कार्यालयी हिंदी में कुछ ऐसे भी शब्द संस्कृत से लिए गए हैं जिनके लिए उर्दू परंपरा से गृहीत शब्द पहले से प्रचलित रहे हैं। जैसे कि—



बोलचाल की हिंदी	संस्कृत निष्ठ भाषा शैली
अर्जी	आवेदन पत्र
हलफनामा	शपथ पत्र
टेंडर	निविदा
दफतर	कार्यालय
अदालत	न्यायालय

कार्यालयी हिंदी का कार्यान्वयन सरकारी कामकाज का एक अंग है। वैयक्तिक रूप में न कहकर निवैयक्तिक रूप में कहता है। अतः कार्यालय रूप में कर्मवाच्य की प्रधानता होती है। इस रूप में कथन व्यक्ति निरपेक्ष होता है। उदाहरणार्थ – “सर्व साधारण को सूचित किया जाता है”, “कार्यवाही की जाए”, “स्वीकृति दी जा सकती है” आदि। कार्यालयी कामकाज में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन, प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु अधिकारी और कर्मचारियों को कार्यालयी पत्राचार में हिंदी के जटिल एवं कठिन शब्दों के स्थान पर सरल एवं सामने वालों को समझ में आने वाले शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

5. वाक्य विन्यास : कार्यालयी हिंदी में सीमित वाक्य हैं। इसका मूल कारण कर्मवाच्यता है और कर्तावाच्य का प्रयोग नहीं होता। उदाहरण –

1. मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
2. त्रैमासिक विवरण भेजने की अंतिम तारीख 31 मार्च है।
3. इस पत्र को शीघ्र जारी करें।
4. इसे भुगतान के लिए पारित किया जाए।
5. आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

कार्यालयी हिंदी की भाषा मुख्यतः तकनीकी या अर्धतकनीकी होती है। कार्यालयी हिंदी वास्तव में अंग्रेजी वाक्य-विन्यास से अधिक प्रभावित है, क्योंकि हिंदी में ये वाक्य अंग्रेजी वाक्यों के अनुवाद के माध्यम से आए हैं। इसी कारण कार्यालयी हिंदी ने कहीं-कहीं अपने प्रकृत स्वभाव को छोड़ कृत्रिम रूप ग्रहण कर लिया है।

कार्यालयीन पत्राचार :

सरकारी पत्रों में निम्नलिखित पत्र मुख्य रूप से प्रयुक्त होते हैं –

- (1) पत्र (2) स्मरण पत्र या अनुस्मारक (3) अर्ध सरकारी पत्र (4) पृष्ठांकन (5) कार्यालय आदेश (6) कार्यालय ज्ञापन (7) अधिसूचना (8) संकल्प (9) अंतर्विभागीय टिप्पणी (10) प्रेस विज्ञप्ति (11) तार, फैंक्स, मेल/ संदेश

कार्यालय टिप्पणी लेखन :

फाईल के दो भाग हैं 1. टिप्पण भाग 2. पत्राचार भाग। किसी भी विचाराधीन पत्र को सुविधाजनक निपटाने के लिए जो राय या सुझाव दिया जाता है वह कार्यालय टिप्पणी कहलाती है। इसे ‘टिप्पण’ भी कहा जाता है। इसका उद्देश्य मामलों को शीघ्र निपटाना होता है। कार्यालय टिप्पणी कभी भी मूल पत्र या आवती पर नहीं लिखी जाती है। टिप्पण प्रारूप लेखन का प्रमुख अंग है। कार्यालय टिप्पणी में टिप्पणकर्ता अपनी पत्रावली पर विचाराधीन पत्र का सार देते हुए उसके निस्तारण के लिए विभागीय प्रावधान/नियम उप नियम तथा परिनियम आदि का तर्गसंगत उल्लेख करते हुए अपना सुझाव प्रस्तुत करता है। कार्यालय टिप्पणी का उद्देश्य उन बातों पर निर्णय करना होता है, जो तर्कसंगत रूप में विषय को स्पष्ट करती हैं तथा जिनके आधार पर निर्णय की संभावनाओं का संकेत करता है। कार्यालय टिप्पणी का दूसरा उद्देश्य कार्यालयों में होने वाले काम को निपटाना है।

कार्यालय टिप्पणी का क्रम : टिप्पणीकर्ता सदैव एक क्रमविशेष में ही विचाराधीन पत्र पर टिप्पणी करता है। (1) विचाराधीन विषय (2) विचाराधीन विषय की पृष्ठभूमि (3) विषय संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण (4) नियम विनियमों के अंतर्गत तार्किक विश्लेषण (5) सुनिश्चित सुझाव एवं निष्कर्ष

कार्यालय टिप्पणी में प्रायः प्रयुक्त होने वाले वाक्यांश : (1) आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। (2) आपके आदेशार्थ प्रस्तुत है। (3) आपके हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है। (4) मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है। (5) अनुमोदन की प्रत्याशा में आदेश अवलोकन एवं हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है।

मसौदा लेखन :

कार्यालयों में कामकाज निपटाने के लिए किए जाने वाले कार्यालयीन पत्राचार का प्रारंभिक रूप तैयार करना मसौदा लेखन है। इसे मसौदा या आलेखन भी कहा जाता है। यह औपचारिक टिप्पणी का अगला सोपान है। प्रारंभिक मसौदा लेखन में आवेदन पत्र, स्मरण पत्र, अंतरिम उत्तर, पृष्ठांकन, अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय आदेश आदि आते हैं। उच्चतर मसौदा लेख में कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचना, संकल्प, प्रेस विज्ञप्ति आदि आते हैं। यह विभाजन केवल सुविधा की दृष्टि से किया गया है। मानक मसौदा लेखक का प्रारूप पूर्व निर्धारित होता है और वह सभी कार्यालयों में एक समान होता है। इसके प्रारूप और भाषा मानकीकृत होती है। इसलिए इस मसौदे को मानक मसौदा कहते हैं।

कार्यालयों में सरकारी कामकाज हिंदी में न करते हेतु किसी प्रांतविशेष या भाषा-भाषियों को दोष देने के बजाय यदि कार्यालय में तैनात अधिकारी-कर्मचारी स्वेच्छा से हिंदी भाषा का प्रयोग, परिष्कार और प्रचार-प्रसार में पूरी ईमानदारी से काम करें तो निश्चय ही माथे पर बिंदी की तरह हिंदी भाषा देश की राजभाषा के रूप में विराजमान रहेगी।

विलुप्त होती भारतीय संस्कृति

हमारा भारत देश 'विविधता में एकता' वाला देश है। यहाँ पर विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। सभी की अपनी-अपनी भाषाएं, रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज, वेद-पुराण एवं साहित्य है। सब की अपनी-अपनी संस्कृति है। सभी लोगों की संस्कृति उनकी पहचान बनाये हुये है। संस्कृति के प्रकाश में ही भारत अपने वैयक्तिक और वैश्विक जीवन मूल्यों की रक्षा कर सकता है। भारत देश की प्राचीन संस्कृति इस बात को पुष्ट करती है कि यहाँ के महान शासकों ने सदा सर्वधर्मसमभाव की नीति अपनाई। यहाँ की लोकतन्त्रीय व्यवस्था में हर धर्म व सम्प्रदाय को समान आदर दिया गया। यहाँ के महान शासकों ने सदैव इसी नीति का अनुसरण किया। यह भारत की एक आदर्श परम्परा थी, जिसका पालन राजतन्त्र ने भी किया और लोकतन्त्र ने भी। आज पूरा देश जिस सांस्कृतिक दौर से गुजर रहा है उसके पदचाप में संस्कृति की कोई अनुगूँज सुनाई नहीं देती है। आज दिन-प्रतिदिन सांस्कृतिक मूल्य एवं आदर्श नष्ट होते जा रहे हैं। देश भर में संस्कृति के नाम पर अनगिनत संस्थाएं बनी, किन्तु संस्कृति उनसे दूर-दूर ही बनी रही।

संस्कृति कोई देवता नहीं जो मंदिरों में ही रहेगी। वह तो एक एहसास है हमारे वजूद का। संस्कृति एक ऐसा विस्तृत फलक है, जिसमें आदमी और भगवान दोनों शरण पाते हैं। अब इतनी व्यापक अनुभूति को किसी चारदीवारी में कैद तों नहीं किया जा सकता। दरअसल जो होना चाहिए था वह न होकर उसके उल्टा हुआ। आज हमारी संस्कृति का सात्विक प्राचीन रूप नष्ट होता जा रहा है। आर्थिक दासता के मंडराते बादलों को छांटने में सफलता प्राप्त नहीं हो रही। देश एवं समाज अपरिपक्व प्रयोगों में फंस कर अनेक अन्य समस्याओं को जन्म दे रहा है। सम्पन्नता के साए में पनपती और पलती विकृतियों से संतृप्त पश्चिमी जीवन जैसी ही घुटन और तनाव का अनुभव पहले से ही कर रहे भारत में भी वैसे ही लक्षण उभरने लगे हैं। सांस्कृतिक स्तर पर हमारी स्थिति धोबी के कुत्ते से भिन्न नहीं, न घर के रह गए हैं और न घाट के। न प्राचीन संस्कृति बची है न आधुनिकता पूरी तरह आई है। आज हम न पूरब के हैं न पश्चिम के। एक अजीबो-गरीब संस्कृति के मोहपाश में कैद होते जा रहे हैं। गर्व से कहो हम भारतीय हैं, दोहराने में भी झिझक होने लगी है। यद्यपि भारतीय संस्कृति का प्राचीन स्वरूप 'विविधता में एकता' सुरक्षित है तथापि एकता के आधारभूत रंग धूमिल पड़ गए हैं और विविधता के

सतही रंग उभर कर हमारे समक्ष आ गए हैं। हम भारतवासी अपनी भाषा, रहन-सहन, खान-पान और वेशभूषा में भले ही अलग-अलग हों परन्तु हमारी संस्कृति एक ही है

अर्थात् भारतीय राष्ट्र-राज्य का आधार एक संस्कृति नहीं, अनेक संस्कृतियों की पारस्परिक सहिष्णुता और उनका अन्तर्निहित सहअस्तित्व है। विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं के स्वतन्त्र अस्तित्व और विकास के अधिकार की स्पष्ट स्वीकृति ही भारतीय राष्ट्र-राज्य की एकता और अखण्डता की गारण्टी है। संस्कृति का अर्थ संकुचित नहीं है। वस्तुतः संस्कृति मन की सुन्दरता को व्यक्त करती है। मन की सुन्दरता से सौन्दर्य की मर्यादाएं बनती हैं। मन की सुन्दरता से हमें सुख-दुख के प्रति दृष्टि निर्धारित करने की क्षमता प्राप्त होती है। संस्कृति हमें सुख और उत्सव में दुख और संकट में गति और नियति की दृष्टि देती है। संस्कृति से हमें सुख और उल्लास में संयम और दुख में धैर्य की शिक्षा मिलती है। संस्कृति इन अवधारणाओं के अतिरिक्त शील का निर्माण करती है। अतिरेक की सघनता और विषाद की त्रासदी को भोगने की क्षमता प्रदान करती है। 'भारतीय शील', 'भारतीय मर्यादा', 'भारतीय उत्सव बोध' और 'भारतीय विषाद' से मोक्ष की भावना एक दिन में नहीं बनती। सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं तब कहीं भोग और त्याग दोनों के आवरण के मर्म को संस्कृति व्यक्त कर पाती है।

आज जो कुछ भी मूल्य बोध के स्तर पर हमारे पास है वह हजारों वर्ष की जीवन शैली की देन है। किसी भी जीवन शैली की पहचान भी आध्यात्मिक उत्सर्ग और भौतिक साधिकार ग्रहण करने की क्षमता में दिग्दर्शित होती है। भारतीय संस्कृति चूंकि एक निरन्तर गतिशील दर्शन है इसलिए उसमें देश, काल, धर्म भी लक्षित होते हैं। संसार की जिन संस्कृतियों में देश काल के अनुसार अपने को अनुकूल बनाने की दृष्टि नहीं होती वह काल के चपेट में आ जाती है। इसलिए संस्कृति वह सीमा भी निर्धारित करती है जहां से हमें परिवर्तन और अस्वीकार की दृष्टि मिलती है। क्या स्वीकार करे और आधुनिकता के दबाव के सामने कितना झुके यह शक्ति एक गतिशील सांस्कृतिक जीवन शैली का अविभाज्य अंग है। भारतीय संस्कृति की शाश्वतता का यह एक बहुत बड़ा सत्य



राकेश कुमार,
कमाण्डेन्ट-55 बटा. के.रि.पु.बल



है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। किसी भी संस्कृति का जन्म दो संस्कारों या दो प्रकार के मूल्यों और मिजाजों का योग है। प्राकृतिक और नैसर्गिक का संबंध यदि उनमें से एक है तो परमार्थिक और जागतिक दूसरा बिन्दु है। इसी प्रकार पार्थविक और सूक्ष्मतम का संयोग एक तीसरा बिन्दु है जिसमें प्राकृतिक और नैसर्गिक के संयोग से जीवन्त तत्वों का सृजन एवं एक जातीय जीवन शैली का प्रादुर्भाव होता है। प्रकृति के साथ-साथ विकार का तत्व लगा है। इस विकार को हम नैसर्गिक मूल्यों के आधार पर शोधित करते रहते हैं। उसी प्रकार जागतिक विकार भी हैं जिसे हम परमार्थिक दृष्टि से शोधित करते हैं। पार्थिवता यदि यथार्थ है तो उस यथार्थ के विकार को हम एक सूक्ष्मतम वैचारिक एवं दार्शनिक पुरुषार्थ से मृत को अमृत में बदल सकते हैं।

प्राचीन भारतीय संस्कृति या हिन्दू संस्कृति जो भी है, उसकी आत्मा है लेकिन वह अंतिम सांसें ले रही है, क्योंकि हम संस्कृति को नुमायशी और बिकाऊ बनाने की तरफ ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। आज संस्कृति को हम इस रूप में पेश कर रहे हैं कि वह पाश्चात्य संस्कृति के रूप में परिवर्तित होती जा रही है। आजादी की लड़ाई और राष्ट्रीयता के आंदोलनों में हमने जिस श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति को विश्व की भावी संस्कृति के रूप में पेश किया, वह आज पश्चिमी दुनिया की जीवन शैली से प्रभावित हो रही है, जो प्रभाव से मुक्त मूलरूप में बची है वह किसी न किसी रूप में बिक रही है और हम इस बिकने को भारतीय संस्कृति का प्रचार और भारत की प्रतिष्ठा मान बैठते हैं। संस्कृति कोई बन्द डिब्बा नहीं है जिस पर बाहर की आबो-हवा का कोई असर पड़ना ही नहीं चाहिए। संस्कृति और मूल्यों की रचना लगातार होती है और इस रचना में अनेक शक्तियाँ चाहे यह आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि हों, अपना निर्णायक असर डालती हैं। कहीं ऐसा न हो कि भारत की अमरता, इसका सनातन सातत्य, इसकी सदाप्रवाही पवित्र संस्कृति, इसके साँस, इसके संत, इसका मातृभाव, इसकी लौकिक-पारलौकिक प्रेरणाएं-आकांक्षाएं, इसकी दिग्विजयी परम्परा, इसकी सर्वमंगलमयी प्रतिभा-प्रतिमा, इसकी विश्वमंगलमयी भक्ति, इसका ज्ञान और कर्म अपना अधिष्ठान, अनुष्ठान और अभीष्ट त्याग कर केवल 'पेट' में ऐसे समा जाएं कि प्राणों की महत्ता और सत्ता बेमानी हो जाए। हमारे शास्त्रों के श्लोक और संत हमें बताते हैं कि हमारी भारत माता और हम भारत के लोगों के पंचप्राण हैं गंगा, गीता, गाय, गायत्री और त्रिदेव-ब्रह्मा-विष्णु-महेश। यही भारत की अजस्र और अपराजेय ऊर्जा और विश्वमंगल का बीजमंत्र है। यही सृष्टि की संरचना, पालन-पोषण और प्रलय के मूल हैं। इन्हीं से

सृष्टि भी है और संस्कृति भी, इन्हीं से जीवन मिलता-चलता है और इन्हीं में विलय होता है। यह विश्व एवं ब्रह्माण्ड की वह भावभूमि है, जहां सब कुछ, सभी का है। जहां सभी सबके है। न कोई किसी के लिए अंजाना है और न कोई किसी के लिए पराया।

भारत भी दूसरे देशों की तरह ही 'खाओ-पियो-मौज करो' वाला एक आम देश बनकर रह गया है। वर्तमान समय में संस्कृति का औद्योगीकरण हो चुका है। दिखावे एवं प्रदर्शन की इस सभ्यता ने मानव-मन की शांति का हरण कर लिया है। असंतोष इसकी मूल प्रवृत्ति है। प्रतियोगी और तुलनात्मक जीवन इसकी प्रमुख प्रेरणा है। अपने पड़ोसी पर 'नहले' पर 'दहला' दिखाई देने की होड़ और दौड़ में बाजी मार लेने को यहां 'प्रगति' माना जाता है। लौकिक सम्बन्धों-सम्बोधनों को यहां क्लब, शराब, जुआ, नग्नता और स्वैराचार को यूरोपीय-स्वीकृति मानकर आधुनिक होने का प्रदर्शन किया जाता है। मर्यादाहीनता को समरसता कहा जाता है। विकृत आनन्दातिरेक को यहां सामाजिक अभिसरण माना जाता है। पश्चिमी आधुनिकता का यह दानवी उपभोक्तापन भारत के संस्कार और संस्कृति को निगल रहा है। आज सभ्य होने का अर्थ है असभ्यता, सुसंस्कृत होना है नग्नता। जो कौमें महज किताबी होती हैं उनकी संस्कृति कट्टरपंथी होती है। वह समय के साथ नहीं बदलती। जो उदार होती है वह दोनों में विवेक से काम लेती है। यह बात इसलिए लिखी गई है क्योंकि आज संस्कृति को केवल गाना-बजाना, नृत्य तक ही सीमित करने भी कोशिश की जा रही है। लोग यह भूल जाते हैं कि केवल चोला बदलने से मन और दृष्टि में बदलाव नहीं आता। संस्कृति की जड़ें भी गहरी होती हैं। भारत में लोकतंत्र है। लोक में सभी संप्रदाय निहित हैं और लोकतंत्र वही है जो बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय हो। इसलिए 'सेक्यूलर' का अर्थ धर्म-निरपेक्ष नहीं, सम्प्रदाय-निरपेक्ष मानना चाहिए।

धर्म तो भारत की आत्मा है, नैतिक मूल्य ही धर्म है, सदाचरण ही धर्म है, जीवदया, परोपकार, अहिंसा, सत्य ही धर्म है। इनको छोड़ दिया तो मर्यादा, धर्म-विहीन राष्ट्र उच्छृंखल हो जाएगा इसलिए शासन सम्प्रदाय-निरपेक्ष बने, धर्मनिरपेक्ष नहीं इसी में कल्याण है और यही हमारी सांस्कृतिक विरासत है। यह बनी रहेगी तो देश की अखंडता सुरक्षित रहेगी और हम तभी तक सुरक्षित हैं जब तक हमारी संस्कृति, देश की एकता और अखंडता सुरक्षित है। हमारी संस्कृति हमारी देश की आत्मा है। इसे बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए।

हिन्दी साहित्य के विकास के विभिन्न काल

हिन्दी साहित्य का आरंभ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे छोटे शासनकेन्द्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे। विदेशी मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। धार्मिक क्षेत्र अस्तव्यस्त थे। इन दिनों उत्तर भारत के अनेक भागों में बौद्ध धर्म का प्रचार था। बौद्ध धर्म का विकास कई रूपों में हुआ जिनमें से एक वज्रयान कहलाया। वज्रयानी तांत्रिक थे और सिद्ध कहलाते थे। इन्होंने जनता के बीच उस समय की लोकभाषा में अपने मत का प्रचार किया। हिन्दी का प्राचीनतम साहित्य इन्हीं वज्रयानी सिद्धों द्वारा तत्कालीन लोकभाषा पुरानी हिन्दी में लिखा गया। इसके बाद नाथपंथी साधुओं का समय आता है। इन्होंने बौद्ध, शांकर, तंत्र, योग और शैव मतों के मिश्रण से अपना नया पंथ चलाया जिसमें सभी वर्गों और वर्णों के लिए धर्म का एक सामान्य मत प्रतिपादित किया गया था। लोकप्रचलित पुरानी हिन्दी में लिखी इनकी अनेक धार्मिक रचनाएँ उपलब्ध हैं। इसके बाद जैनियों की रचनाएँ मिलती हैं। स्वयंभू का 'पउमचरिउ' अथवा रामायण आठवीं शताब्दी की रचना है। बौद्धों और नाथपंथियों की रचनाएँ मुक्तक और केवल धार्मिक हैं पर जैनियों की अनेक रचनाएँ जीवन की सामान्य अनुभूतियों से भी संबद्ध हैं। इनमें से कई प्रबंधकाव्य हैं। इसी काल में अब्दुर्रहमान का काव्य 'संदेशरासक' भी लिखा गया जिसमें परवर्ती बोलचाल के निकट की भाषा मिलती है। इस प्रकार ग्यारहवीं शताब्दी तक पुरानी हिन्दी का रूप निर्मित और विकसित होता रहा।

आदिकाल (743 ई से 1343 ई.):— ग्यारहवीं सदी के लगभग देशभाषा हिन्दी का रूप अधिक स्फुट होने लगा। उस समय पश्चिमी हिन्दी प्रदेश में अनेक छोटे छोटे राजपूत राज्य स्थापित हो गए थे। ये परस्पर अथवा विदेशी आक्रमणकारियों से प्रायः युद्धरत रहा करते थे। इन्हीं राजाओं के संरक्षण में रहने वाले चारणों और भाटों का राजप्रशस्तिमूलक काव्य वीरगाथा के नाम से अभिहित किया गया। इन वीरगाथाओं को रासो कहा जाता है। इनमें आश्रयदाता राजाओं के शौर्य और पराक्रम का ओजस्वी वर्णन करने के साथ ही उनके प्रेमप्रसंगों का भी उल्लेख है। रासो ग्रन्थों में संघर्ष का कारण प्रायः प्रेम दिखाया गया है। इन रचनाओं में इतिहास और कल्पना का मिश्रण है। रासो वीरगीत (बीसलदेवरासो और आल्हा आदि) और प्रबंधकाव्य (पृथ्वीराजरासो, खुमानरासो आदि) — इन दो रूपों में लिखे गये। इन रासो ग्रन्थों में से अनेक की उपलब्ध प्रतियाँ चाहे ऐतिहासिक दृष्टि से संदिग्ध हों पर इन वीरगाथाओं की मौखिक परंपरा अंसदिग्ध है। इनमें शौर्य और प्रेम की ओजस्वी और सरस अभिव्यक्ति हुई है।

इसी कालावधि में मैथिल कोकिल विद्यापति हुए जिनकी पदावली में मानवीय सौंदर्य और प्रेम की अनुपम व्यंजना मिलती है। कीर्तिलता और कीर्तिपताका इनके दो अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। अमीर खुसरो का भी यही समय है।

इन्होंने ठेठ खड़ी बोली में अनेक पहेलियाँ, मुकरियाँ और दो सखुन रचे हैं। इनके गीतों, दोहों की भाषा ब्रजभाषा है। आदिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ। अक्तूबर 02, 2009 आज हम आदिकालीन कवियों की प्रमुख कृतियों का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं : 1. अब्दुर्रहमान : संदेश रासक 2. नरपति नाल्ह : बीसलदेव रासो (अपभ्रंश हिंदी) 3. चंदबरदायी : पृथ्वीराज रासो (डिंगल-पिंगल हिंदी) 4. दलपति विजय : खुमान रासो (राजस्थानी हिंदी) 5. जगनिक : परमाल रासो 6. शार्गधर : हम्मीर रासो 7. नल्ह सिंह : विजयपाल रासो 8. जल्ह कवि : बुद्धि रासो 9. माधवदास चारण : राम रासो 10. देल्हण : गद्य सुकुमाल रासो 11. श्रीधर : रणमल छंद , पीरीछत रायसा 12. जिनधर्मसूरि : स्थूलिभद्र रास 13. गुलाब कवि : करहिया कौ रायसो 14. शालिभद्रसूरि : भरतेश्वर बाहुअलिरास 15. जोइन्दु : परमात्म प्रकाश 16. केदार : जयचंद प्रकाश 17. मधुकर कवि : जसमयंक चंद्रिका 18. स्वयंभू : पउम चरिउ 19. योगसार : सानयधम्म दोहा 20. हरप्रसाद शास्त्री : बौद्धगान और दोहा 21. धनपाल : भवियत्त कहा 22. लक्ष्मीधर : प्राकृत पैंगलम 23. अमीर खुसरो : किस्सा चाहा दरवेश, खालिक बारी 24. विद्यापति : कीर्तिलता, कीर्तिपताका, विद्यापति पदावली (मैथिली)

भक्तिकाल (1343 से 1643 ई.):— तेरहवीं सदी तक धर्म के क्षेत्र में बड़ी अस्तव्यस्तता आ गई। जनता में सिद्धों और योगियों आदि द्वारा प्रचलित अंधविश्वास फैल रहे थे। शास्त्रज्ञानसंपन्न वर्ग में भी रूढ़ियों और आडंबर की प्रधानता हो चली थी। मायावाद के प्रभाव से लोकविमुखता और निष्क्रियता के भाव समाज में पनपने लगे थे। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन के रूप में ऐसा भारतव्यापी विशाल सांस्कृतिक आंदोलन उठा जिसने समाज में उत्कर्ष विधायक सामाजिक और वैयक्तिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की।

भक्ति आंदोलन का आरंभ दक्षिण के आलवार सन्तों द्वारा दसवीं सदी के लगभग हुआ। वहाँ शंकराचार्य के अद्वैतमत और मायावाद के विरोध में चार वैष्णव संप्रदाय खड़े हुए। इन



प्रभाकर त्रिपाठी
कमाण्डेन्ट-191 बटा. के.रि.पु.बल



चारों संप्रदायों ने उत्तर भारत में विष्णु के अवतारों का प्रचार प्रसार किया। इनमें से एक के प्रवर्तक रामानुजाचार्य थे, जिनकी शिष्य परंपरा में आने वाले रामानंद ने (पंद्रहवीं सदी) उत्तर भारत में रामभक्ति का प्रचार किया। रामानंद के राम ब्रह्म के स्थानापन्न थे जो राक्षसों का विनाश और अपनी लीला का विस्तार करने के लिए संसार में अवतीर्ण होते हैं। भक्ति के क्षेत्र में रामानंद ने ऊँचनीच का भेदभाव मिटाने पर विशेष बल दिया। राम के सगुण और निर्गुण दो रूपों को मानने वाले दो भक्तों — कबीर और तुलसी को इन्होंने प्रभावित किया। विष्णुस्वामी के शुद्धाद्वैत मत का आधार लेकर इसी समय वल्लभाचार्य ने अपना पुष्टिमार्ग चलाया। बारहवीं से सोलहवीं सदी तक पूरे देश में पुराणसम्मत कृष्णचरित्र के आधार पर कई संप्रदाय प्रतिष्ठित हुए, जिनमें सबसे ज्यादा प्रभावशाली वल्लभ का पुष्टिमार्ग था। उन्होंने शांकर मत के विरुद्ध ब्रह्म के सगुण रूप को ही वास्तविक कहा। उनके मत से यह संसार मिथ्या या माया का प्रसार नहीं है बल्कि ब्रह्म का ही प्रसार है, अतः सत्य है। उन्होंने कृष्ण को ब्रह्म का अवतार माना और उसकी प्राप्ति के लिए भक्त का पूर्ण आत्मसमर्पण आवश्यक बतलाया। भगवान् के अनुग्रह या पुष्टि के द्वारा ही भक्ति सुलभ हो सकती है। इस संप्रदाय में उपासना के लिए गोपीजनवल्लभ, लीलापुरुषोत्तम कृष्ण का मधुर रूप स्वीकृत हुआ। इस प्रकार उत्तर भारत में विष्णु के राम और कृष्ण अवतारों की प्रतिष्ठा हुई।

इस प्रकार इन विभिन्न मतों का आधार लेकर हिन्दी में निर्गुण और सगुण के नाम से भक्तिकाव्य की दो शाखाएँ साथ साथ चलीं। निर्गुणमत के दो उपविभाग हुए — ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी। पहले के प्रतिनिधि कबीर और दूसरे के जायसी हैं। सगुणमत भी दो उपधाराओं में प्रवाहित हुआ — रामभक्ति और कृष्णभक्ति। पहले के प्रतिनिधि तुलसी हैं और दूसरे के सूरदास।

ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीर पर तात्कालिक विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियों और दार्शनिक मतों का सम्मिलित प्रभाव है। उनकी रचनाओं में धर्मसुधारक और समाजसुधारक का रूप विशेष प्रखर है। उन्होंने आचरण की शुद्धता पर बल दिया। बाह्याडंबर, रूढ़ियों और अंधविश्वासों पर उन्होंने तीव्र कशाघात किया। मनुष्य की क्षमता का उद्घोष कर उन्होंने निम्नश्रेणी की जनता में आत्मगौरव का भाव जगाया। इस शाखा के अन्य कवि रैदास, दादू हैं।

प्रेमाश्रयी धारा के सर्वप्रमुख कवि जायसी हैं जिनका “पदमावत” अपनी मार्मिक प्रेमव्यंजना, कथारस और सहज कलाविन्यास के कारण विशेष प्रशंसित हुआ है। इनकी अन्य रचनाओं में “अखरावट” और “आखिरी कलाम” आदि हैं, जिनमें सूफी संप्रदायसंगत बातें हैं। इस धारा के अन्य कवि हैं कुतुबन, मंझन, उसमान, शेख नबी और नूर मुहम्मद आदि।

आज की दृष्टि से इस संपूर्ण भक्तिकाव्य का महत्व उसकी धार्मिकता से अधिक लोकजीवनगत मानवीय अनुभूतियों और भावों के कारण है। इसी विचार से भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

रीतिकाल (1643 से 1843 ई.):— 1700 ई. के आस पास हिन्दी कविता में एक नया मोड़ आया। इसे विशेषतः तात्कालिक दरबारी संस्कृति और संस्कृत साहित्य से उत्तेजना मिली। संस्कृत साहित्यशास्त्र के कतिपय अंशों ने उसे शास्त्रीय अनुशासन की ओर प्रवृत्त किया। हिन्दी में ‘रीति’ या ‘काव्यरीति’ शब्द का प्रयोग काव्यशास्त्र के लिए हुआ था। इसलिए काव्यशास्त्रबद्ध सामान्य सृजनप्रवृत्ति और रस, अलंकार आदि के निरूपक बहुसंख्यक लक्षणग्रन्थों को ध्यान में रखते हुए इस समय के काव्य को ‘रीतिकाव्य’ कहा गया। इस काव्य की शृंगारी प्रवृत्तियों की पुरानी परंपरा के स्पष्ट संकेत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी और हिन्दी के आदिकाव्य तथा कृष्णकाव्य की शृंगारी प्रवृत्तियों में मिलते हैं।

रीतिकाव्य रचना का आरंभ एक संस्कृतज्ञ ने किया। ये थे आचार्य केशवदास, जिनकी सर्वप्रसिद्ध रचनाएँ कविप्रिया, रसिकप्रिया और रामचंद्रिका हैं। केशव के कई दशक बाद चिन्तामणि से लेकर अठारहवीं सदी तक हिन्दी में रीतिकाव्य का अजस्र स्रोत प्रवाहित हुआ जिसमें नर-नारी-जीवन के रमणीय पक्षों और तत्संबंधी सरस संवेदनाओं की अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्ति व्यापक रूप में हुई।

रीतिकाल के कवि राजाओं और रईसों के आश्रय में रहते थे। वहाँ मनोरंजन और कलाविलास का वातावरण स्वाभाविक था। बौद्धिक आनंद का मुख्य साधन वहाँ उक्तिवैचित्र्य समझा जाता था। ऐसे वातावरण में लिखा गया साहित्य अधिकतर शृंगारमूलक और कलावैचित्र्य से युक्त था। पर इसी समय प्रेम के स्वच्छंद गायक भी हुए जिन्होंने प्रेम की गहराइयों का स्पर्श किया है। मात्रा और काव्यगुण दोनों ही दृष्टियों से इस समय का नर-नारी-प्रेम और सौंदर्य की मार्मिक व्यंजना करनेवाला काव्यसाहित्य महत्वपूर्ण है।

रीतिकाव्य मुख्यतः मांसल शृंगार का काव्य है। इसमें नर-नारीजीवन के स्मरणीय पक्षों का सुंदर उद्घाटन हुआ है। अधिक काव्य मुक्तक शैली में है, पर प्रबंधकाव्य भी हैं। इन दो सौ वर्षों में शृंगारकाव्य का अपूर्व उत्कर्ष हुआ। पर धीरे धीरे रीति की जकड़ बढ़ती गई और हिन्दी काव्य का भावक्षेत्र संकीर्ण होता गया। आधुनिक युग तक आते आते इन दोनों कमियों की ओर साहित्यकारों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ।

आधुनिक काल (1843 से अब तक):—यह आधुनिक युग का आरंभ काल है जब भारतीयों का यूरोपीय संस्कृति से संपर्क हुआ। भारत में अपनी जड़ें जमाने के काम में अंगरेजी शासन



ने भारतीय जीवन को विभिन्न स्तरों पर प्रभावित और आंदोलित किया। नई परिस्थितियों के धक्के से स्थितिशील जीवनविधि का ढाँचा टूटने लगा। एक नए युग की चेतना का आरंभ हुआ। संघर्ष और सामंजस्य के नए आयाम सामने आए।

नये युग के साहित्य सृजन की सर्वोच्च संभावनाएँ खड़ी बोली गद्य में निहित थीं, इसलिए इसे गद्य-युग भी कहा गया है। हिन्दी का प्राचीन गद्य राजस्थानी, मैथिली और ब्रजभाषा में मिलता है पर वह साहित्य का व्यापक माध्यम बनने में अशक्त था। खड़ीबोली की परंपरा प्राचीन है। अमीर खुसरो से लेकर मध्यकालीन भूषण तक के काव्य में इसके उदाहरण बिखरे पड़े हैं। खड़ी बोली गद्य के भी पुराने नमूने मिले हैं। इस तरह का बहुत सा गद्य फारसी और गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है। दक्षिण की मुसलमान रियासतों में “दक्खिनी” के नाम से इसका विकास हुआ। अठारहवीं सदी में लिखा गया रामप्रसाद निरंजनी और दौलतराम का गद्य उपलब्ध है। पर नयी युगचेतना के संवाहक रूप में हिन्दी के खड़ी बोली गद्य का व्यापक प्रसार उन्नीसवीं सदी से ही हुआ। कलकत्ते के फोर्ट विलियम कालेज में, नवागत अँगरेज अफसरों के उपयोग के लिए, लल्लू लाल तथा सदल मिश्र ने गद्य की पुस्तकें लिखकर हिन्दी के खड़ी बोली गद्य की पूर्वपरंपरा के विकास में कुछ सहायता दी। मुंशी सदासुखलाल और इंशा अल्ला खाँ की गद्य रचनाएँ इसी समय लिखी गई। आगे चलकर प्रेस, पत्रपत्रिकाओं, ईसाई धर्मप्रचारकों तथा नवीन शिक्षा संस्थाओं से हिन्दी गद्य के विकास में सहायता मिली। बंगाल, पंजाब, गुजरात आदि विभिन्न प्रान्तों के निवासियों ने भी इसकी उन्नति और प्रसार में योग दिया। हिन्दी का पहला समाचारपत्र “उदंत मार्तण्ड” 1826 ई. में कलकत्ते से प्रकाशित हुआ। राजा शिवप्रसाद और राजा लक्ष्मण सिंह हिन्दी गद्य के निर्माण और प्रसार में अपने अपने ढंग से सहायक हुए। आर्यसमाज और अन्य सांस्कृतिक आंदोलनों ने भी आधुनिक गद्य को आगे बढ़ाया।

गद्य साहित्य की विकासमान परंपरा उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से अग्रसर हुई। इसके प्रवर्तक आधुनिक युग के प्रवर्तक और पथ प्रदर्शक भारतेन्दु हरिश्चंद्र थे जिन्होंने साहित्य का समकालीन जीवन से घनिष्ठ संबंध स्थापित किया। यह संक्रांति और नवजागरण का युग था। अँगरेजों की कूटनीतिक चालों और आर्थिक शोषण से जनता संतुष्ट और क्षुब्ध थी। समाज का एक वर्ग पाश्चात्य संस्कारों से आक्रांत हो रहा था तो दूसरा वर्ग रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था। इसी समय नई शिक्षा का आरंभ हुआ और सामाजिक सुधार के आंदोलन चले। नवीन ज्ञान विज्ञान के प्रभाव से नवशिक्षितों में जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण विकसित हुआ जो अतीत की अपेक्षा वर्तमान और भविष्य की ओर विशेष उन्मुख था। सामाजिक विकास में उत्पन्न आस्था और जाग्रत समुदाय चेतना ने भारतीयों में जीवन के प्रति नया उत्साह उत्पन्न किया। भारतेन्दु

के समकालीन साहित्य में विशेषतः गद्यसाहित्य में तत्कालीन वैचारिक और भौतिक परिवेश की विभिन्न अवस्थाओं की स्पष्ट और जीवन्त अभिव्यक्ति हुई। इस युग की नवीन रचनाएँ देशभक्ति और समाज सुधार की भावना से परिपूर्ण हैं। अनेक नई परिस्थितियों की टकराहट से राजनीतिक और सामाजिक व्यंग की प्रवृत्ति भी उद्बुद्ध हुई। इस समय के गद्य में बोलचाल की सजीवता है। लेखकों के व्यक्तित्व से संपृक्त होने के कारण उसमें पर्याप्त रोचकता आ गई है। सबसे अधिक निबंध लिखे गए जो व्यक्तिप्रधान और विचारप्रधान तथा वर्णनात्मक भी थे। अनेक शैलियों में कथासाहित्य भी लिखा गया, अधिकतर शिक्षाप्रधान। पर यथार्थवादी दृष्टि और नए शिल्प की विशिष्टता श्रीनिवास दास के “परीक्षागुरु” में ही है। खड्गदेवकीनन्दन खत्री का तिलस्मी उपन्यास “चंद्रकांता” इसी समय प्रकाशित हुआ। पर्याप्त परिमाण में नाटकों और सामाजिक प्रहसनों की रचना हुई। भारतेन्दु, प्रतापनारायण मिश्र, श्रीनिवास दास, आदि प्रमुख नाटककार हैं। साथ ही भक्ति और शृंगार की बहुत सी सरस कविताएँ भी निर्मित हुई। पर जिन कविताओं में सामाजिक भावों की अभिव्यक्ति हुई वे ही नये युग की सृजनशीलता का आरंभिक आभास देती हैं। खड़ी बोली के छिटफुट प्रयोगों को छोड़ शेष कविताएँ ब्रजभाषा में लिखी गयीं। वास्तव में नया युग इस समय के गद्य में ही अधिक प्रतिफलित हो सका।

इस कालावधि की सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ दो हैं – एक तो सामान्य काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली की स्वीकृति और दूसरे हिन्दी गद्य का नियमन और परिमार्जन। इस कार्य में सर्वाधिक सशक्त योग सरस्वती संपादक महावीरप्रसाद द्विवेदी का था। द्विवेदी जी और उनके सहकर्मियों ने हिन्दी गद्य की अभिव्यक्तिकक्षमता को विकसित किया। निबंध के क्षेत्र में द्विवेदी जी के अतिरिक्त बालमुकुंद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, पूर्णसिंह, पद्मसिंह शर्मा जैसे एक से एक सावधान, सशक्त और जीवन्त गद्यशैलीकार सामने आए। उपन्यास अनेक लिखे गए पर उसकी यथार्थवादी परंपरा का उल्लेखनीय विकास न हो सका। यथार्थपरक आधुनिक कहानियाँ इसी काल में जनमी और विकासमान हुई। गुलेरी, कौशिक आदि के अतिरिक्त प्रेमचंद और प्रसाद की भी आरंभिक कहानियाँ इसी समय प्रकाश में आईं। नाटक का क्षेत्र अवश्य सूना सा रहा। इस समय के सबसे प्रभावशाली समीक्षक द्विवेदी जी थे जिनकी संशोधनवादी और मर्यादानिष्ठ आलोचना ने अनेक समकालीन साहित्य को पर्याप्त प्रभावित किया। मिश्रबंधु, कृष्णबिहारी मिश्र और पद्मसिंह शर्मा इस समय के अन्य समीक्षक हैं पर कुल मिलाकर इस समय की समीक्षा बाह्यपक्षप्रधान ही रही।

सुधारवादी आदर्शों से प्रेरित अयोध्यासिंह उपाध्याय ने अपने “प्रियप्रवास” में राधा का लोकसेविका रूप प्रस्तुत किया और खड़ीबोली के विभिन्न रूपों के प्रयोग में निपुणता भी प्रदर्शित की। मैथिलीशरण गुप्त ने “भारत भारती” में राष्ट्रीयता



और समाजसुधार का स्वर ऊँचा किया और “साकेत” में उर्मिला की प्रतिष्ठा की। इस समय के अन्य कवि द्विवेदी जी, श्रीधर पाठक, बालमुकुंद गुप्त, नाथूराम शर्मा ‘शंकर’, गया प्रसाद शुक्ल ‘सनेही’ आदि हैं। ब्रजभाषा काव्यपरंपरा के प्रतिनिधि रत्नाकर और सत्यनारायण कविरत्न हैं। इस समय खड़ी बोली काव्यभाषा के परिमार्जन और सामयिक परिवेश के अनुरूप रचना का कार्य संपन्न हुआ। नए काव्य का अधिकांश विचारपरक और वर्णनात्मक है।

सन् 1920-40 के दो दशकों में आधुनिक साहित्य के अंतर्गत वैचारिक और कलात्मक प्रवृत्तियों का अनेक रूप उत्कर्ष दिखाई पड़ा। सर्वाधिक लोकप्रियता उपन्यास और कहानी को मिली। कथासाहित्य में घटनावैचित्य की जगह जीते जागते स्मरणीय चरित्रों की सृष्टि हुई। निम्न और मध्यवर्गीय समाज के यथार्थपरक चित्र व्यापक रूप में प्रस्तुत किए गए। वर्णन की सजीव शैलियों का विकास हुआ। इस समय के सर्वप्रमुख कथाकार प्रेमचंद हैं। वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास भी उल्लेख्य हैं। हिन्दी नाटक इस समय जयशंकर प्रसाद के साथ सृजन के नवीन स्तर पर आरोहण करता है। उनके रोमांटिक ऐतिहासिक नाटक अपनी जीवंत चारित्र्यसृष्टि, नाटकीय संघर्षों की योजना और संवेदनीयता के कारण विशेष महत्व के अधिकारी हुए। कई अन्य नाटककार भी सक्रिय दिखाई पड़े। हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में रामचंद्र शुक्ल ने सूर, तुलसी और जायसी की सूक्ष्म भावस्थितियों और कलात्मक विशेषताओं का मार्मिक उद्घाटन किया और साहित्य के सामाजिक मूल्यों पर बल दिया। अन्य आलोचक हैं श्री नंददुलारे वाजपेयी, डा. नगेंद्र तथा डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी।

काव्य के क्षेत्र में यह छायावाद के विकास का युग है। पूर्ववर्ती काव्य वस्तुनिष्ठ था, छायावादी काव्य भावनिष्ठ है। इसमें व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों का प्राधान्य है। स्थूल वर्णन विवरण के स्थान पर छायावादी काव्य में व्यक्ति की स्वच्छंद भावनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति हुई। स्थूल तथ्य और वस्तु की अपेक्षा बिंबविधायक कल्पना छायावादियों को अधिक प्रिय है। उनकी सौंदर्यचेतना विशेष विकसित है। प्रकृतिसौंदर्य ने उन्हें विशेष आकृष्ट किया। वैयक्तिक संवेगों की प्रमुखता के कारण छायावादी काव्य मूलतः प्रगीतात्मक है। इस समय खड़ी बोली काव्यभाषा की अभिव्यक्ति क्षमता का अपूर्व विकास हुआ। जयशंकर प्रसाद, माखनलाल, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला”, महादेवी, नवीन और दिनकर छायावाद के उत्कृष्ट कवि हैं।

सन् 1940 के बाद छायावाद की संवेगनिष्ठ, सौंदर्यमूलक और कल्पनाप्रिय व्यक्तिवाद प्रवृत्तियों के विरोध में प्रगतिवाद का संघबद्ध आंदोलन चला जिसकी दृष्टि समाजबद्ध, यथार्थवादी और उपयोगितावादी है। सामाजिक वैषम्य और वर्गसंघर्ष का भाव इसमें विशेष मुखर हुआ। इसने साहित्य को

सामाजिक क्रांति के अस्त्र के रूप में ग्रहण किया। अपनी उपयोगितावादी दृष्टि की सीमाओं के कारण प्रगतिवादी साहित्य, विशेषतः कविता में कलात्मक उत्कर्ष की संभावनाएँ अधिक नहीं थीं, फिर भी उसने साहित्य के सामाजिक पक्ष पर बल देकर एक नई चेतना जाग्रत की।

प्रगतिवादी आंदोलन के आरंभ के कुछ ही बाद नए मनोविज्ञान या मनोविश्लेषणशास्त्र से प्रभावित एक और व्यक्तिवादी प्रवृत्ति साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय हुई थी जिसे सन् 1943 के बाद प्रयोगवाद नाम दिया गया। इसी का संशोधित रूप वर्तमानकालीन नई कविता और नई कहानियाँ हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि द्वितीय महायुद्ध और उसके उत्तरकालीन साहित्य में जीवन की विभीषिका, कुरूपता और असंगतियों के प्रति असंतोष तथा क्षोभ ने कुछ आगे पीछे दो प्रकार की प्रवृत्तियों को जन्म दिया। एक का नाम प्रगतिवाद है, जो मार्क्स के भौतिकवादी जीवनदर्शन से प्रेरणा लेकर चलाय दूसरा प्रयोगवाद है, जिसने परंपरागत आदर्शों और संस्थाओं के प्रति अपने असंतोष की तीव्र प्रतिक्रियाओं को साहित्य के नवीन रूपगत प्रयोगों के माध्यम से व्यक्त किया। इसपर नए मनोविज्ञान का गहरा प्रभाव पड़ा।

प्रगतिवाद से प्रभावित कथाकारों में यशपाल, उपेंद्रनाथ अशक, अमृतलाल नागर और नागार्जुन आदि विशिष्ट हैं। आलोचकों में रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, विजयदेव नारायण साही प्रमुख हैं। कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। निबन्ध विधा में इस दौर में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्या निवास मिश्र और कुबेरनाथ राय ने विशेष ख्याति अर्जित की।

नए मनोविज्ञान से प्रभावित प्रयोगों के लिए सचेष्ट कथाकारों में अज्ञेय प्रमुख हैं। मनोविज्ञान से गंभीर रूप में प्रभावित इलाचंद्र जोशी और जैनेंद्र हैं। इन लेखकों ने व्यक्तिमन के अवचेतन का उद्घाटन कर नया नैतिक बोध जगाने का प्रयत्न किया। जैनेंद्र और अज्ञेय ने कथा के परंपरागत ढाँचे को तोड़कर शैलीशिल्प संबंधी नए प्रयोग किए। परवर्ती लेखकों और कवियों में वैयक्तिक प्रतिक्रियाएँ अधिक प्रखर हुईं। समकालीन परिवेश से वे पूर्णतः संसक्त हैं। उन्होंने समाज और साहित्य की मान्यताओं पर गहरा प्रश्नचिह्न लगा दिया है। व्यक्तिजीवन की लाचारी, कुंठा, आक्रोश आदि व्यक्त करने के साथ ही वे वैयक्तिक स्तर पर नए जीवनमूल्यों के अन्वेषण में लगे हुए हैं। उनकी रचनाओं में एक ओर सार्वभौम संत्रास और विभीषिका की छटपटाहट है तो दूसरी ओर व्यक्ति के अस्तित्व की अनिवार्यता और जीवन की संभावनाओं को रेखांकित करने का उपक्रम भी। हमारा समकालीन साहित्य आत्यंतिक व्यक्तिवाद से ग्रस्त है और यह उसकी सीमा है। पर उसका सबसे बड़ा बल उसकी जीवनमयता है जिसमें भविष्य की सशक्त संभावनाएँ निहित हैं।

चिकनगुनिया

जागरूकता से संभव है बीमारी की रोकथाम

पिछले कुछ सालों में डेंगू और चिकनगुनिया की दहशत बहुत बढ़ गई है। दोनों ही बीमारियों के एक जैसे लक्षण होने की वजह से अक्सर बीमारी की सही पहचान करना मुश्किल हो जाता है। बुखार और कमजोरी सबसे आम लक्षण हैं। हम ज्यादातर बुखार को मामूली सर्दी का लक्षण समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। यही वजह है कि यह बीमारी अक्सर गंभीर रूप ले लेती है। बारिश के मौसम में सिर्फ डेंगू ही नहीं बल्कि चिकनगुनिया भी आम हो गया है। हर साल चिकनगुनिया से पीड़ित लोगों की संख्या में बढ़त देखने को मिलती है। यह बहुत चिंता का विषय है और सही रोकथाम के लिए सावधानी बरतना समय की जरूरत बन गयी है। चिकनगुनिया के रोकथाम के लिए बहुत आवश्यक है कि हम इस बीमारी के बारे में सही जानकारी रखें। सही जानकारी हमें सही सावधानी और बीमारी की रोकथाम में मदद करेगा।

चिकनगुनिया क्या है ?

चिकनगुनिया एक वायरल बीमारी है, जो मच्छर के काटने से फैलती है। एडीज मच्छर के काटने से चिकनगुनिया का वायरस इंसान को बीमार कर देता है। चिकनगुनिया के लक्षण डेंगू से बहुत मिलते जुलते हैं। इसलिए इन दोनों बीमारियों में पहचान करना अक्सर मुश्किल हो जाता है। पिछले कुछ सालों में चिकनगुनिया के मामले बहुत बढ़ गए हैं। चिकनगुनिया के लिए कोई भी वैक्सीन या इलाज अभी नहीं है इसलिए जरूरी है सही सावधानी रखना। वैसे तो चिकनगुनिया जानलेवा नहीं होती है पर पीड़ित इंसान तेज बुखार, बहुत दर्द और कमजोरी से गुजरता है। यह बीमारी सेहत पर लम्बे समय तक असर डाल सकती है।

चिकनगुनिया के लक्षण

चिकनगुनिया के लक्षण आमतौर से संक्रमित मच्छर के काटने के 2-12 दिनों के भीतर दिखते हैं। चिकनगुनिया का मच्छर ज्यादातर दिन के दौरान काटता है। यह मच्छर जमा

हुए साफ पानी में प्रजनन करते हैं और चिकनगुनिया का खतरनाक वायरस फैलाने का कार्य करता है। चिकनगुनिया के लक्षण नीचे दिए गए हैं :-



डॉ. अनिल कुमार
मुख्य चिकित्सा अधिकारी



- तेज बुखार होना। शरीर संक्रमण से लड़ने के प्रयास में अपना तापमान बढ़ाता है। यही वजह है चिकनगुनिया में तेज बुखार होने का पैर, हाथ और कलाई में हल्के सूजन के साथ गंभीर दर्द होना।
- गंभीर पीठ दर्द
- सिरदर्द
- थकान के साथ मांसपेशी में दर्द
- त्वचा पर लाल रंग के चकते का होना जो आमतौर से 48 घंटों में दिखाई पड़ते हैं
- गले में खराश होना
- आंखों में दर्द और कंजेक्टिवाइटिस होना
- कई महीनों और वर्षों तक शरीर में दर्द रह सकता है।



चिकनगुनिया का इलाज

चिकनगुनिया का कोई इलाज अभी नहीं उपलब्ध है, इसलिए इस वायरस से लड़ने के लिए सही ख्याल और डॉक्टर की सलाह जरूरी है। चिकनगुनिया से लड़ने के लिए जरूरी हैं कुछ बातों का ख्याल रखना :-

- मरीज को डिहाइड्रेशन से बचाएं। दिनभर पानी, जूस पिलाते रहना आवश्यक है।
- समय पर दवाईयां लेना।
- चिकनगुनिया में बहुत कमजोरी भी हो जाती है, इसलिए जरूरी तत्वों से भरपूर भोजन करें।
- बुखार को नजरअंदाज न करें और डॉक्टर को समय पर दिखाएं।
- अच्छे से आराम करना शरीर को सेहतमंद बनाने में मदद करता है।
- बीमारी अगर गम्भीर रूप लें तो डॉक्टर के कहने पर अस्पताल में भरती हो जाएं।

चिकनगुनिया से बचाव

बीमारी से बचाव करना समझदारी है। चिकनगुनिया मच्छर के काटने से होती है। इसलिए आवश्यक है कुछ ऐसे उपाय अपनाना जो इस बीमारी को फैलने से रोके। ऐसे ही कुछ उपाय नीचे दिए गए हैं :-

- चिकनगुनिया का मच्छर जमा हुए पानी में पनपता है।
- इसलिए यह आवश्यक है कि पानी को एक जगह जमा न होने दें।
- कूलर के पानी को सप्ताह में कम से कम एक बार बदलें।
- गमले, बर्तन और घर के चारों तरफ पानी जमा न होने दें।
- मच्छरों को मारने वाले स्प्रे का प्रयोग करें।
- युकलिप्टस के तेल का मच्छरों के रोकथाम के लिए इस्तेमाल करें।
- बाहर निकलते समय स्वयं और बच्चों को पूरे शरीर ढकने वाले कपड़े पहनाएं।
- खिड़की और दरवाजों में जाली लगवाएं।
- सफाई बनाएं रखें।
- बुखार होने पर डॉक्टर से मिले और सही जाँच करवाएं।
- सही जानकारी से हम चिकनगुनिया जैसे खतरनाक बीमारियों से लड़ सकते हैं और उसके सही रोकथाम के लिए कार्य कर सकते हैं।

कुछ घरेलू उपाय

- अदरक की चाय और ग्रीन टी काफी लाभदायक होती हैं।
- बर्फ का पैक सूजन और दर्द में आराम पहुंचाता है।
- गिलोय का जूस बुखार से लड़ने में मदद करता है।
- पपीते का जूस ब्लड प्लेटलेट बढ़ने में लाभकारी सिद्ध हुआ है।
- तुलसी के पत्ते चाय या पानी में उबाल कर पीएं। तुलसी इम्युनिटी बढ़ने और भूकर को काम करने में मदद करती है।

सहायक कमाण्डेन्ट राजभाषा की कलम से

हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है, जिस पर हमें गर्व होना चाहिए। कोई देश अपनी राष्ट्र भाषा के माध्यम से ही विकास कर सकता है। इसका उदाहरण हम चीन, रूस, जापान से ले सकते हैं। इन देशों ने अपनी मातृभाषा को अपनाकर ही प्रगति की है। लेकिन हम अपनी मातृभाषा को त्याग कर विदेशी भाषा को अंगीकार कर रहे हैं। इससे सही मायनों में देश का विकास नहीं हो सकता है।

वर्तमान में हमारे प्रधानमंत्री जी गैर हिंदी भाषी क्षेत्र से आते हैं, लेकिन वे भी हिंदी की अद्भूत संप्रेषण क्षमता से प्रभावित हैं। भोपाल में आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में उन्होंने कहा था कि हिंदी की वजह से वे अधिक से अधिक लोगों तक अपनी बात पहुंचाने में सफल रहे। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के हिंदी प्रेम से हम सभी वाकिफ हैं। उनकी कविताओं में देशप्रेम और देश की मिट्टी की सुगंध साफ महसूस की जा सकती है। मशहूर शायर अल्लामा इकबाल ने हिंदी को हिन्दुस्तान का प्रतीक बताते हुए यहां तक कहा कि **‘हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तां हमारा।’**

बोलने के लिहाज से अगर देखें तो दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी भाषा होने के बावजूद हिंदी अभी संयुक्त राष्ट्र में भाषा के तौर पर शामिल नहीं हो पाई है। हिंदी के पास भाषिक क्षमता इतनी ज्यादा है कि वह आसानी से विश्वभाषा बन सकती है। मंडारिन, अंग्रेजी के बाद हिंदी दुनिया की तीसरी भाषा है। दुनिया के कुछ ताकतवर देशों ने अपनी प्रचार तोपें यह सिद्ध करने में लगा रखी हैं कि अंग्रेजी न केवल विश्व की श्रेष्ठतम भाषा है बल्कि सबसे बड़ी भाषा भी है। अंग्रेजी सिर्फ अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और आधे कनाडा में बोली जाती है। उसे दुनिया की सबसे बड़ी भाषा नहीं माना जा सकता है। इन देशों में भी सभी लोग अंग्रेजी नहीं बोलते। खुद अंग्रेजी के कई इलाके हैं जहां अंग्रेजी बोली नहीं जाती, अगर बोली भी जाती है तो यह संख्या काफी कम है। ब्रिटेन के वेल्स,

स्काटिश और आयरिश भाषाओं का अंग्रेजी से काफी संघर्ष रहा है और इन भाषाओं ने लंबे संघर्ष के बाद अपना अस्तित्व कायम किया है।

संख्या के लिहाज से देखा जाए तो दुनिया भर में जितने लोग अंग्रेजी बोलते हैं उससे कहीं ज्यादा करीब 70 करोड़ लोग अकेले भारत में हिंदी बोलते हैं। लगभग पूरा पाकिस्तान हिंदी समझता एवं बोलता है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी हजारों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। यही नहीं, फिजी, गुयाना, सुरिनाम, त्रिनिदाद जैसे देश तो हिंदी भाषियों के ही बसाए हुए हैं। एक तरह से देखें तो हिंदी समाज की जनसंख्या लगभग एक अरब का आंकड़ा छूती है। हिंदी केवल अंग्रेजी से ही नहीं चीन की मंडारिन से भी आगे है। चीन की मंडारिन भाषा समूचे चीन में नहीं बोली जाती। जो भाषा बीजिंग में बोली जाती है, वह शंघाई में बोली जाने वाली भाषा से अलग है। चीन में स्थान विशेष की भाषा अलग-अलग है।

भाषा, व्याकरण, साहित्य, कला, संगीत के साथ-साथ अभिव्यक्ति के सभी माध्यमों में हिंदी ने अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता एवं वर्चस्व कायम किया है। हिंदी की यह स्थिति हिंदी भाषियों और हिंदी समाज की देन है। शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा में होना चाहिए क्योंकि शिक्षा विचार करना सिखाती है और मौलिक विचार उसी भाषा में हो सकता है जिस भाषा में आदमी सांस लेता है, जीता है। जिस भाषा में आदमी जीता नहीं उसमें मौलिक विचार नहीं आ सकते। हिंदी किसी भाषा से कमजोर नहीं और न ही हीन है। जरूरत है आत्मविश्वास की। लोग अपनी भाषा में आत्मविश्वास के साथ अपनी बात जोरदार तरीके से अगर रखें तो सामने वाले की मजबूरी होगी कि वह उसकी बात ध्यान से सुने।



मुहम्मद इकबाल खां
सहायक कमाण्डेंट (राजभाषा)



सहजयोग

शान्ति एवं आनन्द की खोज में मानव सत्य से दूर होता चला जा रहा है। दैनिक जीवन की परेशानियाँ उसके निरन्तर असन्तोष तथा तनाव का कारण बन रही हैं। जिसका समाधान वह सांसारिक धन सम्पदा एवं भौतिक वस्तुओं में खोजता है परन्तु निराश होकर वह धर्म की ओर भागता है। परन्तु आजकल धर्म के नाम पर प्रत्येक गली-मोहल्ले में गुरु पैदा हो गए हैं, जहाँ पाखण्ड के अलावा कुछ नहीं। ऐसे में सीदे-सादे मनुष्य की समझ में नहीं आता है कि वह किसके पास जाए या क्या करें।

मनुष्य अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कस्तूरी ग्रहण मृण की तरह बाहर धूमता रहता है और अन्त में उसे कुछ प्राप्त नहीं होता है। समस्याओं का समाधान केवल एक प्रकार से हो सकता है और वह है —“आत्मासाक्षात्कार प्राप्ति”।

सहज (सह+ज) योग का अर्थ है **मनुष्य के जन्म के साथ जन्मी हुई शक्ति (कुण्डलिनी-शक्ति) के साथ योग** (यानि जोड़ या जुड़ाव) अर्थात् साधक का परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापक शक्ति से संबंध स्थापित होना। अधिकतर लोग जानते हैं कि परमात्मा का निवास हमारे अन्दर है, परन्तु बहुत कम लोगों ने इसका अनुभव किया है। अर्थात् छोटे से बीज की तरह यह हमारे अन्दर निहित है। जिसे कुण्डलिनी शक्ति कहते हैं, जोकि “सर्वव्यापी आदि शक्ति” और उनके प्रेम की दिव्य शक्ति हैं। यही आत्मा की दिव्य जागृति, आत्मसाक्षात्कार तथा आध्यमिक पुनर्जन्म हैं जिसका वचन सभी धर्म ग्रन्थों में दिया गया है और यही **सहजयोग** है। परमात्मा ने जन्म से पूर्व ही हमारे अन्दर हमारे उत्थान-जागृति (कुण्डलिनी) की व्यवस्था की है, इसलिए मनुष्य की जागृति हेतु बाहर से कुछ नहीं लाया जाता है।

मानव शरीर नाड़ी तंत्र

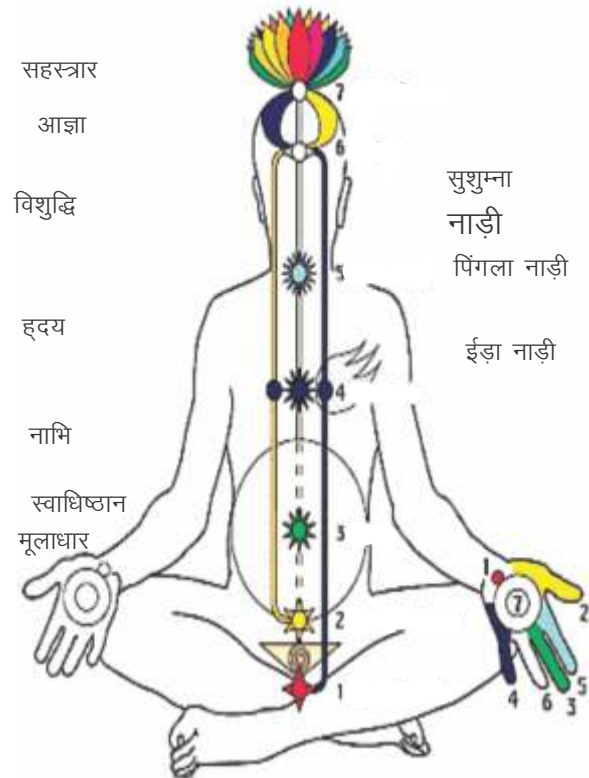
कुण्डलिनी शक्ति हमारी रीढ़ की हड्डी के निचले भाग में त्रिकोणाकार अस्थि में साढ़े तीन कुण्डल मारे साँप की तरह सोयी हुई अवस्था में विराजमान है। यह एक अनमोल सम्पदा है। मानव शरीर की रचना सात चक्रों व तीन नाड़ियों के संयोग से हुई है जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है। प्रत्येक चक्र के अपने विशिष्ट गुण व शक्तियाँ हैं।

जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है कि मानव शरीर की बाँई ओर का मार्ग ईड़ा नाड़ी कहलाता है। यह दायीं ओर मस्तिष्क के पिछले हिस्से से

जुड़ा हुआ है। बायां मार्ग हमारे बायें अनुकम्पी नाड़ी तंत्र (लैफ्ट सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम) की देखभाल करता है। यह मार्ग हमारे भावनात्मक तथा बीते हुए जीवन की देखभाल करता है हमारे भूतकाल की घटनाओं का रिकार्ड इस नाड़ी में होता है।



उपयुक्त प्रणाली



मनुष्य के तमोगुण की अभिव्यक्ति इसी नाड़ी से होती है। अवचेतन मन इसी मार्ग द्वारा सूचना प्राप्त करता है।

दायें मार्ग को **पिंगला नाड़ी** कहते हैं। यह बायीं ओर मस्तिष्क के आगे के हिस्से से जुड़ी हुई है। यह मार्ग दायें



अनुकम्पी नाड़ी तंत्र (दायें सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम) के लिए कार्य करता हैं। दायें भाग में अतिचेतन मन हैं जो हमारे भविष्य की रचना करता हैं। भविष्य के विषय में जो भी हम सोचते हैं वह दायीं ओर अभिलिखित(रिकार्ड) हो जाता है। मनुष्य के रजोगुण का निवास इसी नाड़ी में होता है।

मध्य का मार्ग **सुशुम्ना नाड़ी** कहलाती हैं। जिसमें मनुष्य के सतोगुण का निवास होता हैं। इस नाड़ी में मनुष्य वर्तमान की स्थिति रहता हैं। अर्थात: जो अभी वर्तमान में हो रहा हैं वह सुशुम्ना नाड़ी में घटित होता हैं इसी नाड़ी से कुण्डलिनी शक्ति मानव शरीर में स्थित सात चक्रों (प्लैक्सस) का भेदन करते हुए हमारे चारों फैली हुई परमेश्वरी शक्ति से योग घटित करती हैं।

चित्र में दर्शाया गया **पहला चक्र** मूलाधार चक्र कहलाता है। त्रिकोणाकार अस्थि के नीचे स्थित यह चक्र चिकित्सा विज्ञान की भाषा में (पेल्विक प्लैक्सस) कहलाता है, जोकि हमारी यौन-गतिविधियों सहित मलोत्सर्जन की देखभाल करता है। यह चक्र हमारी अबोधिता व पवित्रता को शक्ति प्रदान करता हैं।

द्वितीय चक्र स्वाधिष्ठान चक्र हैं, जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में (एरोटिक प्लैक्सस) कहते हैं। यह चक्र हमें रचनात्मक शक्ति, विचारशीलता तथा भविष्यवादी बनने की शक्ति प्रदान करता है। चर्बी के कोशाणुओं को मस्तिष्क के कोशाणुओं में परिवर्तित कर यह चक्र मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता हैं।

तृतीय चक्र नाभि चक्र कहलाता हैं, जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में (कोलिक प्लैक्सस) कहते हैं। नाभि चक्र से हमें सन्तोष व शान्ति की प्राप्ति होती हैं तथा मानव धर्म का ज्ञान भी हमें नाभि चक्र से ही प्राप्त होता हैं। यह चक्र किसी भी चीज़ को अपने अन्दर बनाए रखने की शक्ति हमें देता हैं।

चौथा चक्र अनहद अर्थात हृदय चक्र कहलाता हैं, जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में (कार्डिएक प्लैक्सस) कहते हैं। यह चक्र बारह वर्ष की आयु तक रोग-प्रतिकारक (एन्टीबाइजीज) उत्पन्न करता हैं। यह चक्र से हमें मानव जाति से निस्वार्थ प्रेम करने की शक्ति प्रदान करता हैं और हमें भयमुक्त होना सिखाता हैं।

पाँचवा चक्र विशुद्धि चक्र के नाम से जाना जाता हैं, जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में (कार्विकल प्लैक्सस) कहते हैं। मनुष्य की गर्दन में इसका स्थान है। जो कान, नाक, गला, गर्दन, जिह्वा तथा दांतों आदि की देखभाल करता हैं। इस चक्र से हमें साक्षी भाव प्राप्त होता हैं और यह ज्ञान प्राप्त होता हैं कि इस संसार में जो कुछ घटित हो रहा हैं वह परमात्मा की

इच्छा से घटित हो रहा हैं और हम केवल माध्यम मात्र हैं।

छठा चक्र आज्ञा चक्र कहलाता हैं, जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में (ऑप्टिक प्लैक्सस) कहते हैं। यह चक्र वहां स्थित हैं जहाँ पर मस्तिष्क में दोनो दृक्-तंत्रिकाएं (ईड़ा व पिंगला नाड़ी) एक-दूसरे को पार करती हैं। यह चक्र हमें अंकार से मुक्त कर दूसरों की कठोरता व दुर्व्यवहार, के लिए हमें उन्हें क्षमा करने की शक्ति प्रदान करता हैं। इस चक्र की शक्ति से हम दूसरों का क्षमा करना सिख जाते हैं। इस चक्र पर ईसा-मसीहा का स्थान होता हैं। जो क्षमा की प्रतिमूर्ति कहलाते हैं।

सातवां अंतिम चक्र सहस्रार चक्र कहलाता है, जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में (लिम्बिक प्लैक्सस) कहते हैं, जोकि आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति का स्थान है। जहाँ पर हमारी कुण्डलिनी शक्ति सुशुम्ना नाड़ी के रास्ते छह चक्रों का भेदन करते हुए हमारे चारों ओर विद्यमान परमेश्वरी शक्ति से योग घटित करती है और हमे निर्विचार समाधि प्रदान करती है इस समाधि के दौरान हमें हमारे चारों ओर घटित होने वाली घटनाओं का तो ज्ञान होता हैं परन्तु हम आत्मानंद की स्थिति में होते हैं। जहाँ पर हमें परमानंद की प्राप्ति होती हैं।

आम जीवन में हम सभी हमेशा विचारों में रहते हैं और विचार भी केवल दो प्रकार के ही होते हैं:- एक भूतकाल के और दूसरे भविष्य की योजनाएं। इस प्रकार हम हमेशा हमारी ईड़ा नाड़ी (भूतकाल) व पिंगला नाड़ी (भविष्य) में ही विचरण करते रहते हैं। जो हमारी समस्त समस्याओं की मूलजड़ हैं।

सहजयोग में साक्षात्कार के पश्चात् व्यक्ति की विचारधारा बदल जाती हैं उसके जीना का तरीका बदल जाता हैं उसके अन्दर धैर्य का भाव आने लगता हैं तथा शान्त और सन्तोष से परिपूर्ण हो जाता हैं क्योंकि वह साक्षी भाव में जीना सीख जाता हैं और उसे समझ में आ जाता हैं कि व्यर्थ की भाग-दौड़ से कुछ लाभ नहीं। जो कुछ भी जीवन में होता हैं उसमें परमात्मा की इच्छा होती हैं और उसमें हमारा कल्याण छुपा होता हैं। और वह अपने जीवन की घटनाओं को स्वीकारते हुए भूत-भविष्य से निकलकर वर्तमान में जीना सीख जाता हैं।

सहजयोग में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने कुछ माह लगातार ध्यान-धारणा करने से धुम्रपान, शराब तथा नशीली दवाओं के सेवन की आदतें त्याग दी हैं और बहुत से लोगो के असाध्य रोग जैसे:- अस्थमा, शुगर, कैंसर, मनोरोग, स्त्रीरोग इत्यादि कुछ दिन की ध्यान-धारणा से ठीक हो गए हैं। सहजयोग में **मुझे स्वयं अपनी अस्थमा व डिप्रेशन की लम्बी बिमारी से मुक्ति प्राप्त हुई हैं। जोकि एक चमत्कार हैं।**

राजभाषा पुरस्कार ग्रहणाधिकार

हिंदी सेवी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्याम कुमार अपनी शादी की 25वीं वर्षगाँठ के अवसर पर खुशी-खुशी कार्यालय से एक दिन की छुट्टी लेकर परिवार के साथ 'दिलवालों की दिल्ली' के चाँदनी चौक में चटपटी चाट का मजा ले रहे थे, कि तभी अचानक मोबाईल की घन्टी ने उनके आनंद में व्यवधान उत्पन्न कर दिया। श्याम कुमारजी को स्थानांतरण पर दिल्ली आए आठ महीने हो गए थे और उन्हें दिल्ली में परिवार के साथ घूमने का यह पहला मौका मिला था, इसलिए वह स्वयं व परिवारजन मौज-मस्ती के मूड में थे। मोबाईल में अपने पिछले कार्यालय के एक साथी का काल देखकर श्याम कुमार ने यह सोचते हुए फोन काट दिया कि पिछली तैनाती के कार्यालय के किसी भी साथी को कोई बहुत जरूरी काम तो होने से रहा, तो चाट का मजा लेने के बाद थोड़ी देर में तसल्ली से बात कर लेंगे।

अभी श्याम बाबू ने मोबाईल जेब में रखा ही था कि फिर से घन्टी बजने लगी। जिस पर बच्चों ने भी नसीहत दे दी कि फोन देख लीजिए, शायद आपसे कोई जरूरी काम हो। बेचारे श्याम बाबू ने भारी मन से चटपटी चाट का दोना डस्टबिन में डालते हुए फोन उठाया ही था कि दूसरी तरफ से उनके मित्र की आवाज आई, अरे साहब फोन तो उठा लीजिए, एक तो हमको फँसा के चले गए हैं और फिर फोन भी नहीं उठाते हैं। खैर श्याम बाबू कुछ बोल पाते, दूसरी तरफ से महाशय ने बताया, राजभाषा विभाग के कोई अधिकारी महोदय निरीक्षण के लिए कार्यालय में आए हैं तथा पूछ रहे हैं कि इस कार्यालय में धारा 3(3) के दस्तावेज सिर्फ हिंदी में ही क्यों जारी किए गए हैं। इन दस्तावेजों को तो अनिवार्य रूप से हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करना अनिवार्य है। साहब, ये कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन का मामला है, तो आप ही जवाब दें। श्याम कुमारजी का तो माथा ही घूम गया कि कार्यालय में कोई काम अंग्रेजी में नहीं हुआ, तो इसके लिए भी उन्हें ही जवाब देना होगा क्या? वहाँ कार्यालय की सभी शाखाओं के अनुभाग प्रभारी हैं, वे इसका जवाब दें। खैर, मौके की नजाकत को समझते हुए उन्होंने अपने साथी को समझाया कि कार्यालय में हिंदी अनुवादक की मुख्य जिम्मेवारी सरकारी कामकाज हिंदी

में कराने तक सीमित है, यदि दस्तावेज अंग्रेजी में जारी नहीं हुआ, तो इसका मैं क्या जवाब दे सकता हूँ। यह तो संबंधित सहायक, अनुभाग प्रभारी, हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारी और कार्यालय अध्यक्ष की जिम्मेवारी है, कि धारा 3(3) के तहत जो दस्तावेज जारी हों, वो द्विभाषी हों। हाँ, हिंदी अनुवादक धारा 3(3) में वर्णित किसी भी दस्तावेज को सिर्फ अंग्रेजी में जारी होने से रोक सकता है, और उसे हिंदी में भी तैयार करके मद के अनुपालन हेतु उपलब्ध करा सकता है।

खैर, दूसरी तरफ से साथी इस तथ्य को न तो समझ सकते थे और न ही निरीक्षण के लिए आए अधिकारियों को समझाने की स्थिति में थे, हाँलाकि उन्हें भी कार्यालयीन कामकाज का 30 वर्षों का अनुभव तो था, पर वे राजभाषा संवर्ग से नहीं आते थे, अतः उनके मतानुसार व सरकारी कार्यालयों की प्रथा के अनुसार उन्हें इसकी जानकारी होनी आवश्यक नहीं थी और संभवतः उन्हें इससे संबंधित कोई जानकारी थी भी नहीं। इसलिए श्याम कुमारजी ने अनुरोध किया कि आप कृपया निरीक्षण अधिकारी से ही बात करवा दीजिए। आपस में परिचय व दुआ-सलाम के बाद श्याम कुमारजी ने पूछा, महोदय मामला क्या है, कृपया मुझे बताएं। जिस पर निरीक्षण अधिकारी ने बताया कि क्या आप ही वर्ष 2016-17 में इस कार्यालय में हिंदी अनुभाग में पदस्थ थे। वाह भाई, आपने यहाँ सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की सुनिश्चिती तो बहुत अच्छे से की है। आपने विभिन्न विषयों पर आदेशों के हिंदी प्रारूप सभी अनुभागों को उपलब्ध कराते हुए सही व प्रामाणिक रिपोर्ट रिटर्न प्रस्तुत की है और तकरीबन कार्यालय के सभी अनुभागों में हिंदी का कामकाज उत्कृष्ट है, आपने हिंदी अनुभाग की पंजिकाओं का रखरखाव भी अच्छे से किया है और इतने संवेदनशील ईलाके में भी समय पर तिमाही बैठकों का आयोजन कर रिपोर्ट-रिटर्न भी आनलाईन समय से भेजी है। जिसके फलस्वरूप कार्यालय को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय ने राजभाषा पुरस्कार हेतु अन्तिम रूप से चयनित किया है,



सूबेदार मेजर/राजभाषा
सुधीर कुमार
ग्रुप केन्द्र, नई-दिल्ली



जिसके संबंध में हम कार्यालय के निरीक्षण के लिए आए हुए हैं। आप एक बात बताएं, सिर्फ एक मद में इस कार्यालय का मामला अटक रहा है कि धारा 3(3) के दस्तावेज सिर्फ हिंदी में ही जारी क्यों किए गए हैं, इन्हें तो राजभाषा अधिनियम के अनुसार द्विभाषी में जारी करना अनिवार्य है। जिस पर श्याम कुमारजी ने निरीक्षण अधिकारी को उनके कार्य की सराहना के लिए धन्यवाद देते हुए अपना पक्ष रखते हुए बताया कि महोदय हिंदी अनुवादक के नाते यह मेरा कर्तव्य है कि कार्यालय में कोई भी दस्तावेज सिर्फ अंग्रेजी में जारी न हो, और मैंने इसका पूर्ण रूप से पालन सुनिश्चित करवाया है। वैसे महोदय, ये आदेश सिर्फ और सिर्फ हमारे विभाग के आंतरिक वितरण के लिए ही हैं, तो संबंधित सहायक ने इसे सिर्फ राजभाषा हिंदी में जारी कर दिया है, जिसे राजभाषा कार्यान्वयन का अननुपालन नहीं माना जाना चाहिए। निरीक्षण अधिकारी इससे थोड़ा नाराज होते हुए बोले कि जानते हैं, हम इस आधार पर आपके कार्यालय को पुरस्कार की श्रेणी से बाहर कर सकते हैं।

बेचारे श्याम कुमारजी थोड़े परेशान हो गए, क्योंकि इस कार्यालय में तैनाती पर रिपोर्ट करते ही कार्यालय अध्यक्ष महोदय, जो अपने पहले के कार्यालय में राजभाषा पुरस्कार ग्रहण कर उन गरिमामयी पलों की साक्षी बन चुके थे, ने ताकीद की थी कि इस कार्यालय में पिछले कई वर्षों से यह पद रिक्त था, लेकिन अब आप तैनात हो गए हैं, तो इस साल राजभाषा कार्यान्वयन का पुरस्कार हमारे कार्यालय को मिलना ही चाहिए, और कार्यालय अध्यक्ष महोदय की इन बातों से प्रोत्साहित होकर श्याम कुमारजी ने भी साल भर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सतत प्रयास भी किए थे।

खैर, निरीक्षण सम्पन्न हो गया और बात आई-गई हो गई। इस घटना के तकरीबन एक माह के बाद 4 फरवरी को श्याम कुमारजी के कार्यालय पहुँचते ही उसी साथी का फोन आया, बोले, साहब मुझे मुबारकबाद दो, कार्यालय को राजभाषा पुरस्कार मिला है और 9 फरवरी को वाराणसी में सम्मेलन है। इसके साथ ही उन्होंने पूछा कि साहब, ये हिंदी की तिमाही रिटर्न, जो आनलाईन भेजी जानी होती है, उसे कैसे भेजना है। श्याम बाबू भी आश्चर्य चकित थे कि, चूँकि उनके पिछले कार्यालय में पिछले कई वर्षों से हिंदी अनुवादक का पद रिक्त रहने के उपरांत उनका स्थानांतरण होने पर तथा कार्यालय अध्यक्ष महोदय द्वारा राजभाषा शील्ड अर्जित करने की चुनौती मिलने पर उन्होंने स्वयं कार्यालय का पंजीकरण करवाकर पिछले कई वर्षों की रिपोर्ट आन लाईन प्रस्तुत की थी तथा अपनी एक वर्ष की तैनाती के दौरान ही सभी मदों पर नियमित रूप से कार्य करते हुए समय पर सभी रिपोर्ट रिटर्न भेजी थी तथा स्थानांतरण के समय उनकी जगह

कोई दूसरे हिंदी अनुवादक की तैनाती नहीं होने पर, वे अपनी चार्ज रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लिखित करके आए थे, कि हर तिमाही में किस प्रकार से कार्रवाई की जानी है तथा लागिन आई0डी0 और पासवर्ड सहायक की डायरी, चार्ज रिपोर्ट व संबंधित फाईल में ही सबसे ऊपर लिखकर आए थे, ताकि किसी को कोई परेशानी न हो। किन्तु यह क्या, इन्होंने तो पिछली तीन तिमाहियों में कुछ किया ही नहीं है। यह तो इन्हें सौंपे गए कार्य की अवहेलना ही मानी जानी चाहिए। खैर श्याम कुमार जी तो ठहरे, सीधे सादे व्यक्ति, अपने स्वभाव के अनुसार उन्होंने साथी की इस कमी को नजरअन्दाज करते हुए फिर से पूरी कार्यविधि को विस्तार से समझाया, जिसे उस साथी ने अपने मातहत किसी अन्य कार्मिक को बताया, और आगे की कार्रवाई के निदेश दिए। पता नहीं, वह रिपोर्ट आन लाईन राजभाषा विभाग को भेजी गई या नहीं, यह तो वही जानें या फिर उस कार्यालय में बाद में पदस्थ होनेवाला हिंदी अनुवादक।

खैर श्याम कुमारजी इस खुशी के साथ कि उनके प्रयत्नों को सफलता तो मिली, रास्ता ही देखते रहे कि उनके वर्तमान कार्यालय को यह सूचना आएगी, कि उनके हिंदी कार्यान्वयन कार्य के फलस्वरूप कार्यालय को राजभाषा शील्ड मिली है तथा नियमानुसार पिछले कार्यालय अध्यक्ष के साथ उन्हें भी प्रमाण पत्र लेने के लिए वाराणसी जाना होगा। लेकिन यह क्या 7 तारीख तक न तो कोई सूचना आई और उनके उस साथी का फोन भी नहीं लग रहा था। खैर, वो तो रास्ता ही देखते रहे और 9 फरवरी को उनके उसी साथी ने, जिसने उस अवधि में राजभाषा कार्यान्वयन का कोई कार्य नहीं किया था, राजभाषा पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल महोदय से न सिर्फ प्रमाण पत्र ग्रहण करने का सौभाग्य पा लिया, बल्कि राज्यपाल महोदय के ही करकमलों से शील्ड प्राप्ति का गौरव भी हासिल कर लिया और अपने फेस बुक पर फोटो अपलोड कर वाहवाही लूट ली। और तो और श्याम बाबू के ही हिंदी संवर्ग के साथी, उन्हें उनकी इस झूठी उपलब्धि पर शुभ कामनाएं देकर उनका गौरव गान करने लगे। और बेचारे श्याम बाबू अभी भी इसी सदमे में हैं कि अपने 13 वर्षों के हिंदी पथ पर उन्होंने हर कार्यालय में रहते हुए राजभाषा हिंदी की सेवा के साथ-साथ अन्य अनुभागों के सौंपे गए सभी कार्यों को सफलता से पूर्ण करते हुए चार बार राजभाषा शील्ड अर्जित कराई, मगर क्या कारण रहे कि सिर्फ एक बार ही उन्हें उनके कार्य का सही सम्मान मिल सका और शेष तीन बार किन्ही और साथियों या अधिकारियों ने इस सम्मान से उन्हें दूर रखा।

जय हिंद, जय हिंदी, जय भारत—भारती।

देवनागरी लिपि

प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है, जिसमें उस भाषा को लिखा जाता है। उदाहरण के तौर पर अंग्रेजी को रोमन, उर्दू को फ़ारसी तथा पंजाबी को गुरुमुखी लिपि में लिखा जाता है ठीक उसी प्रकार हिंदी की लिपि देवनागरी है। भारत की प्राचीन लिपियों में सिंधु घाटी की लिपि, खरोष्ठी लिपि व ब्राह्मी लिपि प्रसिद्ध है। देवनागरी लिपि का अविष्कार ब्राह्मी लिपि से हुआ है।

देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जयभट्ट के एक शिलालेख में पाया गया है। देव भाषा संस्कृत में इसका प्रयोग होने से इसे “देव” तथा इसका अविष्कार गुजरात में होने से इसे वहां के नागर ब्राह्मणों के नाम से “नागरी” शब्द मिलाकर इसे “देवनागरी लिपि” कहा गया। यह भारत के अलावा नेपाल में भी प्रचलित है।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

देवनागरी लिपि में वर्णों की अधिकतम होने के कारण इसको आलोचना का सामना करना पड़ता रहता है परंतु वास्तविकता यह है कि इसमें वर्णमाला का वर्गीकरण अत्यन्त ही वैज्ञानिक है, जैसे:-

1. इसके वर्ण सभी ध्वनियों को प्रस्तुत करने की योग्यता रखते हैं।
2. इसकी वर्णमाला का पहले स्वर फिर व्यंजन में वर्गीकृत किया गया है।
3. स्वरों के वर्गीकरण में एक स्वर वर्ण के पश्चात एक दीर्घ वर्ण निश्चित है जैसे-अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि।
4. व्यंजनों का वर्गीकरण कण्ठ्य (क, ख, ग), तालव्य (च, छ, ज), मूर्धन्य (ट, ठ, ड), ओष्ठ्य (प, फ, ब), अन्तःस्थ (य, र, ल), उश्म (श, ष, स), संयुक्त व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ) व दिगुण व्यंजनों (ड, ढ) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ऐसी विशेषता किसी अन्य लिपि में नहीं पाई जाती है।
5. इस लिपि में कुल स्वर-11, अनुस्वार-1, विसर्ग-1, व्यंजन-39 सहित कुल वर्णों की संख्या 52 है।
6. यह एक अक्षरात्मक लिपि है। यह विशेषता भी अन्य लिपियों में नहीं पाई जाती है।
7. अक्षरात्मक लिपि में मात्रा का प्रयोग वर्ण के उपर-नीचे, दाएं-बाएं कही भी हो सकता है, परंतु उच्चारण पहले वर्ण का होगा फिर मात्राएं उच्चारित की जाती है।
8. अक्षरात्मक लिपि अक्षर प्रयोग के कारण कम जगह घेरती है जबकि वर्णात्मक लिपि में वर्णों के पहले प्रयोग के कारण समय तथा स्थान दोनों की अधिक आवश्यकता होती है, जैसे- कृष्णा, फ़ोट आदि।

9. देवनागरी लिपि में सभी ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता है, जैसे- ण, न के लिए छ और द, ड के लिए व आदि।

10. देवनागरी लिपि में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक वर्ण निश्चित है।

11. देवनागरी लिपि में प्रत्येक

वर्ण के लिए एक ही निश्चित उच्चारण है जबकि रोमन लिपि में एक ही वर्ण अलग-अलग शब्दों के साथ अलग-अलग उच्चारण देता है। जैसे- कैच में ‘क’ का उच्चारण देती है जबकि सैल में ‘स’ का उच्चारण देती है।

12. देवनागरी लिपि में मूकवर्ण की समस्या नहीं है। रोमन लिपि में शब्द लिखे कुछ और जाते हैं और उच्चारित कुछ और होते हैं जैसे- नॉलेज, नाईफ, वॉल्क, कॉल्फ आदि।

अर्थात् देवनागरी लिपि में वर्णअंकन ध्वनि के अनुसार ही होता है। इसमें “जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है तथा जैसा लिखा जाता है उसे वैसा ही पढ़ा जाता है।”

देवनागरी लिपि की श्रेष्ठता:-

देवनागरी लिपि विश्व की अन्य लिपियों की तुलना में श्रेष्ठ है क्योंकि किसी भी लिपि के आदर्श होने के लिए निम्नलिखित शर्तें पूरा करना आवश्यक होता है:-

1. वह दुनिया की किसी भी भाषा को अंतरित करने की क्षमता रखती है।
2. प्रत्येक ध्वनि के लिए स्वतंत्र वर्ण प्रतीक हों।
3. किसी भी वर्ण प्रतीक से एक से अधिक ध्वनि उच्चारित न हो।
4. शब्दों को लेकर लिपि अर्थभेद न हों।
5. इस लिपि में भ्रमण्डल की लिपि होने की अर्हता हो।

उपरोक्त मानदंडों को देवनागरी लिपि पूर्ण रूप से पालन करती है जिस कारण यह सिद्ध होता है कि देवनागरी लिपि विश्व की एक सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक लिपि है। हम भारतवासियों को अपनी इस ऐतिहासिक विरासत पर गर्व महसूस करन चाहिए क्योंकि:-

“भारत माँ की प्यारी है ये, भारत की पहचान है।
जो हिंदी का मान करता, भारत की संतान है।”



निरीक्षक / हिन्दी अनुवादक
रमेश कुमार पाण्डेय
हिंदी अनुभाग, महानिदेशालय

श्रावणी मेला -वैद्यनाथ धाम: एक अनूठी धार्मिक परम्परा

हमारा देश— “भारत” विविध संस्कृतियों का संगम स्थल है। यहाँ यह भी एक सर्वमान्य तथ्य है कि संस्कृतियों के पनपने में मेलों और विभिन्न पर्वों का विशेष योगदान है, यदि हम यह कहें कि तीज त्योहारों और मेलों आदि में ही सच्चे अर्थों में हमारे सांस्कृतिक विकास में मदद दी है और उसे हर पल जीवन्त बनाये रखा है तो उसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। एक ऐसा ही पर्व है— श्रावणी मेला। पर्व जितना पुरातन माना जाएगा, उसकी आधार गाथाएं भी उतनी प्राचीन होंगीं। जनस्रुति व लोक मान्यता के अनुसार वैद्यनाथ मंदिर देवघर “द्वादश ज्योर्तिलिंग” एक पुराण कालीन मंदिर है जो झारखण्ड में अतिप्रसिद्ध देवघर नामक स्थान पर अवस्थित है। पवित्र तीर्थ होने के कारण लोग इसे वैद्यनाथ धाम भी कहते हैं। जहाँ पर यह मंदिर अवस्थित है उसे “देवघर” अर्थात् देवताओं का घर कहते हैं। यह ज्योर्तिलिंग एक सिद्ध पीठ है। कहा जाता है कि यहां पर आने वालों की सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती है इस कारण इस लिंग को मनोकामना लिंग भी कहा जाता है।

इस लिंग की स्थापना का इतिहास यह है कि एक बार राक्षस राज रावण ने हिमालय पर जाकर शिव जी को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की और अपने सिर काट-काट कर शिवलिंग पर चढ़ाना शुरू कर दिए। एक-एक करके नौ सिर चढ़ाने के बाद दसवां सिर भी काटने को ही था कि शिव जी प्रसन्न होकर प्रकट हो गये। उन्होंने उसके दसों सिर ज्यों का त्यों कर दिए और उसे वरदान मांगने को कहा। रावण ने लंका में जाकर उस लिंग को स्थापित करने के लिए उसे ले जाने की आज्ञा मांगी। शिव जी ने अनुमति तो दे दी पर इस चेतावनी के साथ दी की यदि मार्ग में इसे पृथ्वी पर रख देगा तो वह वही अचल हो जायेगा, अन्तोगतवा वही हुआ।

रावण शिवलिंग लेकर चला, पर मार्ग में एक चिता भूमि आने पर उसे लघुशंका निवृत्ति की आवश्यकता हुई। रावण उस लिंग को एक अहिर को थमा लघुशंका निवृत्ति करने चला गया। इधर उस अहिर द्वारा लिंग को बहुत अधिक भारी अनुभव कर उसे भूमि पर रख दिया। फिर क्या था, लौटने पर रावण पूरी शक्ति लगा कर भी उसे उखाड़ न सका और निराश होकर लिंग पर अपना अंगुठा गड़ा कर लंका को चला गया। जनस्रुति व लोक मान्यता के अनुसार यह वही वैद्यनाथ ज्योर्तिलिंग मंदिर है।

वैद्यनाथ धाम की पवित्र यात्रा श्रावण मास “जुलाई-अगस्त” में शुरू होती है। शिव भक्त बिहार में सुलतानगंज से गंगा नदी से गंगा जल लेकर

105 किलो मीटर की दूरी पैदल तय कर देवघर में भगवान शिव को जल अर्पित करते हैं, इन भक्तों को “काँवरिया” कहा जाता है। हर श्रावण में लाखों भक्तों की भीड़ उपस्थित होती है जिसमें विभिन्न देशों से आये हुए श्रद्धालु भी होते हैं।

इस मेले को शान्ति पूर्ण एवं नियंत्रित रूप से सम्पन्न कराने हेतु स्थानिय प्रशासन के साथ-साथ 106 बटा० द्रुत कार्य बल की भी तैनाती की जाती है। जहाँ बल के सदस्यों द्वारा मेलों में आए हुए काँवरियों/श्रद्धालुओं को मंदिर में जलार्पण करवाने एवं दर्शन करवाने में सहायता की जाती है। मेले में आए श्रद्धालुओं में बुढ़े व लाचार लोगों को बल के सदस्यों द्वारा तत् समय सहायता प्रदान करते हुए मंदिर में दर्शन करवाए जाते हैं। कभी-कभी विशेष कर सोमवार के दिन अत्यधिक भीड़ होने के कारण इसे नियंत्रित करना एक चुनौती हो जाती है किन्तु बल के सदस्यों द्वारा भीड़ को काबू करने का प्रशिक्षण प्राप्त होने के कारण एवं अधिकारियों के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में मेलों को शान्तिपूर्ण ढंग से पूर्ण कराने में सफलता मिलती है। बल के महिला कार्मिकों के द्वारा भी मंदिर परिसर में विशेष कर पार्वती मंदिर प्रांगण में विधि व्यवस्था कायम करने में सहायता प्रदान करती हैं।



निरीक्षक / हिन्दी अनुवादक
सुशील कुमार
106 बटा० द्रुत कार्यबल



आधुनिक हिंदी गद्य का इतिहास

हिंदी साहित्य शुरू करने का श्रेय प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान लेखक गार्सा दतासी को दिया जा सकता है। हिंदी गद्य के अविभाज्य के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है। कुछ 10 वीं शताब्दी मांगते हैं कुछ 11 वीं शताब्दी, कुछ 13 शताब्दी। राजस्थानी एवं ब्रज भाषा में हमें गद्य के प्राचीनतम प्रयोग मिलते हैं। राजस्थानी गद्य की समय सीमा 11 वीं शताब्दी से 14 शताब्दी तथा ब्रज गद्य की सीमा 14 शताब्दी से 16 शताब्दी तक मानी जाती है। माना जाता है कि 10 वीं शताब्दी से 13 वीं शताब्दी के मध्य ही हिंदी गद्य की शुरुआत हुई थी। खड़ी बोली के प्रथम दर्शन अकबर के दरबारी कवि व्यंग द्वारा रचित चंद छंद बरनन की महिमा में होते हैं। अध्ययन की दृष्टि से हिंदी गद्य साहित्य के विकास को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है। हिंदी गद्य के विकास को विभिन्न सोपानों में विभक्त किया जा सकता है—

19वीं सदी से पहले का हिंदी गद्य हिंदी गद्य के उद्भव को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान हिंदी गद्य की शुरुआत 19वीं सदी से ही मानते हैं जबकि कुछ अन्य हिंदी गद्य की परम्परा को 11वीं-12वीं सदी तक ले जाते हैं। आधुनिक काल से पूर्व हिंदी गद्य की निम्न परम्पराएं मिलती हैं—

- (1) राजस्थानी में हिंदी गद्य (2) ब्रजभाषा में हिंदी गद्य
- (3) दक्खिनी में हिंदी गद्य (4) गुरुमुखी लिपि में हिंदी गद्य

भारतेंदु पूर्व युगः— हिंदी में गद्य का विकास 19वीं शताब्दी के आसपास हुआ। इस विकास में कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस कॉलेज के दो विद्वानों लल्लूलाल जी तथा सदल मिश्र ने गिलक्राइस्ट के निर्देशन में क्रमशः प्रेमसागर तथा नासिकेतोपाख्यान नामक पुस्तकें तैयार कीं। इसी समय सदासुखलाल ने सुखसागर तथा मुंशी इंशा अल्ला खां ने 'रानी केतकी की कहानी' की रचना की इन सभी ग्रंथों की भाषा में उस समय प्रयोग में आनेवाली खड़ी बोली को स्थान मिला। ये सभी कृतियाँ सन् 1803 में रची गयी थीं।

आधुनिक खड़ी बोली के गद्य के विकास में विभिन्न धर्मों की परिचयात्मक पुस्तकों का खूब सहयोग रहा जिसमें ईसाई धर्म का भी योगदान रहा। बंगाल के राजा राम मोहन राय ने 1815 ईस्वी में वेदांत सूत्र का हिंदी अनुवाद प्रकाशित

करवाया। इसके बाद उन्होंने 1829 में बंगदूत नामक पत्र हिंदी में निकाला। इसके पहले ही 1826 में कानपुर के पं. जुगल किशोर ने हिंदी का पहला समाचार पत्र उदंतमार्तंड कलकत्ता से निकाला। इसी समय गुजराती भाषी आर्य समाज संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश हिंदी में लिखा।

भारतेंदु युगः— भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) को हिंदी-साहित्य के आधुनिक युग का प्रतिनिधि माना जाता है। उन्होंने कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन और हरिश्चंद्र पत्रिका निकाली। साथ ही अनेक नाटकों की रचना की। उनके प्रसिद्ध नाटक हैं— चंद्रावली, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी। ये नाटक रंगमंच पर भी बहुत लोकप्रिय हुए। इस काल में निबंध नाटक उपन्यास तथा कहानियों की रचना हुई। इस काल के लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधा चरण गोस्वामी, उपाध्याय बदरीनाथ चौधरी प्रेमघन, लाला श्रीनिवास दास, बाबू देवकी नंदन खत्री और किशोरी लाल गोस्वामी आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें से अधिकांश लेखक होने के साथ साथ पत्रकार भी थे।

श्रीनिवासदास के उपन्यास परीक्षागुरु को हिंदी का पहला उपन्यास कहा जाता है। कुछ विद्वान श्रद्धाराम फुल्लौरी के उपन्यास भाग्यवती को हिंदी का पहला उपन्यास मानते हैं। बाबू देवकीनंदन खत्री का चंद्रकांता तथा चंद्रकांता संतति आदि इस युग के प्रमुख उपन्यास हैं। ये उपन्यास इतने लोकप्रिय हुए कि इनको पढ़ने के लिये बहुत से अहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी। इस युग की कहानियों में शिवप्रसाद सितारे हिन्द की राजा भोज का सपना महत्वपूर्ण है।

बलदेव अग्रहरि की सन 1887 में प्रकाशित नाट्य पुस्तक 'सुलोचना सती' में सुलोचना की कथा के साथ आधुनिक कथा को भी स्थान दिया गया है, जिसमें संपादको और देश सुधारको पर व्यंग्य किया गया है। कई नाटकों में मुख्य कथानक ही यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हैं। बलदेव अग्रहरि की सुलोचना सती में भिन्नतुकांत छंद का आग्रह भी दिखाई देता है।



सुशील कुमार सिंह
स.उ.नि./प्रशासन 2, महानिदेशालय



द्विवेदी युगः— पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर ही इस युग का नाम द्विवेदी युग रखा गया। सन 1903 ईस्वी में द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका के संपादन का भार संभाला। उन्होंने खड़ी बोली गद्य के स्वरूप को स्थिर किया और पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों के एक बड़े समुदाय को खड़ी बोली में लिखने को प्रेरित किया। इस काल में निबंध, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं समालोचना का अच्छा विकास हुआ।

इस युग के निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, श्याम सुंदर दास, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाल मुकंद गुप्त और अध्यापक पूर्ण सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। इनके निबंध गंभीर, ललित एवं विचारात्मक हैं। किशोरीलाल गोस्वामी और बाबू गोपाल राम गहमरी के उपन्यासों में मनोरंजन और घटनाओं की रोचकता है।

हिंदी कहानी का वास्तविक विकास द्विवेदी युग से ही शुरू हुआ। किशोरी लाल गोस्वामी की इंदुमती कहानी को कुछ विद्वान हिंदी की पहली कहानी मानते हैं। अन्य कहानियों में बंग महिला की दुलाई वाली, शुक्ल जी की ग्यारह वर्ष का समय, प्रसाद जी की ग्राम और चंद्रधर शर्मा गुलेरी की उसने कहा था महत्वपूर्ण हैं। समालोचना के क्षेत्र में पद्मसिंह शर्मा उल्लेखनीय हैं। हरिऔध, शिवनंदन सहाय तथा राय देवीप्रसाद पूर्ण द्वारा कुछ नाटक लिखे गए। इस युग ने कई सम्पादकों जन्म दिया। पण्डित ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने आधा दर्जन से अधिक पत्रों का सम्पादन किया। शिव पूजन सहाय उनके योग्य शिष्यों में शुमार हुए। इस युग में हिन्दी आलोचना को एक दिशा मिली। इस युग ने हिन्दी के विकास की नींव रखी। यह कई मायनों में नई मान्यताओं की स्थापना करने वाला युग रहा।

रामचंद्र शुक्ल एवं प्रेमचंद युगः— गद्य के विकास में इस युग का विशेष महत्व है। पं रामचंद्र शुक्ल (1884–1941) ने निबंध, हिन्दी साहित्य के इतिहास और समालोचना के क्षेत्र में गंभीर लेखन किया। उन्होंने मनोविकारों पर हिंदी में पहली बार निबंध लेखन किया। साहित्य समीक्षा से संबंधित निबंधों की भी रचना की। उनके निबंधों में भाव और विचार अर्थात् बुद्धि और हृदय दोनों का समन्वय है। हिंदी शब्दसागर की भूमिका के रूप में लिखा गया उनका इतिहास आज भी अपनी सार्थकता बनाए हुए है। जायसी, तुलसीदास और सूरदास पर लिखी गयी उनकी आलोचनाओं ने भावी आलोचकों का मार्गदर्शन किया। इस काल के अन्य निबंधकारों में जैनेन्द्र कुमार जैन, सियारामशरण गुप्त, पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी और जयशंकर प्रसाद आदि उल्लेखनीय हैं।

कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद ने क्रांति ही कर डाली। अब कथा साहित्य केवल मनोरंजन, कौतूहल और नीति का विषय ही नहीं रहा बल्कि सीधे जीवन की समस्याओं से जुड़

गया। उन्होंने सेवा सदन, रंगभूमि, निर्मला, गबन एवं गोदान आदि उपन्यासों की रचना की। उनकी तीन सौ से अधिक कहानियां मानसरोवर के आठ भागों में तथा गुप्तधन के दो भागों में संग्रहित हैं। पूस की रात, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, नमक का दरोगा तथा ईदगाह आदि उनकी कहानियां खूब लोकप्रिय हुईं। इसकाल के अन्य कथाकारों में विश्वंभर शर्मा कौशिक, वृंदावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, उपेन्द्रनाथ अशक, जयशंकर प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का विशेष स्थान है। इनके चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसे ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास और कल्पना तथा भारतीय और पाश्चात्य नाट्य पद्धतियों का समन्वय हुआ है। लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीशचंद्र माथुर आदि इस काल के उल्लेखनीय नाटककार हैं।

अद्यतन कालः—इस काल में गद्य का चहुंमुखी विकास हुआ। पं हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, यशपाल, नंददुलारे वाजपेयी, डॉ० नगेन्द्र, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा डॉ० रामविलास शर्मा आदि ने विचारात्मक निबंधों की रचना की है। हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेर नाथ राय, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, विवेकी राय, ने ललित निबंधों की रचना की है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, रवीन्द्रनाथ त्यागी, तथा के पी सक्सेना, के व्यंग्य आज के जीवन की विद्रूपताओं के उद्घाटन में सफल हुए हैं। जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, इलाचंद्र जोशी, अमृतलाल नागर, रांगेय राघव और भगवती चरण वर्मा ने उल्लेखनीय उपन्यासों की रचना की। नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, अमृतराय, तथा राही मासूम रजा ने लोकप्रिय आंचलिक उपन्यास लिखे हैं। मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, भीष्म साहनी, भैरव प्रसाद गुप्त, आदि ने आधुनिक भाव बोध वाले अनेक उपन्यासों और कहानियों की रचना की है। अमरकांत, निर्मल वर्मा तथा ज्ञानरंजन आदि भी नए कथा साहित्य के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

प्रसादोत्तर नाटकों के क्षेत्र में लक्ष्मीनारायण लाल, लक्ष्मीकांत वर्मा, मोहन राकेश तथा कमलेश्वर के नाम उल्लेखनीय हैं। कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा बनारसीदास चतुर्वेदी आदि ने संस्मरण रेखाचित्र व जीवनी आदि की रचना की है। शुक्ल जी के बाद पं हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंद दुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र, रामविलास शर्मा तथा नामवर सिंह ने हिंदी समालोचना को समृद्ध किया। आज गद्य की अनेक नयी विधाओं जैसे यात्रा वृत्तांत, रिपोर्टाज, रेडियो रूपक, आलेख आदि में विपुल साहित्य की रचना हो रही है और गद्य की विधाएं एक दूसरे से मिल रही हैं।

जन-जन की पहचान - हिंदी हमारी

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से प्रत्येक प्राणी अपने विचारों को दूसरों पर अभिव्यक्त करता है। यह ऐसी दैवी शक्ति है, जो मनुष्य को मानवता प्रदान करती है और उसका सम्मान तथा यश बढ़ाती है। जिसे वाणी का वरदान प्राप्त होता है, वह बड़े से बड़े पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है और अक्षय कीर्ति का अधिकारी भी बन सकता है। किंतु, इस वाणी में स्खलन या विकृति आने पर मनुष्य निंदा और अपयश का भी भागी बनता है। यही नहीं अवांछनीय वाणी, उसके पतन का भी कारण बन सकती है।

किसी भी देश की भाषा उसकी पहचान होती है। यही कारण है कि पूरी दुनिया में एक भी ऐसा स्वतंत्र राष्ट्र नहीं है जिसने अपनी भाषा को छोड़कर विदेशी भाषा को बोलचाल या राजकाज की भाषा बनया हो। बहुत बार यह कहा जाता है कि आधुनिक प्रगति के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, लेकिन दुनिया के सामने फ्रांस, जर्मनी, जापान, इटली, रूस, चीन आदि देश आधुनिक प्रगति से परिपूर्ण ऐसे राष्ट्र हैं जिन्होंने अपनी राष्ट्र भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक और औद्योगिक उन्नति के नए प्रतिमान स्थापित करते हुए इस अवधारणा को मिथ्या सिद्ध कर दिया है।

वर्ष 1949 में स्वतंत्र भारत की राजभाषा के प्रश्न पर 14 सितंबर, 1949 को काफी विचार-विमर्श के बाद भारतीय संविधान के भाग 17 के अध्याय की धारा 343 (1) में बताया गया है कि राष्ट्र की राज भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। क्योंकि यह निर्णय 14 सितंबर को लिया गया था। इसी वजह से इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में घोषित कर दिया गया। प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर हम हिन्दी की तो खूब बातें करते हैं। लेकिन फिर अंग्रेजी ही हमारी भाषा बन जाती है। यह ना तो राष्ट्र के लिए और ना ही समाज के लिए शुभ संकेत है। हिंदी हमारी सिर्फ भाषा ही नहीं बल्कि संस्कार भी है। आज के बच्चे जब अंग्रेजी भाषा सीख रहे हैं तो उनका संस्कार भी अंग्रेजियत वाला हो रहा है।

भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम

हिंदी है इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिए। किसी भी देश की भाषा और संस्कृति किसी भी देश के लोगों को लोगों से जोड़े रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। देश में हिंदी भाषा की महत्ता को प्रदर्शित करने के लिए पूरे भारत में हिंदी दिवस मनाया जाता है। भारत में हिंदी भाषा का बड़ा इतिहास है जो इंडो-यूरोपियन भाषा परिवार के इंडो-आर्यन शाखा से संबद्ध रखता है। हिंदी भारत के अलावा मॉरीशस, पाकिस्तान, सुरीनाम, त्रिनिदाद और कुछ दूसरे देशों में भी बोली जाती है। हमें हमारी राजभाषा पर गर्व करना चाहिए और अन्य देशों में हिंदी बोलते समय कभी भी हिचकिचाहट महसूस नहीं करना चाहिए।



आज के दौर में हिंदी को युवाओं तक पहुंचाने में हिंदी समाचार पत्रों की वेबसाइट ने अहम भूमिका निभाई है। एक अध्ययन के मुताबिक हिंदी सामग्री की खपत करीब 94 फीसदी बढ़ी है। हर पांच में एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्स एप में आप कुछ एप्लीकेशंस और सॉफ्टवेयर की मदद से हिंदी में लिख सकते हैं। इसके लिए गूगल हिंदी इनपुट लिपिक डॉट इन, इजी टाइप हिंदी कीबोर्ड, यूनिनागरी जैसे अनेक सॉफ्टवेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद हैं। कुछ एप की मदद से आप हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद भी कर सकते हैं।

राष्ट्र भाषा हिंदी की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी भाषियों में विशेष रूप से उन लोगों में जो दायित्वपूर्ण पदों पर हैं, उनमें निःस्वार्थ सेवा का भाव प्रबल हो। साथ ही सरकारी स्तर भी हिंदी को पूरा सहयोग मिलना चाहिए। मूलरूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में किए जाने से ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तथा राजभाषा नीति का सही मायनों में कार्यान्वयन संभव होगा। सरकारी कार्यालयों में केवल हिंदी पखवाड़ा मनाने से काम नहीं चलेगा बल्कि हिंदी को दैनिक कामकाज और व्यवहार में प्रमुखता देनी होगी। हम सब मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाएं, जिसमें सब अपना अधिक से अधिक काम-काज हिंदी में करें तथा अपने सभी सहकर्मियों को भी इस दिशा में प्रेरित करें, तब जाकर हिंदी को सही मायनों में उसका उचित दर्जा हासिल होगा।

“नशा एक अभिशाप”

तम्बाकू तथा मादक द्रव्यों से निर्मित पदार्थों का सेवन हानिकारक नशे की श्रेणी में आता है। नशा मानव जीवन के लिए एक अभिशाप है। आज की नौजवान पीढ़ी नाना प्रकार के नशों में लीन होकर नशे की दासता स्वीकार कर रही है। यह नियति का ही खेल है कि नशे का प्रयोग केवल



मनुष्य प्राणी मात्र ही करता है। अन्य जीवों में नशे का प्राकृतिक तौर पर निषेध है। क्या आपने मनुष्य के अलावा कभी किसी जानवर को नशा करते देखा है? नहीं तो फिर क्यों आप इस जहर को अनेक प्रकार से ग्रहण करने के



लिए तत्पर रहते हैं। इस पर गम्भीरता से विचार कर तत्काल प्रभाव से नशे का परित्याग करने का संकल्प लें।

जीवन में यदि कुछ अंगीकार करना है तो अच्छाई के आदि बने, प्रेरणादायी कार्य करने के आदि बनें, परोपकार के आदि बने, प्रगति के आदि बने न कि नशे की बुरी आदतों के। इससे आपके स्वयं के जीवन में ही नहीं अन्य मनुष्यों के जीवन में भी खुशहाली एवं प्रगति आएगी।

सर्वप्रथम हम स्वयं प्रगति करेंगे, हमारा परिवार, समाज, गाँव, प्रदेश और देश के साथ-साथ समस्त संसार प्रगति करेगा और सभी सुखी और सम्पन्न होंगे।



इस प्रकार कहावत है कि, जब जागो तभी सवेरा, अर्थात् अभी भी देरी नहीं हुई है। आज ही संकल्प लें कि “आज अभी इसी क्षण से मैं सभी प्रकार के तम्बाकू तथा मादक द्रव्यों से निर्मित पदार्थों का सदैव के लिए परित्याग करता हूँ” और मानव जीव की समृद्धि के लिए अच्छाई को अंगीकार। केवल एक नशामुक्त व्यक्ति ही अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सर्वाधिक सेवा कर सकता है। यहां पर एक संत की वाणी प्रेरणास्वरूप प्रस्तुत है।

धर्म विचारो सज्जनों बनों धर्म के दास,
सच्चे मन से सभी जन त्यागो मदिरा मांस।



मानवता

मानव वही जिसमें मानवता है और जिसमें मानवता नहीं, वह मानव के भेष में दानव है। जब दूसरों के दुखों को देखकर हमारा हृदय द्रवित न हो, तब यह समझना चाहिए कि हमारे भीतर मानवता खत्म हो चुकी है। हम किसी के दुख को हर नहीं सकते, लेकिन अपनी मानवता दिखाते हुए सांत्वना के मात्र दो शब्द कहकर उसकी पीड़ा को कम करने की कोशिश जरूर कर सकते हैं। मीठे वचन औषधि के समान हैं, इसलिए हमारे दो अच्छे शब्द बोलने से पीड़ित व्यक्ति में अपने दुख से लड़ने का साहस आ जाता है। यदि मनुष्य दूसरों के प्रति मानवता व्यक्त नहीं करेगा तो इस धरती पर चारों ओर निराशा फैल जाएगी और तब मनुष्य एक क्षण के लिए भी यहां रुकना पसंद नहीं करेगा।

इसलिए मनुष्य को केवल अपने हित या स्वार्थ तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि प्रत्येक मनुष्य को दूसरों के साथ मानवता दिखानी चाहिए। छोटे चिंतन वाला मनुष्य दूसरों के साथ भेद करता है, जबकि उदार चरित्र वालों के लिए समस्त पृथ्वी उनका परिवार है। ऐसे मनुष्य केवल अपने बारे में नहीं, बल्कि सभी के कल्याण की कामना करते हैं। वे चाहते हैं कि सभी सुखी रहें। कोई कभी दुखी न हो और सभी के जीवन में शांति कायम रहे। यदि प्रत्येक मनुष्य उदार चरित्र का हो जाए तो इस संसार से दुखों का नामोनिशान मिट जाएगा। वेदों में कहा गया है कि मनुष्य को

ऐसा जीवन जीना चाहिए जिससे समाज में उपकार, दानशीलता और सृजनता की भावना पैदा हो। जिस तरह प्रकृति अपना सब कुछ दूसरों पर न्यौछावर कर देती है, उसी तरह मानव को भी यह मानना चाहिए कि उसका जन्म दूसरों के लिए ही हुआ है और उसे खुशी-खुशी अपना सर्वत्र दूसरों को समर्पित कर देना चाहिए।

जब हम दूसरों को सुख देते हैं, तो हम भीतर से आनंदित महसूस करते हैं। किसी की मदद करने पर मनुष्य को बदले में कुछ पाने की चाह कभी नहीं रखनी चाहिए। यह भी सच है कि जब हम दूसरों की मदद करते हैं तो उसका प्रतिफल हमें कभी न कभी किसी रूप में जरूर मिलता है और यदि हम दूसरों को कष्ट देंगे तो उसका पाप भी हमारे ऊपर चढ़ता है। दूसरों के प्रति मानवता प्रकट करके मनुष्य ईश्वर तुल्य हो जाता है।



नशे से तन-मन-धन का नाश

वर्तमान युग में मादक द्रव्यों के सेवन की प्रवृत्ति दिन-दौगुनी, रात-चौगुनी बढ़ रही हैं। शराब, गांजा, भांग, तम्बाकू, अफीम, चरस, स्मैक, कोकीन, ब्राउन शुगर आदि के सेवन की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही हैं। जिससे व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और आर्थिक क्षति हो रही है। इन सबके अलावा इससे उनके सामाजिक समस्याएं उभरकर सामने आ रही हैं। पारिवारिक विघटन हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार शराब के अतिरिक्त पूरी दुनिया में सात करोड़ से अधिक लोग अन्य प्रकार के नशे के शिकार हो रहे हैं। विशेषकर तम्बाकू के सेवन से कैंसर सदृश लाइलाज बीमारी हो रही है।

वर्तमान में किशोर और युवा पीढ़ी नशे की ओर अग्रसर है, जो कि चिंता का विषय है। इसमें कोई दो मत नहीं कि नशाखोरी का समाज और परिवार की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल असर पड़ता है। दरअसल, नशा नाश का द्वार है। नशाखोरी से अपराध और आये दिन सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं। यह एक शोध का विषय है कि नशे से कितने प्रतिशत अपराध होते हैं तथा शराब पीकर गाड़ी चलाने से कितने प्रतिशत दुर्घटनाएं हो रही हैं।

एक सर्वेक्षण के मुताबिक मनुष्य नशाखोरी, अवसाद, तनाव, शौकिया या तरन्नुम में आने के संगत का असर, मनोरंजन के लिए तथा धन का दुरुपयोग करने के लिए करता है। भांग और गांजा भ्रमित करने वाले नशीले पदार्थ हैं। कोकीन, चरस और अफीम उत्तेजना पैदा करने वाले पदार्थ हैं। हेरोइन और ब्राउन शुगर सुप्तावस्था में लाने वाले पदार्थ हैं। कुछ एलोपैथिक दवाओं के सेवन से भी नशे की लत पड़ जाती है। नशीले पदार्थ के सेवन से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शराब के सेवन से गुर्दे खराब हो जाते हैं। धूम्रपान से फेफड़े खराब हो जाते हैं तथा कैंसर भी हो सकता है। अफीम, चरस, हेरोइन, स्मैक के ज्यादा सेवन से पागलपन की संभावना बढ़ जाती है। नशीली आयुर्वेदिक और एलोपैथिक दवाओं के सेवन से शरीर पर उनके अनुषांगिक प्रभाव (साइड एफेक्ट) परिलक्षित होते हैं। नशे की लत पड़ जाना स्वयं में एक रोग है।

अफीम, चरस, कोकीन, स्मैक के सेवन से घबराहट, तनाव, चिड़चिड़ापन महसूस होता है। नशे से मांसपेशियों में खिंचाव, पेट और सिर में दर्द भी होता है। कभी-कभी तो रक्त

संचार में रुकावट या श्वसन प्रणाली में बाधा उत्पन्न होने से मौत तक हो जाती है। केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा अनेक नशामुक्ति केन्द्र चलाए जा रहे हैं, जिससे नशेड़ी व्यक्ति को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकें।

नशेड़ियों की औसत उम्र भी कम होती है, जबकि आयुर्वेद जो कि आयु का शास्त्र है, 'शतं वर्षाणि जीवेत' का लक्ष्य तय करता है। व्यक्ति का जीवन मूल्यवान है। उसे अपनी सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्ति के लिए 100 वर्ष जीना चाहिए। जीवन को नशे के नरक में डालने के बजाय स्वास्थ्य के स्वर्ग में जीना चाहिए।

नशे के रूप में समाज में सर्वाधिक शराब का उपयोग होता है। यह एक रासायनिक मादक पदार्थ है। इसे रासायनिक भाषा में 'इथाइल अल्कोहल' भी कहते हैं। विभिन्न अनाजों, फलों तथा अंगूर और महुआ के रसों से जो खमीर उठता है, उसी से विभिन्न प्रकार की शराब बनती है। शराब से पेट, लीवर, आंत, गुर्दा पर प्रतिकूल असर पड़ता है, जिससे कैंसर, टी.बी., हृदय रोग आदि होते हैं। ज्यादा शराब पीने से खून की उल्टियां भी होती हैं तथा अंततः मौत भी हो सकती है, जिससे शीघ्र जीवनलीला समाप्त हो जाती है। शराब ने जितना लोगो को डुबोया, उतना समुद्र ने भी नहीं डुबोया। शराब का मस्तिष्क पर भी बुरा असर पड़ता है। शुरु में अच्छा लगता है, मगर बाद में स्मरशक्ति कमजोर होने लगती है। शराब से ब्रेन हैमरेज भी हो सकता है। शराब पीकर वाहन चलाना तो सीधे मौत को आमंत्रित करना है। नशे में वाहन चालक समय और दूरी की पहचान नहीं कर पाता, जिसके कारण वाहन एवं चालक दुर्घटना का शिकार होते हैं। वाहन दुर्घटना से मृत्यु के अलावा अंग भंग भी हो सकता है।

महात्मा गांधी पूरे देश में मध निषेध चाहते थे। उनका मानना था कि मनुष्य नशे में होशोहवास खो बैठता है। योग, ध्यान और दृढ़ इच्छाशक्ति से नशाखोरी से मुक्ति पायी जा सकती है। वैसे ठीक ही कहा गया है कि सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों तथा सभी का कल्याण हों।



कविता

मंथन और प्रहार

मंथन करे हम कहाँ जा रहे हैं,
क्या लोकगीत की जगह डिस्को गा रहे हैं ।

अपने बुनियाद को छोड़ कर राह में,
नई बुलन्दियों को पाने की चाह में,

मरज का दवा पता नहीं,
हर नुस्खे को आजमा रहे हैं ।। मंथन.....
गिरकर, उठकर सवरने के लिए,
दक्षता है जरूरी उबरने के लिए,
अक्ष पर चलने में क्यों, डगमगा रहे हैं ।। मंथन.....

लौह पुरुष बनना जिन्हें था,
मोम का पुतला बनाकर,
शिखर चुमने की तमन्ना, क्यों बना रहे हैं ।। मंथन.....

लक्ष्य साधने के लिए, एकलव्य जैसी साधना,
सत्यवान वापसी के लिए, सावित्री सी अराधना,
दृढ़ निश्चय से क्यों, डिगते जा रहे हैं ।। मंथन.....

भूख-प्यास, नर्म-गर्म झेलना है जरूरी,
बर्फ-सर्द से हमेशा खेलना है मजबूरी,
वातानुकूलित जीवन की चाह में, तरस खा रहे हैं ।। मंथन.....

चक्रव्यूह भेदन के लिए, अर्जुन पुत्र बनना ही होगा,
ढाल, कृपाण, खड़ग-शस्त्र से रण में, अब खेलना ही होगा,
कठिन क्षण में संयम से क्यों न, योजना बना रहे हैं ।। मंथन.....

अपनी रण कौशल को भुलाकर,
खौलते रक्त को सुलाकर,
अपने अतीत में झाँक कर, क्यों न कदम बढ़ा रहे हैं ।। मंथन.....

सूचना, आसूचना, चाणक्य निति है कहाँ,
युद्ध कौशल, भूमि कौशल, रण कौशल जरूरत जहाँ,
भाग्य के भरोसे, बारुद पथ पर जा रहे हैं ।। मंथन.....



भूप किशोर शर्मा, द्वि.कमा.अधि
रेंज केरिपुबल गांधीनगर

यंत्र है, यांत्रिक नहीं, तंत्र है तांत्रिक नहीं,
रण है योद्धा नहीं, युद्ध है कौशल नहीं,
नित्य नये तकनीक की जाल में, उलझते जा रहे हैं ।। मंथन.....

योद्धा बनो विजयी बनो, करो काम अब मन का,
रक्त पिपासु बनकर लड़ो, बुझाओ प्यास तन का,
दुश्मन का रक्त पीकर क्यों न प्यास बुझा रहे हैं ।। मंथन.....

प्रखर, प्रचण्ड, प्रहार करो प्रलय की तरह,
प्रपंच रचो, शंखनाद करो, गोलो की गर्जन की तरह,
टूट पड़ो मर्दन करो, न वक्त दो गरल की तरह,
शक्तिशाली, भयकारी, जय काली हुँकार भरो,
दुश्मन पर अब टूट पड़ो अग्नि की वर्षा करो,
बढ़ चलो, आगे बढ़ो विजयपथ, करीब आ रहे हैं ।। मंथन.....

दुश्मन पर तब तक वार करो, मिटने तक प्रहार करो,
विजय तभी हासिल होगा, जब रण में वार, बार-बार करो,
तुम योद्धा हो तुम प्रशिक्षित हो, तुम वीर हो तुम दिक्षित हो,
जीत उसी की होती है, जो पहले मन से जीत गया,
आ रही लालिमा सुर्योदय की, अन्धेरा का क्षण बीत गया,
हम अभय, अजेय, अमर है यदि शहीद हो जाये,
इस तन से शायद अब, भारत माँ की कर्ज उतर ही जाये,
अपने तन मन को अर्पण कर, माँ की लाज बचायेंगे ।
भले ही ये तन मिट जायेगा, वसुधा के वीर कहलायेंगे ।।।
देश के वीरों की श्रेणी में नाम हमारा आयेगा ।
भले न कोई याद करे, इतिहास तो लिखा जायेगा ।।।।

भारत की आशा- हिंदी



एस0एन0 सुमन,
निरीक्षक (हिंदी अनुवादक)
महानिदेशालय, केरिपुबल, नई दिल्ली

हिंदी भारत की आशा है,
ये हिन्दुस्तान की भाषा है.....!

हिंदी जनमानस की बोली,
आपस में जोड़ें रखने की डोरी !

हिंदी बोलकर अनजानों से भी रिश्ता बना है,
हिन्दुस्तान ने राजभाषा के रूप में इसे चुना है!

ये 22 जुबानों को जोड़ता एक पुल है,
मेरी नज़र से देखो तो हिंदी रोशन हर ओर है !

हमें हिंदी बोलने में शर्म क्यों आती है,
यही तो हमें भाईचारे का रास्ता दिखाती है !

हिन्दुस्तान की जीवन रेखा है हिंदी,
एकता की मजबूत परिभाषा है हिंदी !

हिंदी भारत की आशा है,
ये हिन्दुस्तान की भाषा है.....!

आवाज दे



सहा. उप निरीक्षक/मंत्रा.
धीरज कुमार सिन्हा
106 बटा. द्रुतकार्य बल

उठ पड़ो हाथ लेकर मशाल ।
आवाज दे रहा महाकाल ।।

निद्रा छोड़ो, तंद्रा तोड़ो, बढ़ते मद-नद की गति मोड़ों ।
उच्छृंखलताओं के प्रवाह, समता से सन्मति से जोड़ो ।।
फोड़ो दुर्गति के घट कराल । आवाज दे रहा महाकाल ।।

तुम यज्ञवीर, तुम कर्मवीर, मत हो हताश, मत हो अधीर ।
महाबली, सिंह सुवन, रख दो कलुशों के वक्ष चीर ।।
क्यों जीते हो बनकर श्रृगाल? आवाज दे रहा महाकाल ।।

संस्कारहीन, संसारदीन, अपने में ही जो रहा लीन ।
स्वयं खोजना चाह रहा, सुख और शान्ति के पथनवीन ।।
प्रज्वलित करो चेतना ज्वाल । आवाज दे रहा महाकाल ।।

प्राणों में लेकर संकल्प शक्ति, मानवता के अचल भक्ति ।
चढ़ो ध्येय के शिखरों पर, इंद्रिय-सुख से लेकर विरक्ति ।
भेदों कुंठाओं के कपाल । आवाज दे रहा महाकाल ।।

भटकाव विश्व का न हो, दुःख का कोई भी ठौर न हो ।
दुश्चिंतन, दुराचार, सुविधाओं का शिर-मौर न हो ।।

बेधो छल-बल के विकट व्याल ।
आवाज दे रहा महाकाल ।।

हिंदी का इतिहास एवं महत्व

जन्म हुआ मानवता का हां यही तो वह स्थान है,
दी सीख जिन्होंने धर्म की हमको, तुलसी, कबीर संत महान हैं,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी देश की शान है ।



हव. / जीडी
धीरज कुमार मिश्रा
वित्त शाखा, महानिदेशालय,

बिहारी, केशव, भूषण जैसे कवियों ने हिंदी अपनाई
हिंदी का महत्व बहुत है, बात ये सब को समझाई,
यही है कारण कि इन सबकी विश्व में आज पहचान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी देश की शान है ।

है भाषा ये जनमानस की, जो हृदय से सबको जोड़ती है,
पढ़ा जाए इतिहास तो ये सभ्यता की ओर मोड़ती है,
हर हिंदुस्तानी के दिल में इसके लिए सम्मान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी देश की शान है ।

बात करें जो लिपि की तो बात ही इसकी निराली है
जैसा लिखते वैसा बोलें, पुराना नाम इसी का पाली है,
गौतम बुद्ध की रचना का भी इसी भाषा में जान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी देश की शान है ।

मुगल आए या आए गोरे सबको मार भगया था,
सम्पूर्ण भारत जब आपस में हिंदी से जुड़ पाया था,
तभी तो हिंदी भाषा में गाया जाता राष्ट्रगान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी देश की शान है ।

हिंदी में सीखा पढ़ना हमने, गाने भी हिंदी में गाते हैं,
फिर क्यों हिंदी अपनाने में व्यर्थ ही हम घबराते हैं,
सारे देश के संचार साधनों की यही तो एक जान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी देश की शान है ।

छोड़ के हिंदी अंग्रेजी बोले इसी बात की है निराशा,
सीखें अन्य भाषाएं पर, अपनाएं अपनी भाषा,
दुनिया में बतलाओ सबको हिंदी से हमारी शान है ।
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी देश की शान है ।

कावा ने मनाया 23वाँ स्थापना दिवस



के.रि.पु.बल परिवार कल्याण समिति (कावा) ने 10 जुलाई 2018 को के.रि.पु.बल संस्थान शौर्य वसंत कुंज, नई दिल्ली में अपना 23वाँ स्थापना दिवस मनाया। श्रीमती अरुणी डोभाल पत्नी श्री अजीत डोभाल, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रही। इस समारोह में श्रीमती कुसुम मिश्रा, श्रीमती मधु मिश्रा, श्रीमती पम्मी गौबा, श्रीमती मधुलिका रावत, श्रीमती गौरी अंबु, श्रीमती अनुराधा जैन, के.रि.पु.बल के पूर्व कावा अध्यक्षा एवं डॉ. मनु भटनागर, अध्यक्षा कावा ने उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढ़ायी।

डॉ. मनु भटनागर, अध्यक्षा कावा के मार्गदर्शन में इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक मनाया गया। अध्यक्षा कावा ने

कावा द्वारा के.रि.पु.बल के जवानों के परिवारों के कल्याण के लिए किए गए कार्य की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समारोह में दिव्यांग बच्चों को व्हील चेयर एवं लेपटॉप वितरित किया गया। सी.आर.पी.एफ. स्कूल रोहिणी एवं द्वारका के 10वीं एवं 12वीं कक्षा के टॉपर छात्रों का भी अभिवादन किया गया। इस समारोह में कई आकर्षक एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। के.रि.पु.बल के अधिकारियों एवं जवानों के बच्चों एवं महिलाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम "आयाम" प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त के.रि.पु.बल के महिला जवानों द्वारा महिलाओं की आत्मरक्षा के लिए निशस्त्र लड़ाई (यू.ए.सी.) की ड्रिल प्रदर्शित किया।



के०रि०पु० बल परिवार कल्याण संस्था ने केरल को भेजी राहत सामग्री

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, परिवार कल्याण संस्था ने केरल में बाढ़ में फंसे लोगों की मदद के लिए 20 टन राहत सामग्री एकत्र कर केरल के बाढ़ पीड़ितों के लिए भेजा। मानवीय स्तर पर सहयोग के तौर पर इसे हवाई व सड़क मार्ग से जल्द से जल्द केरल के लिए रवाना किया गया। के०रि०पु० बल परिवार कल्याण संस्था की अध्यक्षा डॉ० मनु भटनागर ने दिनांक 24/08/2018 को राहत सामग्री से भरे वाहन को झण्डी दिखाकर रवाना किया। राहत सामग्री के तहत खाद्य पदार्थ, चावल, दाल, मसाले, नमक, खाद्य तेल, दूध पाउडर सहित बिस्कुट व नुडल्स इत्यादि के पैकेट थे। स्वच्छ पीने की पानी का एक लीटर वाली 9000 बोतल के अलावा दवाईयां, टीशर्ट, चप्पल, साबुन, टूथ पेस्ट, टूथ ब्रश, सेनिटरी पैड, मच्छर भगाने वाली क्वायल एवं पॉलीथीन शीट इत्यादि भेजा गया। इस मौके पर के०रि०पु० बल परिवार कल्याण संस्था की अध्यक्षा डॉ० मनु भटनागर ने बताया कि के०रि०पु० बल परिवार कल्याण संस्था के०रि०पु० बल कर्मियों के परिवारों के लिए कार्य

करते हुए समाज के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। बल के प्रत्येक सदस्य बाढ़ से तबाह केरल के लोगों के साथ खड़े हैं। इस मौके पर स्मिता सिंधु, अंचल प्रमुख, परिवार कल्याण संस्था, जम्मू कश्मीर क्षेत्र, अनीता, अंचल उपाध्यक्ष, शिवानी चौहान, सेक्टर प्रमुख, जम्मू तथा नीतू, उप महानिरीक्षक एवं अन्य अधिकारी व कार्मिक मौजूद थे।



अब जवानों को मिलेगी आसानी से ई-टिकट

देश के सबसे बड़े अर्धसैनिक बल — के.रि.पु.बल ने 11 जुलाई 2018 को रेलवे के साथ एक सहमति पत्र (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर कर लिये हैं। जिसके तहत बल के जवानों और अधिकारियों को आसानी और तेजी से ई-टिकट बनाने में सफलता मिलेगी। इससे बल के 3 लाख से अधिक जवानों को एक बहुत बड़ी राहत मिलेगी। इस सहमति पत्र पर बल के महानिदेशक श्री राजीव राय भटनागर एवं श्री एम.पी. मल्ल, अध्यक्ष — सह-प्रबंधक महानिदेशक, आईआरसीटीसी के बीच के.रि.पु.बल मुख्यालय में हस्ताक्षर हुये।

श्री राजीव राय भटनागर ने इस अवसर पर कहा कि लम्बे समय से बल के जवानों को रेलवे आरक्षण में खासकर लम्बी दूरियों और अल्प समय अवधि में यात्रा के लिए काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। परन्तु अब इस नई ई-टिकटिंग प्रणाली से उनके लम्बे अरसे से लम्बित मांग पूरी होगी। सहमति पत्र पर चर्चा करते हुए

महानिदेशक ने कहा कि यह एक बहुत बड़ा कदम है जिससे न केवल बल को एक संगठन के रूप में यात्रा सम्बन्धी आवश्यकता पूरी होगी बल्कि बल के जवानों का भी बड़े स्तर पर कल्याण होगा। उन्होंने कहा कि इस ई-टिकटिंग समस्या से समस्त बल लाभान्वित होगा। इस अवसर पर श्री मल्ल ने कहा कि यह एक स्मरणीय अवसर है और इस ई-टिकटिंग प्रणाली से बल के जवानों को बहुत राहत मिलेगी।

इस नई ई-टिकटिंग प्रणाली से के.रि.पु.बल के जवानों के साथ-साथ बल के महानिदेशक ने के.रि.पु.बल एवं आई.आर.सी.टी.सी. द्वारा संयुक्त रूप से विकसित इस नयी प्रणाली में टिकट बनाया।

नई ई-टिकटिंग व्यवस्था से रेलवे वारंट जैसी पुरानी प्रणाली समाप्त हो जायेगी जोकि बहुत बोझिल थी। इससे न केवल खर्च में कमी आयेगी, बल्कि यह सरकार की ई-शासन प्रणाली के अनुरूप भी होगा।



के.रि.पु.बल और राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के बीच सहमति पत्र पर हस्ताक्षर

बल के अधिकारियों को प्रबंधकीय कौशल से लैश करने के लिए आई.आई.एम. रोहतक से सहमति पत्र(एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर करने के उपरान्त अब के.रि.पु.बल ने 31 जुलाई 2018 को राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के साथ एक अन्य सहमति पत्र (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किया। इस सहमति पत्र का लक्ष्य बल के प्रशिक्षु अधिकारियों को विधि के विभिन्न कार्यात्मक पहलुओं के संबंधित जानकारी दी जायेगी। के.रि.पु.बल देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को बनाये रखने में अग्रणीय बल है और इसे अक्सर कानूनी

मुद्दों के अंतर या भेद से गुजरना पड़ता है। इस सहमति पत्र से बल के अधिकारियों को कानूनी समस्याओं या अंतरभाव को दूर करने खासकर परिचालनिक गतिविधियों से संबंधित, में उचित जानकारी प्राप्त होगी। इस सहमति पत्र पर बल के महानिदेशक श्री राजीव राय भटनागर एवं राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के वाईस-चांसलर प्रोफेसर रणवीर सिंह के बीच हस्ताक्षर हुये।

के.रि.पु.बल मुख्यालय में इस समझौते पर हस्ताक्षर के उपरान्त, श्री भटनागर ने कहा कि विधि के महत्व के साथ-साथ विधि के उचित निर्वहन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पुलिस अधिकारियों को विधि के पैरामीटर के अधीन

कार्य करने के लिए बोलते हुए महानिदेशक ने आशा व्यक्त किया है कि इस भागीदारी से राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय बल के अधिकारियों को विधि क्षेत्र में अच्छी ग्राउन्ड प्रदान करेगा। इन 02 महीनों में दो सफलतम सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करने के उपरान्त, पहले आई.आई.एम. रोहतक



और अब राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, श्री भटनागर ने कहा कि इस प्रकार के भागीदारी से विभिन्न संस्थान से बल के अधिकारियों को व्यवसायिक क्षेत्र में जानकारी उपलब्ध होगी। श्री भटनागर ने सहमति पत्र को संबोधित करते हुए कहा कि

यह एक बड़ी शुरुआत है और विश्वास है कि यह आगे गेम-चेन्जर साबित होगी। दूसरी ओर, प्रोफेसर रणवीर सिंह ने कहा कि के.रि.पु.बल के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर एक अकादमीय उपलब्धि है।

शर्त एवं समझौते के अनुसार राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, नई दिल्ली विधि विषयों जिसमें सी.आर.पी.सी., आई.पी.सी. आई.ई.ए. के उपर एक मोड्यूल तैयार करेगी ताकि लैंगिक संवेदनशीलता और कमजोर तबके एवं अल्पसंख्यकों के हितों के संदर्भ में बल के अधिकारियों को विदित हो सके। यह कार्यक्रम से प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए 36 दिनों तक विधि विषयों के प्रमाण-पत्र प्रोग्राम (सर्टिफिकेट प्रोग्राम इन लॉ सबजेक्ट्स) के होगा।

संसदीय स्थायी समिति का दौरा

स्वास्थ्य एवं कल्याण के संसदीय स्थायी समिति ने 08-09 जुलाई, 2018 तक गुप केन्द्र, के.रि.पु.बल भोपाल का दौरा किया। डॉ. मनोज रजोरिया, सांसद, लोकसभा एवं समिति संयोजक, श्रीमती सम्पतिया उइके, सांसद, राज्यसभा और डॉ. के. कामराज, सांसद, लोकसभा एवं समिति के अन्य कर्मचारी प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे।

समिति ने गुप केन्द्र भोपाल के नवीनीकृत मनोरंजन क्लब का उद्घाटन किया। समिति संयोजक डॉ. मनोज

रजोरिया ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित किया। समिति ने भोजपुर मंदिर का भी दौरा किया। गुप केन्द्र, भोपाल ने स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत बल की गतिविधियों एवं पुरातात्विक स्थल के गोद लेने के बारे में समिति को अवगत कराया। समिति ने के.रि.पु.बल द्वारा स्वच्छता अभियान को पूरा करने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना भी की।



राजभाषा सम्मान

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के द्वारा गुप केन्द्र, केरिपुबल, श्रीनगर को वर्ष 2016-2017 हेतु "ग" क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार के लिए चयनित होने के फलस्वरूप दिनांक 09/02/2018 को 'डीजल रेल कारखाना, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह/सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक द्वारा श्री पुखराज

जयपाल, उप महानिरीक्षक, गुप केन्द्र, श्रीनगर को राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।



महानिदेशक के दौरे

श्रीनगर सेक्टर मुख्यालय, दिनांक 31 जुलाई 2018



देहरादून सेक्टर मुख्यालय, दिनांक 17-19 अगस्त 2018



महानिदेशालय के कार्यक्रम

श्री राजीव राय भटनागर, महानिदेशक के.रि.पु.बल, महानिदेशालय में
कीर्ति चक्र एवं शौर्य चक्र विजेताओं को सम्मानित करते हुए, दिनांक 16.08.2018



कीर्ति चक्र विजेता शहीद प्रमोद कुमार की माताजी



कीर्ति चक्र विजेता श्री चेतन कुमार चीता, कमाण्डेन्ट



शौर्य चक्र विजेता श्री चन्दन कुमार, सहा० कमा०



शौर्य चक्र विजेता श्री विकास जाखर, सहा० कमा०



शौर्य चक्र विजेता उ०नि० मो० रियाज़ आलम अंसारी



शौर्य चक्र विजेता सिपाही अमरनाथ मिश्रा

महानिदेशालय के कार्यक्रम

“बेसिक इंटेलीजेंस कोर्स” प्रमाण-पत्र का वितरण समारोह, दिनांक 04.07.2018



के.रि.पु.बल एवं आई.आर.सी.टी.सी. के बीच सहमति पत्र पर हस्ताक्षर, दिनांक 11.07.2018



“भारत के वीर” को ट्रस्ट बनाने संबंधी कागजातों पर हस्ताक्षर कार्यक्रम, दिनांक 23.07.2018



महानिदेशालय के कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस समारोह, दिनांक 15.08.2018



सद्भावना दिवस शपथ समारोह, दिनांक 20.08.2018



ब्रह्मकुमारी बहनों द्वारा रक्षाबंधन कार्यक्रम, दिनांक 24.08.2018



विविध कार्यक्रम

वृक्षारोपण कार्यक्रम, 38 बटालियन, दिनांक 24.07.2018



पासिंग आऊट परेड एवं ट्रॉफी वितरण, आर.टी.सी. लातूर, दिनांक 24.07.2018



रक्षाबंधन कार्यक्रम 191 बटालियन, दिनांक 26.08.2018



सिविक एक्शन कार्यक्रम

100 आर.ए.एफ. द्वारा वस्त्राल (अहमदाबाद) में मुफ्त चिकित्सा जाँच शिविर, दिनांक 30.07.2018



123 बटालियन द्वारा आवश्यक उपकरणों का वितरण



13 बटालियन के.रि.पु.बल द्वारा चंडीगढ़ में लंगर का आयोजन, दिनांक 11.07.2018



कावा कार्यक्रम

कावा अध्यक्षा, डॉ. मनु भटनागर द्वारा सम्पूर्णा शॉप का उद्घाटन, दिनांक 05.07.2018



कावा स्थापना दिवस, दिनांक 10.07.2018



केरल में द्रुत कार्य बल द्वारा बाढ़ राहत-बचाव कार्य एक नज़र में





संभरण शाखा

1. डायरेक्टेड इंजेक्टेड सोल के 30,000 जोड़े बूट एंकल टेक्सटाईल(जंगल बूट) एल.डब्ल्यू.ई. यूनिटों को सुपुर्द किया गया।
2. गृह मंत्रालय ने के.रि.पु.बल के जवानों, जो पूर्वोत्तर क्षेत्र के 9000 फीट ऊंचाई से कम एवं शेष क्षेत्रों में 6000 फीट ऊंचाई से कम में तैनात है, के लिए ब्लैकटे सुपिरियर डायड के बदले एक स्लीपिंग बैग प्राधिकृत किया है।
3. 25 नग माइक्रो अनमैन्ड एरियल वेहिकल (यू.ए.वी.) की खरीदारी के लिए स्वीकृति आदेश जारी किया गया और इसका स्पलाई ऑर्डर जारी किया गया।

भर्ती भाखा

1. गृह मंत्रालय द्वारा केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल में 190 सहायक कमाण्डेंट(जीडी) 2017 के पदों का शारीरिक मानदण्ड परीक्षा/शारीरिक दक्षता परीक्षा/चिकित्सा परीक्षा एवं पुननिरीक्षण चिकित्सा परीक्षा कराने हेतु केरिपुबल को नोडल बल नियुक्त किया गया था, जो दिनांक 10 फरवरी 2018 को पूर्ण हो चुकी है तथा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा उक्त परीक्षा का परिणाम दिनांक 29/06/2018 को घोषित किया जा चुका है। अब उक्त पदों का केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल में बल निर्धारित करके गृह मंत्रालय का अनुमोदन प्राप्त करने हेतु भेजने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है।
2. गृह मंत्रालय द्वारा केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सी.ए.पी.एफ.) में सि0/जीडी परीक्षा-2018 कराने के लिए

केरिपुबल को नोडल बल नियुक्त किया गया है। कर्मचारी चयन आयोग (एस.एस.सी.) के माध्यम से केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सी.ए.पी.एफ.) में कांस्टेबल के पद के लिए 54,953 रिक्तियों हेतु आवेदन मांगे हैं। इन पदों के लिए आवेदनों के पंजीकरण की तिथि 17/08/2018 व अंतिम तिथि 17 सितम्बर 2018 निर्धारित की गई है। इस परीक्षा के तहत जिन आरक्षकों की भर्ती की जाएगी उन्हें आई. टी.बी.पी., बी.एस.एफ., सी.आई.एस.एफ., सी.आर.पी.एफ., एस.एस.बी., असम राईफल्स, एन.आई.ए. एवं एस.एस.एफ. में नियुक्त किया जाएगा। पात्र व इच्छुक उम्मीदवार एस.एस.सी. की अधिकारिक वेबसाइट www.ssc.nic.in के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। सर्वप्रथम कंप्यूटर आधारित ऑनलाइन परीक्षा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा करायी जायेगी और शारीरिक दक्षता/मापदण्ड, चिकित्सा परीक्षण केरिपुबल के निर्देशन में करायी जायेगी। इन रिक्तियों की भर्ती हेतु कर्मचारी चयन आयोग द्वारा विस्तृत जानकारी दिनांक 21-27/07/2018 के रोजगार समाचार पत्र में प्रकाशित की जा चुकी है।

3. छत्तीसगढ़ सैक्टर को बस्तरिया बटालियनों के लिए 139 सि0(जीडी/ट्रैडमैन) के रिक्त पदों को भरने के लिए रैली भर्ती कराने के लिए नोडल सैक्टर नियुक्त किया गया है। जिसका विज्ञापन दिनांक 04-10 अगस्त 2018 के रोजगार समाचार में छापने हेतु भेजा जा चुका है।
4. उप निरी0/जीडी-2017 के 374 पदों की रिक्तियों के लिए चिकित्सा परीक्षण दिनांक 24/04/2018 को पूर्ण हो चुका है। चिकित्सा परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए कार्मिकों का पुननिरीक्षण दिनांक 06/08/2018 से कराया जाएगा।

शहीदों को सलाम



शहीद सिपाही
निर्मल घोष, 193 बटा.
18.08.1990—11.07.2018



शहीद स0उ0नि0/जीडी
मिश्री लाल मीना, 96 बटा.
13.03.1969—13.07.2018



शहीद सिपाही
संदीप कुमार यादव, 96 बटा.
25.04.1992—13.07.2018



शहीद सिपाही
शंकर लाल बराला, 23 बटा.
02.10.1979—24.07.2018



शहीद सिपाही
नशीर अहमद राठर, 182 बटा.
05.05.1985—29.07.2018



महानिदेशक का डिस्क एवं प्रशंसा पत्र (जुलाई-अगस्त, 2018)

क्र.सं.	ईरला / बल संख्या	पदनाम	नाम	कार्यालय	अभ्युक्ति
1.	7776	उप कमाण्डेन्ट	श्रीमती ए. अनिता चानु	89 बटालियन	प्रशस्ति रॉल
2.	10891	सहायक कमाण्डेन्ट	राजेन्द्र सिंह	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
3.	125410963	उप निरीक्षक / जीडी	अंकित मान	201 कोबरा	रजत (परिचालन)
4.	075221401	सिपाही / जीडी	दीप चन्द	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
5.	125312235	सिपाही / जीडी	महेश उरॉव	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
6.	145314378	सिपाही / जीडी	विकास भगत	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
7.	145315547	सिपाही / जीडी	सुजीत उरॉव	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
8.	145312321	सिपाही / जीडी	एन.एस. मुंडा	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
9.	145311707	सिपाही / जीडी	मो. सानु	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
10.	10867	सहायक कमाण्डेन्ट	राजेन्द्र हरिजन	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
11.	---	एस.डी.पी.ओ.	शम्भु कुमार सिंह	झारखंड पुलिस	कांस्य (परिचालन)
12.	---	डी.एस.पी. (संभरण)	विमेश कुमार त्रिपाठी	झारखंड पुलिस	कांस्य (परिचालन)
13.	135022312	सिपाही / जीडी	राहुल कुमार पाठक	134 बटालियन	रजत (परिचालन)
14.	115311434	सिपाही / जीडी	अनुप डे	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
15.	111692756	सिपाही / जीडी	धीमन बरूआ	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
16.	135203619	सिपाही / जीडी	अमरजीत कुमार दास	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
17.	115136395	सिपाही / जीडी	रंगजालू बोरो	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
18.	115131953	सिपाही / जीडी	जयंत बोरो	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
19.	035171575	सिपाही / जीडी	सत्येन्द्र प्रसाद यादव	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
20.	080180025	सिपाही / जीडी	जितेन्द्र कुमार चौधरी	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
21.	991110102	निरीक्षक / जीडी	विवेन्द्र सिंह	229 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
22.	2497	महानिरीक्षक	जी.वी.एच. गिरी प्रसाद	केरल एवं कर्नाटक सेक्टर	कांस्य (परिचालन)
23.	5539	द्वि०कमा०अधि०	रमेश जी. कबाडी	58 बटालियन	रजत (परिचालन)
24.	7388	सहायक कमाण्डेन्ट	सुनील कुमार	58 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
25.	9478	सहायक कमाण्डेन्ट	एम.एम. राजन	केरल एवं कर्नाटक सेक्टर	कांस्य (परिचालन)
26.	5347	द्वि०कमा०अधि०	मनोज डांग	198 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
27.	5441	द्वि०कमा०अधि०	डी.के. साहु	192 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
28.	4798	कमाण्डेन्ट	ओमप्रकाश टोकास	97 आर.ए.एफ.	कांस्य (परिचालन)
29.	8803	सहायक कमाण्डेन्ट	एस. विश्वनाथन	02 बेतार बटा०	कांस्य (परिचालन)
30.	881133029	निरीक्षक / मंत्रा०	पी.एस. राव	गु.के. तरालु	कांस्य (परिचालन)
31.	041629135	सिपाही / जीडी	हरिदास सी.यू.	रेंज बैंगलौर	कांस्य (परिचालन)
32.	041563374	सिपाही / जीडी	रघु प्रसाद	रेंज बैंगलौर	कांस्य (परिचालन)
33.	055050434	सिपाही / जीडी	रजनीकांत आर.	केरल एवं कर्नाटक सेक्टर मुख्या.	कांस्य (परिचालन)
34.	903012277	स.उ.नि. / जीडी	एम.सी. पाटिल	165 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
35.	001400787	हव० / जीडी	वेनू जी.एन.	58 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
36.	015271209	हव० / जीडी	मंजूनाथ ए.आर.	33 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
37.	941382423	हव० / जीडी	एम.सी. रवि	143 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
38.	941382468	हव० / जीडी	प्रकाश	78 बटालियन	कांस्य (परिचालन)



39.	131540042	उप निरीक्षक / जीडी	बलेन्द्र साहु	154 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
40.	031530687	सिपाही / चालक	उमेद सिंह	103 आर.ए.एफ.	कांस्य (परिचालन)
41.	10938	महानिरीक्षक	डी.एस. चौहान, भा.पु.से.	उत्तरी सेक्टर	कांस्य (प्रशासन)
42.	2558	उप महानिरीक्षक	सतपाल रावत	उत्तरी सेक्टर	स्वर्ण (प्रशासन)
					02 स्टार
43.	2809	उप महानिरीक्षक	हरशरनजीत सिंह	कल्याण महानिदेशालय	स्वर्ण (प्रशासन)
44.	3137	उप महानिरीक्षक	पर्वत कुमार नायक	रेंज नई दिल्ली	कांस्य (प्रशासन)
45.	4214	कमाण्डेन्ट	परमेन्द्र सिंह यादव	122 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
46.	4708	कमाण्डेन्ट	प्रवीण कुमार त्रिपाठी	25 बटालियन (महानिदेशालय में संलग्न)	स्वर्ण (प्रशासन)
					01 स्टार
47.	4489	कमाण्डेन्ट	पूनम गुप्ता	88(महिला) बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
48.	4519	कमाण्डेन्ट	हर्षवर्द्धन	एस.डी.जी.	स्वर्ण (प्रशासन)
49.	6774	द्वि०कमा०अधि०	एस.के. वशिष्ठ	88(महिला) बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
50.	6568	उप कमाण्डेन्ट	नवीन कुमार यादव	कल्याण महानिदेशालय	कांस्य (प्रशासन)
51.	6493	उप कमाण्डेन्ट	गोपाल सिंह बोरा	122 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
52.	7787	उप कमाण्डेन्ट	सिंह ए.	55 बटालियन	प्रशस्ति रॉल
53.	8523	सहायक कमाण्डेन्ट	ई. इजीलारसु	122 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
54.	9096	सहायक कमाण्डेन्ट	सुरेश नौटियाल	122 बटालियन	रजत (प्रशासन)
55.	931860081	निरीक्षक / मंत्रा०	वी. गोविन्दराज	रेंज जम्मू (महानिदेशालय में संलग्न)	कांस्य (प्रशासन)
56.	951870161	उप निरीक्षक / मंत्रा०	शुभ्रा सरकार	गु.के. नोएडा (महानिदेशालय में संलग्न)	कांस्य (प्रशासन)
57.	860340614	स०उ०नि० / जीडी	गोपाल तोमर	122 बटालियन	कांस्य (प्रशासन)
58.	030710049	सिपाही / बिगुलर	रविन्द्र सिंह	कल्याण महानिदेशालय	कांस्य (प्रशासन)
59.	115199567	सिपाही / जीडी	सुमन कुमारी	135 (महिला) बटालियन (महानिदेशालय में संलग्न)	कांस्य (प्रशासन)
60.	10961	चिकित्सा अधिकारी	डॉ. गजुला अरुण कुमार	151 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
61.	5186	द्वि०कमा०अधि०	विश्वनाथ परांजपे	208 कोबरा	स्वर्ण (परिचालन)
62.	7073	उप कमाण्डेन्ट	अजीत कुमार	208 कोबरा	स्वर्ण (परिचालन)
					03 स्टार
63.	9042	सहायक कमाण्डेन्ट	दीपक कुमार	208 कोबरा	रजत (परिचालन)
64.	065004355	निरीक्षक / जीडी	दान सिंह	208 कोबरा	रजत (परिचालन)
65.	065028807	सिपाही / जीडी	शारदा प्रसाद	208 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
66.	105331546	सिपाही / जीडी	टी. मुथुपांडियन	208 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
67.	115043164	सिपाही / जीडी	चिनमय लंका	208 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
68.	---	पुलिस उप अधीक्षक (अब पुलिस अधीक्षक)	मोहित गर्ग, भा.पु.से.	सिविल पुलिस	रजत (परिचालन)
69.	---	सिपाही	रमेश जुरी	सिविल पुलिस	कांस्य (परिचालन)
70.	135381188	सिपाही / जीडी	सुनील कुमार	204 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
71.	110724672	सिपाही / जीडी	नकुल कुमार	204 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
72.	115071719	सिपाही / जीडी	विवेक कुमार	204 कोबरा	रजत (परिचालन)
73.	15192809	निरीक्षक / जीडी	नन्द लाल झा	53 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
74.	903061982	स.उ.नि. / जीडी	मोहम्मद युसुफ इतू	53 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
75.	61840041	सिपाही / जीडी	मुदसिर अहमद लोन	53 बटालियन	कांस्य (परिचालन)



76.	45264451	सिपाही / जीडी	अनिल कुमार	53 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
77.	पी.आई.डी. सं.-109446 ई.एक्स.के.	निरीक्षक	खालीद फयाद, एस.एच.ओ.	थाना-बारामुला, जम्मू-कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
78.	पी.आई.डी. सं.-115642 ई.एक्स.के.	उप निरीक्षक	शफी नायक	जम्मू-कश्मीर पुलिस	कांस्य (परिचालन)
79.	3995	कमाण्डेन्ट	सुधीर कुमार	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
80.	10295	सहायक कमाण्डेन्ट	विश्वजीत कुमार झा	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
81.	850878035	स.उ.नि. / जीडी	शेख अहमद	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
82.	045131379	सिपाही / जीडी	गोपी राम चौधरी	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
83.	095022225	सिपाही / जीडी	देवानन्द यादव	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
84.	095021567	सिपाही / जीडी	जीतू यादव	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
85.	105027372	सिपाही / जीडी	दिनेश कुमार यादव	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
86.	105052197	सिपाही / जीडी	विराज नायक	85 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
87.	041598757	निरीक्षक / जीडी	कुलदीप कुमार दमानी	92 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
88.	005103635	सिपाही / जीडी	मंगल नाथ ओरांव	92 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
89.	7736	उप कमाण्डेन्ट	हरि नारायण	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
90.	9449	सहायक कमाण्डेन्ट	के. इजुंग	201 कोबरा	स्वर्ण (परिचालन)
91.	10891	सहायक कमाण्डेन्ट	राजेन्द्र सिंह	201 कोबरा	रजत (परिचालन)
92.	041595008	उप निरीक्षक / जीडी	माने बी.एस.	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
93.	127200124	उप निरीक्षक / जीडी	चंदन कुमार	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
94.	095181449	उप निरीक्षक / जीडी	सुरेन्द्र सिंह	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
95.	031531817	हवलदार / जीडी	पवन कुमार	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
96.	110729461	सिपाही / जीडी	नीरज कुमार त्रिपाठी	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
98.	105190841	सिपाही / जीडी	रवि प्रकाश पटेल	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
99.	041700379	सिपाही / जीडी	शकर लाल	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
100.	075033027	सिपाही / जीडी	वी.विजयन	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
101.	115314951	सिपाही / जीडी	मधुसूदन राय	201 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
102.	105314708	सिपाही / जीडी	रमिज राजा	201 कोबरा	रजत (परिचालन)
103.	5258	द्वि०कमा०अधि०	राजेश कुमार	130 बटालियन	रजत (परिचालन)
104.	031450399	निरीक्षक / जीडी	संजीव कुमार थपियाल	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
105.	005260981	हवलदार / जीडी	महेन्द्र कुमार	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
106.	155110054	सिपाही / जीडी	प्रवीण कुमार	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
107.	145111717	सिपाही / जीडी	युवराज पारिक	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
108.	901003486	स०उ०नि० / जीडी	फयाज हुसैन	130 बटालियन	रजत (परिचालन)
109.	005182197	हवलदार / जीडी	अवधेश सिंह	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
110.	155110072	सिपाही / जीडी	रामशरण यादव	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
111.	155110589	सिपाही / जीडी	सुनील कुमार	130 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
112.	9519	सहायक कमाण्डेन्ट	ओंकार नाथ सिन्हा	154 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
113.	931340202	हवलदार / जीडी	रिशपाल मीणा	154 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
114.	001372339	हवलदार / जीडी	महावीर प्रसाद रैनवा	154 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
115.	115194127	सिपाही / जीडी	सचिन कुमार	154 बटालियन	कांस्य (परिचालन)



श्री आर.आर. भटनागर, महानिदेशक के.रि.पु.बल, श्री के.के. शर्मा, महानिदेशक सीमा सुरक्षा बल, श्री सुखदीप सांगवान, महानिदेशक शसस्त्र सीमा बल, श्रीमती सतवंत अटवाल, महानिरीक्षक सीमा सुरक्षा बल 'भारत के वीर' को ट्रस्ट बनाने संबंधी कागजातों पर हस्ताक्षर करते हुए।



डॉ. मनु भटनागर, अध्यक्ष कावा 'सम्पूर्ण शॉपिंग कॉम्प्लेक्स', नई दिल्ली का उद्घाटन करते हुए।



72वीं स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण समारोह के उपरान्त
श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृहमंत्री भारत सरकार, 55 बटालियन के अधिकारियों एवं जवानों के साथ।